1. बीरबहूटी PART 1 (बीरबहूटियों को खोजना)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. बादल बरसना – वर्षा होना 2. बहुत सारा पानी बादलों में बचा हुआ था – आगे भी वर्षा होगी

2. किसने किससे कहा ?

1. " देखो इस बीरबहूटी का रंग तुम्हारे रिबन के जैसा लाल है ।" **ANS –** साहिल ने बेला से

2. " लेकिन मुझे पैन में स्याही भी भरवानी है, दुकान से ।" **ANS –** साहिल ने बेला से

3. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. बीरबहूटी कहानी के मुख्य पात्र कौन-कौन हैं ?
साहिल और बेला

2. किन्हें बीरबहूटियों से मिलना होता था ?
बेला और साहिल को

3. यहाँ किस मौसम का चित्रण हुआ है ?
बरसात के मौसम का

4. साहिल और बेला स्कूल केलिए घर से कुछ समय पहले निकल आते थे । क्यों?
बीरबहूटियों से मिलने केलिए

5. बेला किसके साथ बीरबहूटियाँ को देखने गई ?
साहिल के

6. बीरबहूटियों का रंग कौन-सा है ?
सुर्ख

7. दोनों कब और कहाँ बीरबहूटियों को खोजते थे ?
बारिश के मौसम में सुबह स्कूल जाते समय, कस्बे से सटे खेतों में

8. बीरबहूटियों की विशेषताएँ क्या-क्या थीं ?
बीरबहूटियाँ सुर्ख, मुलायम, गदबदी और धरती पर चलती फिरती खून की बूँदें जैसी थीं ।

9. बेला और साहिल बीरबहूटियों को कैसे खोजते थे ?
एक दूसरे के बहुत नज़दीक रहकर, बिलकुल सटकर

10. दोनों किस गाँव के रहनेवाले हैं ?
फुलेरा गाँव के

11. फुलेरा जंक्शन कहाँ पर है ?
राजस्थान में

12. कुम्हार कौन है ?
मिट्टि के बर्तन बनानेवाला

13. स्टेशनरी की दुकानवाले पैन में स्याही कैसे भरते थे ?
ड्रॉपर से

14. किसको पैन में स्याही भरवानी है ?
साहिल को

15. मूँगफलियों का रंग क्या है ?
पीला

16. पैन में कितने पैसे में नीली स्याही भरी जाती थी ?
पाँच

17. साहिल और बेला बिलकुल सटकर बीरबहूटियाँ खोजते थे । - यहाँ उनका कौन-सा स्वभाव प्रकट है ?
मित्रता

18. बच्चे कहाँ जा रहे थे ?
स्कूल

19. फुलेरा जंक्शन की विशेषता क्या है ?
सवारी गाडियों और मालगाडियों से सदा भरा रहता है ।

20. बीरबहूटियाँ खोजने केलिए बेला और साहिल क्या करते थे ?
घर से कुछ समय पहले निकलते थे ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRT45 ph- 9567224545

21. टिप्पणी – सच्ची मित्रता

जीवन में दोस्ती का स्थान महत्वपूर्ण है। दो व्यक्तियों के बीच का आत्मसंबंध दोस्ती का आधार है। एक कहावत है यदि आपका मित्र अच्छा है तो आपको दर्पण की कोई आवश्यकता नहीं है। दोस्तों को चुनते समय हमें बहुत सतर्क रहना चाहिए। क्योंकि कुछ लोगों की मित्रता सच्ची नहीं होती। असली दोस्ती में एक दूसरे को पूर्ण रूप से जानता है, अपनी बातें बिना कोई हिचक से दूसरे से बाँटते हैं। सच्चा मित्र मिलना बडे सौभाग्य की बात होती है। सच्चा मित्र किसी भी आपत्ति में अपने मित्र को छोडकर नहीं जाता। वे सुख में हो या दुख में साथ रहते हैं। सच्ची मित्रता में जाति, धर्म आदि किसी भी भेदभाव की भावना नहीं होती। सच्चे मित्रों से अलग होना बहुत दुखदायक होता है। समाज में जीने केलिए अच्छी दोस्ती बहुत सहायक होता है।

22. पटकथा (बीरबहूटियों को खोजना)

स्थान – कस्बे से सटा खेत।

समय – सुबह 9 बजे।

पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है, पीठ पर बस्ता है। चेहरे पर खुशी है।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, स्कूल यूनीफॉर्म पहना है, पीठ पर बस्ता है। चेहरे पर खुशी है।

दृश्य का विवरण – दोनों बच्चे, स्कूल में जाते समय कस्बे से सटे खेतों में बीरबहूटियों को खोजने आए हैं।

संवाद -

बेला – देखो साहिल, यहाँ कितनी बीरबहूटियाँ हैं !

साहिल – हाँ, मैंने देखा। इसका रंग तुम्हारे रिबन के जैसा लाल है।

बेला - ठीक है। ये कितने सुर्ख, मुलायम और गदबदी हैं ! धरती पर चलती फिरती खून की बूँदें जैसी ...।

साहिल – तुमने कुछ सुना बेला ?

बेला - हाँ सुना, स्कूल में पहली घंटी लग गई है। तो हम जाएँ, बहुत देर लगी है।

साहिल – लेकिन मुझे दुकान से पैन में स्याही भी भरवानी है।

बेला - तू क्या बोलता है यार ? देर होकर कहीं माटसाब के आगे हो जाए तो ?

साहिल – नहीं बेला, स्कूल के नज़दीक के दूकान से ही भरवानी है।

बेला - ठीक है साहिल। तो जल्दी चलें।

(खेत की ज़मीन से उठकर दोनों बस्ते और वर्दी ठीक करके दुकान की ओर जाने लगते हैं।)

23. वार्तालाप को आगे बढाएँ।

साहिल – तुमने कुछ सुना बेला ?

बेला - हाँ सुना। पहली घंटी लग गई है।

साहिल - लेकिन मुझे दुकान से पैन में स्याही भी भरवानी है।

बेला -तू क्या बोलता है यार ? देर होकर कहीं माटसाब के आगे हो जाया तो ?

साहिल - ऐसा नहीं होगा यार, स्कूल के नज़दीक के दुकान से ही भरवानी है।

बेला -क्या, कलम में स्याही बिलकुल नहीं है ?

साहिल - कुछ स्याही थी, पर मैंने उसे ज़मीन पर छिडक दिया।

बेला -ऐसा क्यों किया तूने ?

साहिल - नई स्याही भरवाने केलिए पैन को खाली किया।

बेला -दुकान में स्याही नहीं है तो ?

साहिल - दुकान में स्याही ज़रूर होगा।

बेला -तो हम जल्दी चलें।

साहिल - ठीक है, बेला।

24. सच्ची मित्रता का संदेश देते हुए एक पोस्टर तैयार करें।

सच्ची मित्रता अनमोल संपत्ति है
सच्ची मित्रता से भविष्य उज्ज्वल बनाएगा।
सच्चे मित्र
सच्चे मार्गदर्शक भी हैं।
सच्चे मित्रों को अपनाएँ।
सुंदर भविष्य बनाएँ।
निराला क्लब, सरकारी हाईस्कूल, स्थान।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRT45 Ph- 9567224545

25. पोस्टर – कहानी का नाटकीकरण

जी.एच.एस.एस. कोल्लम
मशहूर कथाकार प्रभात की
पाँचवीं कक्षा के दो छात्रों की
सच्ची मित्रता की कहानी
बीरबहूटी
एकांकी के रूप में
आयोजन – हिंदी मंच

2019 जून 19 बुधवार को
सुबह 10 बजे स्कूल सभाभवन में

रचना - नवीन, दसवीं कक्षा
निदेशन – श्री. वरुण, हिंदी अध्यापक
प्रस्तुति – छात्र-छात्राएँ, दसवीं कक्षा
आइए... देखिए...मज़ा लूटिए...
सबका स्वागत

26. मित्र के नाम साहिल का पत्र (बीरबहूटियों की विशेषताएँ)

स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो? कुशल हो न? मैं यहाँ ठीक हूँ। तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ।

हमारे इलाके में अब बारिश का मौसम चल रहा है। कस्बे से सटे सारे खेत बीरबहूटियों से भर गए हैं। स्कूल में आते-जाते समय मैं अपनी सहेली बेला के साथ मिलकर उन्हें खोजते हैं। तुमने कभी सुना है बीरबहूटियों के बारे में ? ये बहुत सुर्ख, मुलायम और गदबदी हैं। उन्हें देखकर धरती पर चलती-फिरती खून की प्यारी-प्यारी बूँदें जैसे लगती हैं। सचमुच उन्हें इस तरह लाल रिबन जैसे कतार में खडे होते देखकर मन प्रसन्न हो जाता है। उन्हें खोजते रहने पर समय काट जाने का कोई अंदाज़ नहीं होगा। रविवार की छुट्टी में तुम यहाँ आना, हम साथ मिलकर उन्हें खोज लेंगे। तब तुम्हें पता चलेगा कि ये कितने मनमोहक हैं।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? तुम्हारे परिवालों से मेरा प्रणाम कहना। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता।

27. बेला की डायरी (बीरबहूटी की खोज)

तारीख : ……………….

स्कूल केलिए निकली। साहिल के साथ। खेत गई। बस्ते पीठ पर लदे थे। ज़मीन पर बैठ गए। खेत में बीरबहूटियों को खोजने लगे। कुछ दिखाई भी दिए। सुर्ख, मुलायम, गदबदी बीरबहूटियाँ। धरती पर चलती – फिरती खून की प्यारी – प्यारी बूँदें। स्कूल की पहली घंटी लग गई। साहिल को पैन में स्याही भरवानी थी। दुकान की ओर चले।

28. साहिल की डायरी (बीरबहूटी की खोज)

तारीख : …………………

स्कूल केलिए निकला। बेला के साथ। खेत गया। बस्ते पीठ पर लदे थे। ज़मीन पर बैठ गए। खेत में बीरबहूटियों को खोजने लगे। कुछ दिखाई भी दिए। सुर्ख, मुलायम, गदबदी बीरबहूटियाँ। धरती पर चलती – फिरती खून की प्यारी – प्यारी बूँदें। स्कूल की पहली घंटी लग गई। साहिल को पैन में स्याही भरवानी थी। दुकान की ओर चले।

SREENITH R, KOVOOR VARKALA, SCOPUS ph- 9567224545

1. बीरबहूटी PART 2 (पैन में स्याही भरवाने दुकान जाना)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. कॉपी में काम करना – नोटबुक में लिखना
2. बुरे मन से बताना – असंतृप्त होकर बताना
3. बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना - सोच विचार करके काम लेना

2. किसने किससे कहा ?

1. " एक पैन स्याही भर दो ।" — **ANS –** बेला ने दुकानदार से
2. " बेटा स्याही की बोतल अभी-अभी खाली हो गई है । अब तो कल ही मिल पाएगी ।" — **ANS –** दुकानदार ने बेला से
3. " बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए ।" — **ANS –** दुकानदार ने साहिल से
4. " बहन जी पानी पीने चला जाऊँ ? " — **ANS –** साहिल ने टीचर से
5. " बहन जी पानी पीने चली जाऊँ ? " — **ANS –** बेला ने टीचर से

3. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. बेला और साहिल स्याही भराने केलिए कहाँ गए ?
   स्टेशनरी की दुकान में
2. साहिल किसके साथ दुकान गया ?
   बेला के साथ
3. बेला और साहिल दुकान क्यों गये ?
   पैन में नई स्याही भरवाने केलिए
4. दुकान पहुँचने पर साहिल ने क्या किया ?
   पैन में बची स्याही को ज़मीन पर छिडक दिया
5. ' अब तो कल ही मिल पाएगी ।'- दुकानदार ने ऐसा क्यों कहा ?
   दुकान में स्याही की बोतल खाली हो गई थी ।
6. क्लास में बेला और साहिल कैसे बैठते थे ?
   पास-पास
7. बेला और साहिल कौन-सी कक्षा में पढते थे ?
   पाँचवीं कक्षा में
8. ' पैन में नई स्याही भरवाने केलिए साहिल और बेला दुकान पहुँचे । पर उन्हें निराशा लौटना पडा ।'- क्यों ?
   दुकान में स्याही की बोतल खाली हो गई थी । इसलिए उन्हें निराश लौटना पडा ।
9. साहिल ने पैन में बची स्याही को ज़मीन पर क्यों छिडक दिया था ?
   साहिल बेला के साथ पैन में स्याही भरवाने केलिए दुकान जा रहा था । इसलिए उसने पैन में बची स्याही को ज़मीन पर छिडक दिया था ।
10. साहिल अपनी कलम में स्याही क्यों नहीं भर सका ?
    दुकान में स्याही की बोतल खाली हो गई थी । इसलिए साहिल पैन में स्याही भर नहीं सका ।
11. दुकानवाले भैया ने बच्चों को क्या उपदेश दिया था ?
    बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए
12. ' बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए ' - दुकानदार ने ऐसा क्यों कहा ?
    साहिल ने पैन में नई स्याही भरवाने की इच्छा से उसमें बची स्याही को जमीन पर छिडक दिया । दुकान पहुँचने पर वहाँ स्याही नहीं थी । तब दुकानदार ने साहिल से ऐसा कहा । कहने का मतलब है, किसी वस्तु को मिलने की प्रतीक्षा में हमारे पास के वस्तु को छोडना मूर्खता है । बिना सोच विचार करके कुछ नहीं करना चाहिए ।

13. पटकथा- (पैन में स्याही भरवाने दूकान में)

स्थान - गाँव की स्टेशनरी की दुकान ।
समय - सुबह 10 बजे ।
पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है, पीठ पर बस्ता है ।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, स्कूल यूनीफॉर्म पहना है, पीठ पर बस्ता है ।
3. दुकानदार, करीब 50 साल के आदमी, धोती और कुर्ता पहने हैं ।
दृश्य का विवरण - बेला और साहिल पैन में स्याही भरवाने केलिए दुकान के पास खडे हैं ।

संवाद -

दुकानदार - अरे बच्चे, क्या चाहिए ?

बेला - भैया, एक पैन स्याही भर दो ।

दुकानदार - अरे, स्याही की बोतल अभी-अभी खाली गई है । अब तो कल ही मिल पाएगी ।

साहिल - बाप रे ! अब मैं क्या करूँ ?

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCR145 ph- 9567224545

दुकानदार - क्या हुआ बेटा ?

बेला - इसने तो पैन में बची हुई स्याही को ज़मीन पर छिडक दिया ।

दुकानदार - (हँसते हुए) अरे बच्चो, बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए ।

साहिल - हाँ गलती हुई । अब मैं कैसे लिखूँ ?

दुकानदार - कौन - सी कक्षा में पढते हो ?

साहिल - (बुरे मन से) पाँचवीं में ।

दुकानदार - दोनों ?

बेला - (खुशी से) हाँ, हम दोनों एक ही सेक्शन में पढते हैं । स्कूल का समय हो गया अंकिल, हम चलते हैं ।

दुकानदार - अच्छा । तो कल आओ बच्चो, स्याही ज़रूर मिलेगी ।

बेला - ठीक है भैया । (चलते हुए) साहिल अब हम क्या करेंगे ?

साहिल - चलो, किसीसे उधार लेंगे ।

(दोनों बच्चे निराश होकर दुकान से बाहर आते हैं ।)

14. बेला की डायरी (पैन में स्याही)

तारीख : ....

खेत में बीरबहूटियों को देख रही थी । साहिल भी थी । स्कूल की पहली घंटी बजी । साहिल के पैन में थोडी स्याही थी उसने उसे ज़मीन पर छिडक दिया । स्याही भरवाने दुकान गए । दुकान में स्याही की बोतल खाली हो गई थी । बहुत निराश हुए । ‘ बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए ’ दुकानदार का उपदेश भी सुना । कितना नटखट है यह साहिल ।

15. साहिल की डायरी (पैन में स्याही)

तारीख : ....

खेत में बीरबहूटियों को देख रहा था । बेला भी थी । स्कूल की पहली घंटी बजी । पैन में थोडी स्याही थी उसे ज़मीन पर छिडक दिया । स्याही भरवाने दुकान गए । दुकान में स्याही की बोतल खाली हो गई थी । बहुत निराश हुए । ‘ बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए ’ दुकानदार का उपदेश भी सुना । ठीक है, बिना विचारे कुछ भी नहीं करना है ।

का, के, की – का प्रयोग

का പ്രത്യയം ചേർക്കുന്നത് പുല്ലിംഗ ഏകവചനശബ്ദങ്ങളുടെ മുൻപിലും

के പ്രത്യയം ചേർക്കുന്നത് പുല്ലിംഗ ബഹു വചനശബ്ദങ്ങളുടെ മുൻപിലും

की പ്രത്യയം ചേർക്കുന്നത് സ്ത്രീലിംഗ ഏകവചനശബ്ദങ്ങളുടെ മുൻപിലും

राजु का बेटा　　राजु के बेटे　　राजु की बेटी　　राजु की बेटियाँ

ഏതെങ്കിലും ഒരു വിഭക്തി പ്രത്യയം ചേർന്നുവരുന്ന പുല്ലിംഗ ഏകവചനശബ്ദത്തിനു മുൻപിൽ വരുന്ന का പ്രത്യയം के ആയിമാറുന്നു

जैसे – राधा का + घर में = राधा के घर में

ആകാരത്തിൽ അവസാനിക്കുന്ന (आ യിൽ) പുല്ലിംഗ ഏകവചനശബ്ദങ്ങളുടെ കൂടെ വിഭക്തി പ്രത്യയം വന്നാൽ ആകാരന്തം ഏകാരന്തമായി മാറും.

जैसे – सुरेंद्र का बेटा + ने = सुरेंद्र के बेटे ने

पिताजी, ताऊजी, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, अध्यापक जी, गुरुजी, मास्टर जी തുടങ്ങിയവ പുല്ലിംഗ ശബ്ദങ്ങൾ ബഹുമാന സൂചകമായി ബഹുവചനത്തിൽ ഉപയോഗിക്കുന്നു. അതിനാൽ ഇവയ്ക്കു മുൻപിൽ के പ്രത്യയമാണ് ചേർക്കുന്നത്.

രണ്ടാമത്തെ നാമത്തോടുകൂടി ബന്ധുത്വം, ഉടമസ്ഥാവകാശം എന്നിവ സൂചിപ്പിക്കുന്ന സംഖ്യാ വാചക വിശേഷണ ശബ്ദം വന്നാൽ അവിടെ के എന്ന പ്രത്യയമാണ് ഉപയോഗിക്കുന്നത്.

जैसे– रशरथ के तीन राणियाँ हैं ।

1. बीरबहूटी PART 3 (बेला के साथ सुरेंदर माटसाब का बुरा व्यवहार)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. नज़र मिलाना - मुँह की ओर देखना/ चेहरे पर देखना 2. शर्मिंदा महसूस करना - लज्जित होना/ अपमानित होना 3. मन खराब होना – मन उदास होना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. गणित का पीरियड कब आता है ?
   खेल घंटी के बाद
2. सुरेंदर माटसाब कौन थे ?
   गणित के माटसाब
3. सुरेंदर माटसाब कौन-सा विषय पढाते थे ?
   गणित
4. बच्चे उनसे काँपते थे । किनसे ?
   गणित के मातसाब से
5. माटसाब ने बेला के बालों में पंजा क्यों फँसाया ?
   उसकी कॉपी गलती पाकर
6. माटसाब ने बेला को क्यों छोड दिया ?
   कॉपी में गलती न होने से
7. साहिल क्यों बुरी तरह डर गया ?
   बेला के भयभीत चेहरे को देखकर
8. बेला खुद को शर्मिंदा महसूस कर रही थी । क्यों ?
   क्योंकि साहिल के सामने माटसाब ने बेला के बालों में पंजा फँसाया ।
9. बेला साहिल से नज़र नहीं मिला पाई । क्यों ?
   क्योंकि उसे अच्छी लडकी माननेवाले साहिल के सामने माटसाब ने अकारण बालों में पंजा फँसाकर उसको अपमानित किया ।
10. बेला किसके सामने लज्जित होना नहीं चाहती थी ?
   साहिल के
11. साहिल की नज़र में कौन बहुत अच्छा है ?
   बेला
12. वह खुद को शर्मिंदा महसूस कर रही थी । कौन ?
   बेला
13. वह साहिल के सामने खुद को शर्मिंदा महसूस कर रही थी । इसमें वह शब्द किसके बदले प्रयुक्त है ?
   बेला
14. उसकी नज़र में वह बहुत अच्छी लडकी है । किसकी नज़र में ?
   साहिल की
15. साहिल की नज़र में कौन बहुत अच्छा है ?
   बेला
16. बेला की कॉपी में गलती पाकर सुरेंदर माटसाब ने उसको क्या सज़ा दिया ?
   उसके बालों में पंजा फँसाया ।
17. गणित के माटसाब का नाम क्या है ?
   सुरेंदर जी
18. बच्चे किस अध्यापक से डरते थे ?
   गणित के माटसाब सुरेंदर जी से
19. बच्चे सुरेंदर माटसाब से क्यों डरते थे ?
   कॉपी जाँचते समय उसमें ज़रा सी गलती होने पर वे बच्चों को इधर उधर फेंक देते थे या झापड मारने लगते थे ।
20. ‘ गणित के माटसाब छात्रों को ज़रा-सी गलती पर इधर- उधर फेंक देते थे ।‘ - उसपर अपना विचार लिखें ।
   छात्रों से अगर कोई गलती हुई तो प्यार भरी बातें कहकर उन्हें सुधारना चाहिए । गलती सुधारने में गुस्सा करना कभी ठीक नहीं है । ऐसा करने पर उस अध्यापक के प्रति हमेशा उनके मन में भय रहेगा । यह एक अच्छे अध्यापक केलिए लायक नहीं । शरारती बच्चों को भी प्यार भरी व्यवहार करके बदलना चाहिए ।
21. ‘ बेला खुद को शर्मिंदा महसूस कर रही थी ।‘- इसके क्या–क्या कारण हैं ?
   बेला जानती थी अपनी दिली दोस्त साहिल की नज़र में वह बहुत अच्छी लडकी है । उसके सामने बेला अपमानित होना नहीं चाहती थी । लेकिन माटसाब का व्यवहार साहिल की उपस्थिति में थी । इसलिए उसे शरम आया ।
22. ‘ माटसाब चाहे मुझे पीट लेते मगर साहिल के सामने नहीं ।‘- बेला ऐसा क्यों सोचती है ?
   बेला जानती थी कि अपने दोस्त साहिल की नज़र में वह बहुत अच्छी है । साहिल के सामने वह अपमानित होना नहीं चाहती थी । इसलिए वह ऐसा सोचती है ।

SREEJITH R, KAVOOR VARKALA, SCRV45 ph- 9567224545

23. ‘ बेला का मन बहुत खराब हो गया ।’- क्यों ?

साहिल के सामने गणित के माटसाब ने गलती से बेला के बालों में पंजा फँसाया । उसे अच्छी माननेवाले साहिल के सामने यह व्यवहार होने से बेला का मन बहुत खराब हो गया ।

24. साहिल के प्रति बेला के मन में कौन-सा विचार उठ जाता है ?

अब तक साहिल बेला को एक अच्छी लडकी मानता था । उसके सामने अपमानित होने से बेला के मन में उसके प्रति ऐसे विचार आए होंगे कि वह ज़रूर उसे बुरा माना होगा । साहिल भी बहुत डर गया होगा । उससे कैसे नज़र मिलाए ? कैसे बात करे ? उसके पास कैसे जाकर बैठे ?

25. जब वह उसके पास आकर बैठी उससे नज़र नहीं मिला पाई । क्यों ?

बेला जानती थी अपनी दिल दोस्त साहिल की नज़र में वह बहुत अच्छी लडकी है । उसके सामने बेला अपमानित होना नहीं चाहती थी । लेकिन माटसाब का व्यवहार साहिल की उपस्थिति में थी । इस कारण उसे शरम आया । इसलिए बेला साहिल के पास आकर बैठी उससे नज़र नहीं मिला पाई ।

26. सहेली के नाम बेला का पत्र - क्लास में हुए बुरे अनुभव का जिक्र करते हुए

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय सहेली,

तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ ।

आज स्कूल में एक घटना हुई । तीसरी पिरीयड गणित का था । गणित के माटसाब का नाम सुनते ही हम काँप जाते थे । आज वे मेरी कॉपी जाँच रहे थे । तभी उन्होंने मेरे बालों में पंजा फँसाया । लेकिन कॉपी में कोई गलती नहीं थी । उन्होंने मुझे छोड दिया । मैं डर से काँप रही थी । उन्होंने कॉपी मेरी सीट पर फेंक दी । फिर अपनी जगह पर बैठने का आदेश दिया । तुम जानती हो, वे कितने क्रूर हैं । उनकी क्लास हमें बहुत भयानक लगता है । वहाँ तुम्हें सुरेंदर जी जैसा कोई अध्यापक है क्या ?

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

27. बेला की डायरी - गणित के माटसाब से हुए बुरे व्यवहार के बारे में

तारीख : ....

आज मुझे बहुत दुख का दिन था । गणित के माटसाब सुरेंदर जी मेरी कॉपी जाँचते वक्त उसमें गलती पाकर उन्होंने मेरे बालों मे पंजा फँसाया । लेकिन वह गलती न होने पर उन्होंने मुझे छोड दिया । मैं बहुत डर गयी थी । मेरे हाथ पैर काँप रहे थे । मुझे भयभीत होते देखकर साहिल भी बुरी तरह डर गया । माटसाब ने कॉपी मेरे बैठने की जगह पर फेंककर मुझे वहाँ जाकर बैठने को कहा । मुझे बहुत शरम आया । इसलिए मैं साहिल से नजर नहीं मिला पाई । क्या करूँ ? अगर कॉपी में गलती होती तो मेरी क्या हालत होती ? सोच भी नहीं सकती । घर पहुँचने पर भी मेरा मन दुख से भरा था । आज का यह बुरा दिन मैं जिंदगी भर याद रखूँगी ।

28. साहिल की डायरी (माटसाब का व्यवहार)

तारीख : ....

आज मेरेलिए कैसा दिन था, बता नहीं सकता।गणित के माटसाब क्लास में आए । हम सब भयभीत रहे । वे कॉपी जाँचने लगे । अचानक उन्होंने कॉपी में कोई गलती पाकर बेला के बालों में पंजा फँसाया । गलती न होने से उसे छोड दिया । उसकी भयभीत चेहरा देखकर मैं भी बुरी तरह डर गया । बेला के पाँव काँप रहे थे । मुझे लगा कि वह अभी गिर जाएगी । उसे बहुत शरम आया था । मेरे पास आकर बैठने पर वह मुझे नज़र नहीं मिला न सकी । पूरे दिन वह उदास रही । यह बुरा दिन मैं कैसे भूलूँ ?

29. माटसाब की डायरी (बेला के साथ किए व्यवहार)

तारीख : ....

आज मुझसे एक छोटी-सी गलती हो गई । आज कक्षा में कॉपी जाँच रहा था । गुस्से आकर बेला नामक की एक लडकी के बालों में पंजा फँसाया । मुझे लगा कि उसने जो लिखा था वह गलत है । पर सच में वह गलती न होने से मैंने उसे छोड दिया । पुस्तक अपनी बैठने की जगह पर फेंककर वहीं जाकर बैठने को कहा । वह बहुत डरी हुई थी । पूरे छात्रों के सामने वह लज्जित हुई थी । दुख के साथ वह अपनी जगह पर बैठ गई । पता नहीं, वह कैसे छात्रों का सामना किया होगा ? बाद में मुझे लगा कि ऐसा नहीं करना चाहिए था, वो भी एक अध्यापक होकर । पर अब पश्चताने से कोई फायदा नहीं ।

30. वार्तालाप – साहिल और बेला   (माटसाब का व्यवहार)

साहिल - बेला, तुम अभी दुखी है क्या ?

बेला   - फिर मैं क्या करूँ ?

साहिल - अरे, तुम जानती हो न माटसाब ऐसा ही हैं।

बेला   - मैंने कोई गलती नहीं की थी। फिर भी उन्होंने मेरे बालों में पंजा फँसाया।

साहिल - हाँ, वे भी जानते थे। इसलिए तुम्हें छोड दिया।

बेला   - मैं सचमुच डर गई थी।

साहिल - हाँ, मैं भी डर गया था।

बेला   - मेरे पाँव काँप रहे थे। मुझे लगा कि मैं गिर जाऊँगी।

साहिल - मुझे भी एसा लगा।

बेला   - मैं बहुत लज्जित हूँ ... सबको मुँह कैसे दिखाउँ ? अकारण मुझे पीटने केलिए वे एक सोरी तो बोल सकते थे ... पर।

साहिल - तुम इस घटना को भूलो।

बेला   - पर ... मैं दुख सह न पाती। घर जाकर माँ से यह बात ज़रूर बताऊँगी।

साहिल - ज़रूर बताना। अब खुशी से घर जाओ।

बेला   - ठीक है साहिल, मैं कोशिश करूँगी।

31. बेला और माँ के बीच हुए वार्तालाप - घर पहुँचने पर माटसाब के व्यवहार के बारे में

माँ   - क्या हुआ बेटी, बहुत परेशान दिखती हो ?

बेला   - क्या कहूँ माँ, आज स्कूल में एक घटना हुई।

माँ   - किसीके साथ झगडा हुआ होगा ?

बेला   - नहीं। गणित के माटसाब ने मेरे बालों में पंजा फँसाया।

माँ   - सुरेंदर जी ! तुमने जरूर कोई गलती की होगी।

बेला   - नहीं माँ। मैंने जो लिखा था वह ठीक ही था।

माँ   - छोड दो। मास्टर जी है न ?

बेला   - लेकिन साहिल के सामने वह अपमान मैं सह न सकी।

माँ   - कोई बात नहीं। वह तुम्हें अच्छी तरह समझता है।

32. पटकथा   (सुरेंदर माटसाब की क्लास में)

स्थान   – कक्षा का भीतरी भाग।

समय   – दोपहर के साढे बारह बजे।

पात्र   – साहिल और बेला दोनों 11 साल के, स्कूली यूनीफॉर्म पहने हैं।
सुरेंदर जी, गणित के माटसाब, करीब 50 साल के, धोती और कुर्ता पहने हैं।

घटना का विवरण   – सभी बच्चे चुपचाप बैठे हैं। गणित के माटसाब सुरेंदर जी का प्रवेश।

संवाद –

साहिल   – (डरते हुए) बेला, सुरेंदर जी माटसाब आ रहे हैं।

बेला   – तूने गृहकार्य पूरा किया ?

साहिल   - हाँ।

माटसाब – (सभी छात्रों से) सब मेरे पास आकर अपना कॉपी दिखाना। (एक एक करके उनके पास आकर अपना कॉपी दिखाता है।)

माटसाब – (बेला को देखकर) बेला, कॉपी लेकर जल्दी आओ इधर।

बेला   - आती हूँ सार।

माटसाब – (क्रोध से) तूने यह क्या लिखा है अपनी कॉपी में ?

बेला   - (डरती हुई) जी मैं ...

माटसाब – (गुस्से में, कॉपी उसके बैठने की जगह फेंकते हुए) जा बैठ अपनी जगह।

बेला   - हे भगवान, बच गया। अब मैं साहिल से कैसे नज़र मिलाऊँ ?

(उदास होकर वह मुँह नीचा करके चुपचाप साहिल के पास जाकर बैठती है।)

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCR145 ph- 9567224545

33. रपट (बेला के साथ माटसाब का व्यवहार)

छोटी लडकी के साथ माटसाब की क्रूरता

स्थान : .... फुलेरा गाँव के स्कूल की पाँचवीं कक्षा में पढती बेला नामक दस साल की लडकी के साथ गणित के माटसाब सुरेंदर जी ने ऐसी क्रूरता दिखाई । कॉपी जाँचते वक्त उसमें गलती पाकर माटसाब ने बेला के बालों मे पंजा फँसाकर उसे फेंकने लगा । लेकिन सच में वह गलती न होने से उसे छोड दिया । उसे एक अच्छी लडकी माननेवाले अपने मित्रों के सामने हुए यह अपमान वह सह न सकती थी । छोटे बच्चों के साथ ऐसा क्रूर व्यवहार एक अध्यापक केलिए लायक नहीं है । कहा जाता है कि पूरे स्कूल के छात्र उनसे डरते हैं । कॉपी में ज़रा -सी गलती होने पर बच्चों को इधर उधर फेंक देना या झापड मारना उनकी आदत थी । बेला के पिता ने पुलिस थाने में शिकायत दर्ज़ की है ।

34. चरित्रगत विशेषताएँ - गणित के माटसाब सुरेंदरजी का

सुरेदर माटसाब बेला और साहिल के गणित अध्यापक थे । स्कूल के सभी बच्चे उनका नाम सुनने पर या दूर से देखने पर काँपना शुरू करते थे । इसलिए घंटी बजने के दो मिनट पहले ही अपने स्थान पर आकर बैठते थे । वे बीच बीच में गणित की कॉपी जाँचते थे । ज़रा-सी गलती पर भी झापड मारना, बालों में पंजा फँसाना, कॉपी दूर फेंकना आदि उनकी बुरी आदतें थीं । भयभीत होकर छात्र क्लास में साँस पकडकर बैठते थे । छात्रों के अपमान करने में उनको तनिक भी हिचक नहीं थी । बच्चों की गलतियों को माफ करना उनकी बस की बात नहीं थी । बच्चे उनसे बिलकुल प्यार नहीं करते थे ।

सर्वनाम + परसर्ग (विभक्ति प्रत्यय) = परसर्गयुक्त शब्द

सर्वनाम + परसर्ग	ने	को	से	का	के	की	में	पर	केलिए
मैं	मैंने	मुझको /मुझे	मुझसे	मेरा	मेरे	मेरी	मुझमें	मुझपर	मेरेलिए
तू	तूने	तुझको /तुझे	तुझसे	तेरा	तेरे	तेरी	तुझमें	तुझपर	तेरेलिए
तुम	तुमने	तुमको /तुम्हें	तुमसे	तुम्हारा	तुम्हारे	तुम्हारी	तुममें	तुमपर	तुम्हारेलिए
हम	हमने	हमको /हमें	हमसे	हमारा	हमारे	हमारी	हममें	हमपर	हमारेलिए
आप	आपने	आपको	आपसे	आपका	आपके	आपकी	आपमें	आपपर	आपकेलिए
वह	उसने	उसको /उसे	उससे	उसका	उसके	उसकी	उसमें	उसपर	उसकेलिए
यह	इसने	इसको /इसे	इससे	इसका	इसके	इसकी	इसमें	इसपर	इसकेलिए
जो (एक)	जिसने	जिसको /जिसे	जिससे	जिसका	जिसके	जिसकी	जिसमें	जिसपर	जिसकेलिए
कौन (एक)	किसने	किसको /किसे	किससे	किसका	किसके	किसकी	किसमें	किसपर	किसकेलिए
कोई (एक)	किसीने	किसीको	किसीसे	किसीका	किसीके	किसीकी	किसीमें	किसीपर	किसीकेलिए
वे	उन्होंने	उनको /उन्हें	उनसे	उनका	उनके	उनकी	उनमें	उनपर	उनकेलिए
ये	इन्होंने	इनको /इन्हें	इनसे	इनका	इनके	इनकी	इनमें	इनपर	इनकेलिए
जो (बहु)	जिन्होंने	जिनको /जिन्हें	जिनसे	जिनका	जिनके	जिनकी	जिनमें	जिनपर	जिनकेलिए
कौन (बहु)	किन्होंने	किनको /किन्हें	किनसे	किनका	किनके	किनकी	किनमें	किनपर	किनकेलिए
कोई (बहु)	किन्हींने	किन्हींको	किन्हींसे	किन्हींका	किन्हींके	किन्हींकी	किन्हींमें	किन्हींपर	किन्हींकेलिए

1. बीरबहूटी **PART 4** (दीपावली के बाद स्कूल खुलना, गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेलना)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. परेशान होना – व्याकुल होना/ दुखित होना 2. ज़िद करना – हठ करना

2. किसने किससे कहा ?

1. " आज खेल घंटी में गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेलेंगे ।" **ANS –** बेला ने साहिल से

2. " नहीं खेलेंगे । तेरे सिर में फिर से लग जाएगी तो ...? " **ANS –** साहिल ने बेला से

3. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. बेला को कहाँ चोट लगी ?
सिर पर
2. बच्चे गाँधी चौक में क्या खेल खेला ?
लंगडी टाँग
3. बेला कहाँ से गिर गई थी ?
छत से
4. पार्क में किसकी मूर्ति थी ?
गाँधीजी की
5. बेला को बच्चे क्या कहकर चिढाते थे ?
सुल्ताना डाकू/ सफेद पट्टी
6. अन्य बच्चे बेला को सुलताना डाकू कहकर चिढाने का कारण क्या है?
छत से गिरने के कारण बेला के सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी।
7. बेला और साहिल गाँधी चौक क्यों गए थे ?
लंगडी टाँग खेलने केलिए
8. बेला और साहिल लंगडी टाँग कहाँ खेलते थे ?
गाँधी चौक की बालू में
9.' नहीं खेलेंगे । तेरे सिर में फिर से लग जाएगी तो '- यहाँ साहिल का कौन–सा मनोभाव स्पष्ट होता है?
बेला से उसकी अंतरंग मित्रता का ।
10. बेला को बच्चे क्यों चिढा रहे थे ?
बेला के सिर पर चोट लगने के कारण सफेद पट्टी बाँधी थी । इसलिए बेला को बच्चे चिढा रहे थे ।
11. बेला के सिर पर चोट कैसे लगी ?
छत से गिर जाने के कारण
12. बेला के सिर पर सफेद पट्टी क्यों बाँधी थी ?
क्योंकि छत से गिर जाने के कारण उसके सिर पर चोट लगी थी ।
13. बेला किस बात केलिए ज़िद की ?
खेल घंटी में गाँधी चौक की बालू में लंगडी टांग खेलने की
14. साहिल ने बेला से क्यों कहा कि " नहीं खेलेंगे ? "
छत से गिरने के कारण बेला के सिर पर चोट लगी थी । इसलिए उसने ऐसा कहा ।
15. ' गाँधीजी की मूर्ति ऐसी दिखाई पडती जैसे और सयय से कुछ अधिक मुस्करा रही हो ।'- इसका कारण क्या होगा ?
अपने चारों ओर हँसते-खेलते बच्चों को देखकर
16.' इन बच्चों को अपने चारों ओर खेलते देखकर गाँधीजी की मूर्ति ऐसी दिखाई पडती जैसे और सयय से कुछ अधिक मुस्करा रही हो ।'- इसका मतलब क्या है ?
गाँधीजी बच्चों को बहुत प्यार करते थे । इसलिए बच्चे जब निष्कलंकता और प्यार भरी दोस्ती के साथ अपनी मूर्ति की चारों ओर खेलने लगे तो उसे अधिक प्रसन्नता हुई होगी ।
17. साहिल के परेशान होने का कारण क्या था ?
दीपावली की छुट्टियों के बादस्कूल खुला तो बेला के सिर पर पट्टी बाँधी थी । कोई उसे सफेद पट्टी कह रहा था तो कोई सुल्ताना डाकू तो कोई कुछ और कहकर चिढा रहा था । बेला की यह हालत देखकर साहिल परेशान हो गया ।

18. पटकथा - 4 (गाँधी चौक के लंगडी टाँग खेल)

स्थान – स्कूल का मैदान ।

समय – सुबह 10 बजे ।

पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है ।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है ।

दृश्य का विवरण– दीपावली के बाद स्कूल खुला तो बेला के सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी । यह देखकर साहिल उसकेपास आता है ।

संवाद -

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCR145 ph- 9567224545

साहिल - (परेशान होकर) तेरे सिर पर यह क्या हो गया बेला ?
बेला - (हँसकर) छत से गिर जाने से चोट लग गयी ।
साहिल - यह कब हुआ ?
बेला - बहुत दिन हो गए ।
साहिल - अब दर्द है क्या ?
बेला - नहीं । आज खेल घंटी में हम गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेलेंगे ।
साहिल - नहीं खेलेंगे ।तेरे सिर में फिर से चोट लग जाएगी तो ...?
बेला - (ज़िद करते हुए) नहीं लगेगी ।
साहिल - तो ठीक है । अपनी मर्जी ।
(दोनों खुशी से कक्षा में जाकर बैठते हैं ।)

19. टिप्पणी – साहिल और बेला की दोस्ती

साहिल और बेला प्रभात की कहानी बीरबहूटी के मुख्य पात्र हैं । वे दोनों फुलेरा गाँव के पाँचवीं कक्षा में पढनेवाले छात्र हैं । वे एक साथ स्कूल आते-जाते हैं । बीरबहूटियों को खोजने केलिए और खेलने केलिए एक साथ निकलते हैं । दोनों एक ही क्लास में पढते हैं, एक ही बेंच पर पास-पास बैठते हैं । कक्षा में साहिल जो करता है वही बेला भी करती है । एक साथ कॉपी लिखते हैं । किताब पढते तो दोनों किताब पढते, पाठ भी एक ही पढते । एक साथ पानी पीने चले जाते हैं । वे पास-पास रहते हैं । दोनों अच्छे दोस्त हैं । एक का दुख दूसरे का भी है । सुरेंदर जी माटसाब बेला के बालों में पंजा फँसाने पर साहिल दुखी हो जाता है । छत से गिरकर बेला के सिर पर चोट लगने पर भी । साहिल की पिंडली में कील लग जाने पर बेला भी बहुत दुखी हो जाती है । पाँचवीं का रिज़ल्ट आया तो छठी कक्षा में दोनों अलग-अलग स्कूलों में पढने जाने की बात सोचकर बेला को रुलाई आई तो साहिल की आँखें भी लाल हो गईं । दोनों आपस में सांत्वना देते हैं । इस प्रकार दोनों की अनुपम दोस्ती हम देख सकते हैं ।

20. टिप्पणी – अपनी दोस्ती

बचपन में मेरा दिली दोस्त था मनु । मनु के माँ-बाप गरीब थे, पर वह अच्छी तरह पढता था । सातवीं कक्षा तक हम दोनों एक ही कक्षा में पढते थे । क्लास में हम पास-पास बैठते थे । मैं पढाई में थोडा पिछडा था, इसलिए कभी-कभी पढाई में वह मेरी सहायता करता था । वह अकसर मेरा घर आता था, मैं उसके घर में भी । छुट्टी के दिन हम अन्य बच्चों के साथ पास के मैदान में खेलने जाते थे । खेलने के बाद हम वहाँ के तालाब में नहाने जाते थे । एक दिन हम स्कूल से लौट रहे थे, तब पैर फिसलकर सडक पर गिरने से पाँव में चोट लगी । तब वह मुझे अस्पताल ले गया । सातवीं पास होने पर मैं दूर के स्कूल में भर्ती कराया गया । वह गाँव में ही रहा । फिर हम मिल न पाये । उसकी यादें, अब भी मन में हैं ।

21. साहिल की डायरी (गाँधी चौक का खेल)

तारीख : ....

दीपावली की छुट्टियों के बाद स्कूल खुला । मैं सबेरे ही स्कूल पहुँचा । थोडी देर बाद बेला आई । उसके सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी । बच्चे उसकी हँसी उठाने लगे । मैं उसके पास गया । वह छत से गिर गई थी । बहुत दिन हो गए थे । देखकर मुझे बहुत दुख हुआ । बाद में वह हमारे साथ गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेली । मैं परेशान था यदि उसके सिर पर फिर से चोट लगी तो...। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ । पूरी खेल घंटी हम खुशी से खेलते रहे ।

22. बेला की डायरी (गाँधी चौक का खेल)

तारीख: ....

आज का दिन मेरेलिए कैसा रहा, बता नहीं सकती । दीपावली की छुट्टी के बाद आज स्कूल गयी । सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी । यह देखकर लडके मुझे चिढाने लगे । यह देखकर साहिल मेरे पास आया । साहिल के आने से मैं उनके मज़ाक उठाने से बच गयी । साहिल परेशान होकर मुझसे पट्टी बँधवाने का कारण पूछा । मैंने उससे खेलघंटी में गाँधीचौक में लंगडी टाँग खेलने की ज़िद की । आखिर मेरी हठ के कारण अंत में उसने मान लिया । पूरे खेलघंटी हम लंगडी टाँग खेलते रहे । खेलते समय भी वह डरा हुआ था कि मुझे कुछ हो गया तो ... । पर ईश्वर की कृपा से ऐसा कुछ नहीं हुआ ।

23. साहिल का पत्र (गाँधी चौक का खेल)

स्थान : ....
तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ ।

दीपावली की छुट्टियों के बाद स्कूल खुला । मैं सबेरे ही स्कूल पहुँचा । थोडी देर बाद बेला आई । उसके सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी । बच्चे उसकी हँसी उठाने लगे । मैं उसके पास गया । वह छत से गिर गई थी । बहुत दिन हो गए थे । देखकर मुझे बहुत दुख हुआ । बाद में वह हमारे साथ गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेली । मैं परेशान था यदि उसके सिर पर फिर से चोट लगी तो...। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ । पूरी खेल घंटी हम खुशी से खेलते रहे ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

1. बीरबहूटी PART 5 (रविवार का दिन, साहिल पिंडली में चोट लगने अस्पताल में)

1. किसने किससे कहा ?

1. " आज खेल घंटी में गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेलेंगे ।" **ANS –** बेला ने साहिल से

2. " नहीं खेलेंगे । तेरे सिर में फिर से लग जाएगी तो ...? " **ANS –** साहिल ने बेला से

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. किसको सरकारी अस्पताल ले जाया गया ?
   साहिल को
2. साहिल की पिंडली में क्या लग गया था ?
   कील
3. साहिल को कहाँ पर चोट लगी थी ?
   पिंडली में
4. साहिल को क्यों अस्पताल ले जाया गया ?
   उसकी पिंडली में कील लगने से हुई चोट को पट्टी बँधवाने केलिए
5. बेला क्यों अस्पताल आई है ?
   सिर पर पट्टी बँधवाने केलिए
6. पिंडली में कील लगने पर साहिल को कहाँ ले जाया गया ?
   सरकारी अस्पताल में
7. साहिल घायल कैसे हुआ ?
   साहिल अपने घर में स्टूल पर चढते हुए नीम की डाली पकडकर झूमते वक्त अचानक टूटे स्टूल की एक कील उसकी पिंडली में लग गई । इससे एक इंच गहरा गड्ढा हो गया । इस तरह वह घायल हुआ ।

8. साहिल की डायरी (अस्पताल जाना)

तारीख : ....

स्कूल की छुट्टी थी । मैं एक स्टूल पर चढकर नीम की डाली पकडकर झूम रहा था । अचानक टूटे स्टूल की एक कील मेरी पिंडली में लग गई । एक इंच का गहरा गड्ढा हो गया । माँ मुझे पट्टी बँधवाने सरकारी अस्पताल ले गई । वहाँ पर बेला को देखा । वह सिर पर पट्टी बँधवाने आई थी । उसके सिर पर पट्टी । मेरी पिंडली में । कितनी एकता है हममें ...

9. बेला की डायरी (अस्पताल में जाना, वहाँ साहिल को देखना)

तारीख : ....

आज मैं अपने पापा के साथ सरकार अस्पताल में पट्टी बँधवाने गयी थी । तब वहाँ कतार में खडे साहिल को देखा । वह अपनी पिंडली में पट्टी बँधवाने आया था । स्कूल की छुट्टी होने से वह अपने घर में नीम की डाली पकडकर झूमते वक्त स्कूल की एक कील उसकी पिंडली में लग गग गई । एक इंच गहरा गड्ढा हो गया था । उसे पैर पर बहुत दर्द हो रहा था । ठीक से पैर ज़मीन पर रख न सकता था । बहुत मुश्किल से खडा था । बेचारा, कितनी बुरी हालत है उसकी । पर मुझे तो एक बात पर हँसी तो आई, कितनी एकता है हममें । अब मेरे सिर पर पट्टी है तो उसकी पिंडली में ।

10. वार्तालाप (अस्पताल में, साहिल और बेला के बीच)

साहिल - हाय बेला, यहाँ क्यों आई हो ?

बेला - हाय साहिल, मैं तो सिर पर पट्टी बँधवाने आई है । क्या हुआ तुमको ?

साहिल – मेरी पिंडली में चोट लग गई है ।

बेला - कैसे ?

साहिल – स्टूल पर चढकर नीम की डाली पकडकर झूलते वक्त स्टूल टूटने से एक कील मेरी पिंडली में लग गई ।

बेला - डॉक्टर ने क्या कहा ?

साहिल – उन्होंने कहा घबराने की कोई बात नहीं । कुछ दिनों के बाद पट्टी खोलेंगे ।

बेला - दर्द ज़्यादा है क्या ?

साहिल – अब दर्द कुछ कम हुआ है ।

बेला - अच्छा मैं जाती हूँ, नर्स बुला रही है । बाई ।

साहिल – ठीक है बेला, बाई ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCR145 Ph- 9567224545

1. बीरबहूटी PART 6 (पाँचवीं कक्षा का रिज़ल्ट आना, दोनों की बिछुडाई)

1. किसने किससे कहा ?

1. " अब तुम कहाँ पढोगे ? " **ANS –** बेला ने साहिल से
2. " और तुम कहाँ पढोगी ? " **ANS –** साहिल ने बेला से
3. " तो यानी की अभ तुम फुलेरा में ही नहीं रहोगे ? " **ANS –** बेला ने साहिल से
4. " तुम्हारी आँख में आँसू क्यों आ रहे हैं ? " **ANS –** साहिल ने बेला से
5. " मैं चिढाऊँ अब तुम्हें ? " **ANS –** बेला ने साहिल से

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. फुलेरा के स्कूल में कौन-सी कक्षा तक है ?
   पाँचवीं कक्षा तक
2. पाँचवीं कक्षा का रिज़ल्ट आने पर दोनों बच्चे बहुत दुख हुए । - कारण क्या था ?
   अब दोनों एक साथ नहीं पढ सकते ।
3. राजकीय कन्या पाठशाला में पढाने का निर्णय किसके पापा ने किया ?
   बेला के
4. बेला और साहिल अब किस कक्षा में आ गए हैं ?
   छठी कक्षा में
5. बेला के पापा उसे किस पाठशाला में पढाना चाहते हैं ?
   राजकीय कन्या पाठशाला में
6. छठी कक्षा की पढाई केलिए साहिल कहाँ जाएगा ?
   अजमेर में
7. बेला अगले साल कहाँ पढनेवाली थी ?
   राजकीय कन्या पाठशाला में
8. साहिल के पापा उसे कहाँ भेजकर पढाना चाहते हैं ?
   अजमेर में
9. बेला कहने लगी, " मैं चिढाऊँ अब तुम्हें ? रोनी सूरत साहिल रोनी सूरत साहिल ।" – इस प्रसंग में निहित बेला का भाव कौन-सा है ?
   प्यार
10. उनमें बारिश की बूँदों-सा पानी भर गया था । यहाँ 'उनमें' किसकेलिए प्रयुक्त है ?
    साहिल की आँखें
11. किसकी आँखें बीरबहूटी की तरह लाल थीं ?
    साहिल की
12. साहिल के आँसू की तुलना किससे की गई ?
    बारिश की बूँद से
13. बारिशें आने में कितना महीना बाकी था ?
    डेढ
14. ' बारिश से पहले की बारिश '– यहाँ क्या है ?
    बेला और साहिल के दुख भरे आँसू बरसात के समान बरस रहे हैं ।
15. स्कूल के अंतिम दिन साहिल और बेला आपस में क्या देख रहे थे ?
    एक-दूसरे के रिपोर्ट कार्ड
16. बेला और साहिल को फुलेरा का स्कूल क्यों छोडना पडता है ?
    क्योंकि फुलेरा गाँव का स्कूल पाँचवीं तक ही था ।
17. बेला और साहिल को फुलेरा का स्कूल छोडनेवाले थे । क्यों ?
    क्योंकि फुलेरा गाँव का स्कूल पाँचवीं तक ही था ।
18. बेला और साहिल क्यों अलग हो रहे हैं ?
    क्योंकि उनका स्कूल पाँचवीं तक ही था ।
19. बेला और साहिल का दोस्ती क्यों छूट जाती ?
    क्योंकि दोनों आगे की पढाई केलिए अलग-अलग स्कूल जाते हैं ।
20. साहिल अगले साल फुलेरा के स्कूल में नहीं पढेगा । क्यों ?
    क्योंकि उनका स्कूल पाँचवीं तक ही था ।
21. साहिल और बेला के बिछुडन का कारण क्या है ?
    फुलेरा गाँव का उनका स्कूल पाँचवीं तक ही था ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCR145 Ph- 9567224545

22. साहिल और बेला को दूसरे स्कूल क्यों जाना पडा ?

साहिल और बेला फुलेरा के जिस स्कूल में पढते हैं वह पाँचवीं तक का है। इसलिए पाँचवीं पास हुए साहिल और बेला को आगे की पढाई केलिए दूसरे स्कूल में जाना पडता है।

23. 'साहिल और बेला बहुत दुखी देख रहे थे।'- क्यों ?

गाँव का स्कूल पाँचवीं तक का होने से उन्हें आगे की पढाई केलिए अलग अलग स्कूलों में पढना पडेगा।

24. साहिल की आँखें क्यों लाल हो गईं ?

बेला और साहिल अगले वर्ष अलग-अलग स्कूलों में पढनेवाले हैं। वे यह सहन नहीं सकते थे। दोनों रोने लगे। इससे साहिल की आँखें लाल हो गईं।

25. परीक्षा पास होने पर भी बेला और साहिल की आँखों से आँसू क्यों आये ?

साहिल और बेला पहली बार अलग-अलग स्कूलों में जाते हैं। यह सोचते समय दोनों की आँखों से आँसू आए।

26.' आज आखिरी बारी वे एक दूसरे की कोई चीज़ को छूकर देख रहे थे।'- इससे आपने क्या समझा ?

पाँचवीं तक एक मन से हर काम लेनेवाले साहिल और बेला आगे की पढाई केलिए अलग अलग स्कूलों में भर्ती होनेवाले हैं, यानी वे बिछुड रहे हैं। इस कारण दोनों पहले की तरह कुछ कर न पाएँगे,मिल न पाएँगे। इसलिए ऐसा कहा होगा।

27. बेला कहने लगी, " मैं चिढाऊँ अब तुम्हें ? रोनी सूरत साहिल रोनी सूरत साहिल।" - प्रस्तुत प्रसंग में बेला के कथन पर अपना विचार लिखें।

जब पाँचवीं कक्षा की पढाई के बाद अलग-अलग स्कूल जाने की तैयारी करते हैं तो साहिल और बेला को यह बात असहनीय महसूस होती है। इस कारण से दुखी साहिल की आँखों में आँसू आ जाते हैं। तब उसे सांत्वना देते हुए बेला कहने लगती है कि साहिल की सूरत रोते समय बढती है।

28. ' यह बारिशों से पहले की बारिश का दिन था।' कहानी के प्रसंग में यह कैसे सार्थक होता है ?

हमेशा एकसाथ चलनेवाले साहिल और बेला आगे की पढाई केलिए अलग हो जानेवाले हैं। इस बिछुडन के बारे में आपस में बताकर दोनों दुखी हुए और उनकी आँखें भर गयीं। यह लेखक को बारिश से पहले की बारिश लगी।

29. पटकथा (पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट आने पर)

स्थान – फुलेरा कस्बे की एक गली।

समय – सुबह 11 बजे।

पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, फ्रॉक पहनी है।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, कुर्ता और पतलून पहना है।

दृश्य का विवरण – दोनों पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट जानने के बाद दुखी मन से गली की एक पेड के नीचे खडे हैं।

संवाद -

साहिल - तुमने हमारा रिज़ल्ट देखा ?

बेला - हाँ देखा, हम दोनों छठी में आ गए हैं।

साहिल - अगले साल तुम कहाँ पढोगी ?

बेला - राजकीय कन्या पाठशाला में। और तुम ?

साहिल - मुझे अगले साल अजमेर भेज देंगे। वहाँ एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा।

बेला - क्यों साहिल ?

साहिल - पता नहीं क्यों ?

बेला - क्या अब तुम फुलेरा में ही नहीं रहोगे ?

साहिल - नहीं यार। तुम अपना रिपोर्ट कार्ड दिखाना।

बेला - ठीक है, तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड भी दिखाना। (दोनों एक दूसरे का रिपोर्ट कार्ड देखने लगते हैं।)

साहिल - तुम्हारी आँखों से आँसू क्यों आ रहे हैं ?

बेला - (हँसते हुए) मुझे क्या पता ? अब तुम्हारी आँखें भी लाल हो गई हैं क्यों ?

साहिल - मुझे भी नहीं पता।

बेला - आज से मैं तुम्हें कैसे चिढाऊँ ?

साहिल – तो क्या ? हम छुट्टी के दिन फिर मिलेंगे।

बेला - ठीक है, फिर मिलेंगे।

साहिल - ठीक है बेला।

(दोनों अलग-अलग रोस्ते से चले जाते हैं।)

SREEJITH R KOVOOR VARKALA, SCRT45 Ph- 9567224545

30. पटकथा (रिपोर्ट कार्ड देखने के बाद)

स्थान - स्कूल से घर जाने का रास्ता ।
समय - सुबह के 10 बजे ।
पात्र - 1. साहिल, करीब 11 साल का, कुर्ता और पतलून पहना है ।
2. बेला, करीब 11 साल की, फ्रॉक पहनी है ।
घटना का विवरण - साहिल और बेला दोनों किसी चिंता में मग्न है । वे आपस में बातें करने लगे ।

संवाद –

साहिल – तुम अपना रिपोर्ट कार्ड दिखाना ।
बेला - ठीक है, तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड भी दिखाना । (दोनों एक दूसरे का रिपोर्ट कार्ड देखने लगते हैं ।)
साहिल - तुम्हारी आँखों से आँसू क्यों आ रहे हैं ?
बेला - (हँसते हुए) मुझे क्या पता ? अब तुम्हारी आँखें भी लाल हो गई हैं क्यों ?
साहिल - मुझे भी नहीं पता ।
बेला - आज से मैं तुम्हें कैसे चिढाऊँ ?
साहिल – तो क्या ? हम छुट्टी के दिन फिर मिलेंगे ।
बेला - ठीक है, फिर मिलेंगे ।
साहिल - ठीक है बेला ।
(दोनों अलग-अलग रोस्ते से चले जाते हैं ।)

31. रिज़ल्ट जानकर घर आने पर साहिल और माँ के बीच हुए वार्तालाप

माँ - क्या हुआ बेटा ? बहुत परेशान दिखते हो ।
साहिल - बेला आगे मेरे साथ नहीं होगी न ?
माँ - नहीं बेटा । अगले साल वह राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगी ।
साहिल - मैं अजमेर में । ऐसा है न माँ ?
माँ - हाँ बेटा । तुम्हारे पिता ने कहा था ।
साहिल - बेला के बिना मैं कैसे रहूँ माँ ?
माँ - बेटा, बेला जैसे दोस्त तुम्हें वहाँ भी मिलेगा ।
साहिल - मुझे नहीं लगता । क्या बेला मुझे भूलेगा ?
माँ - अच्छी दोस्ती कभी नहीं छूटेगा बेटा ।
साहिल - ठीक है माँ ।

32. वार्तालाप – साहिल और बेला (बिछुडन के बाद)

बेला - अरे साहिल, कैसे हो तुम ? नया स्कूल कैसा है ?
साहिल - ठीक हूँ । स्कूल भी अच्छा है, लेकिन मैं वहाँ अकेला हूँ ।
बेला - कोई दोस्त नहीं ?
साहिल - दोस्त अनेक हैं, लेकिन तेरे जैसे कोई नहीं ।
बेला - मेरी हालत भी तेरी जैसी है । तेरे जैसे दोस्त मुझे भी नहीं ।
साहिल - क्या करें हम ?
बेला - पता नहीं । लेकिन खुशी की एक बात है । सुरेंदर जी जैसे माटसाब वहाँ नहीं ।
साहिल - तेरी आँखों में आँसू क्यों बेला ?
बेला - पता नहीं । और तेरी आँख में ... ?
साहिल - मुझे भी पता नहीं । हम दोनों समान दुखी हैं ।

33. बेला की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक प्रभात की सुंदर कहानी बीरबहूटी का मुख्य पात्र है बेला नामक ग्यारह साल की लडकी । वह फुलेरा गाँव के स्कूल में पाँचवीं कक्षा में पढती है । उसका दोस्त है साहिल । दोनों अच्छे दोस्त हैं, वे एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं । दोनों एक ही कक्षा में पढते थे । साथ-साथ स्कूल आते-जाते हैं, रास्ते के खेत में बीरबहूटियों को खोजते हैं और खेल घंटी में गाँधी चौक में लंगडी टांग खेलते हैं । बाकी छात्रों के नज़र में बेला एक अच्छी लडकी है । एक दिन गणित के माटसाब ने कॉपी जाँचते समय उसमें गलती पाकर उसका अपमान करते तो वह बहुत उदास हो जाती है । पाँचवीं के रिज़ल्ट आने पर दोनों अगले साल बिछुड जाने के बात को लेकर दोनों दुखी हो जाते हैं । बेला में हम एक सरस स्वभाववाली, मित्रता निभानेवाली, स्वाभिमानी लडकी को देख सकते हैं ।

SREEJITH R. KOVOOR VARKALA, SCR145 ph- 9567224545

34. साहिल की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक प्रभात की सुंदर कहानी बीरबहूटी का मुख्य पात्र है साहिल नामक ग्यारह साल का लडका । वह फुलेरा गाँव के स्कूल में पाँचवीं कक्षा में पढता है । उसकी सहेली है बेला । दोनों अच्छे दोस्त हैं,वे एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं । दोनों एक ही कक्षा में पढते थे । साथ-साथ स्कूल आते-जाते हैं,रास्ते के खेत में बीरबहूटियों को खोजते हैं और खेल घंटी में गाँधी चौक में लंगडी टांग खेलते हैं । कॉपी जाँचते समय गणित के माटसाब बेला का अपमान करने पर वह दुखी हो जाता है । पाँचवीं के रिज़ल्ट आने पर दोनों अगले साल बिछुड जाने के बात को लेकर दोनों दुखी हो जाते हैं । साहिल में हम एक सरस स्वभाववाले, मित्रता निभानेवाले, स्वाभिमानी लडके को देख सकते हैं ।

35. साहिल की डायरी (रिज़ल्ट दिवस की)

तारीख : ……………….

आज स्कूल का मेरा अंतिम दिन था । कितनी जल्दी पिछले पाँच साल बीत गये । अब मैं छठी कक्षा मे आ गया हूँ । आज संतोष के साथ दुख भी है । बचपन के दोस्त बेला से बिछुडने की वेदना मन में दर्द पैदा किया । आज उसकी आँखों में पहली बार मैंने आँसू देखा । मेरी भी आँखें भर गई थीं । बेला के साथ की स्कूल शिक्षा मैं कभी नहीं भूलूँगा । वह बहुत प्यारी और दिली दोस्त थी । फुलेरा के स्कूल पाँचवीं तक होने के कारण पिताजी ने मुझे अजमेर भेजने का निर्णय लिया था । वह तो अगले साल राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगी ।

36. बेला की डायरी (रिज़ल्ट दिवस की)

तारीख : …………………..

आज पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट का दिन था । मैं और साहिल पास हो गए । मैं बहुत खुश हूँ ... साथ–साथ दुखी भी । क्योंकि मैं कल से साहिल से मिल नहीं पाएगी । अगले साल वह अजमेर जाएगा । उसे घर से दूर एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा । आज तक कितनी खुशी थी । बारिश के मौसम में साहिल के साथ बीरबहूटियों को खोजकर कितने बिताए । कल से किसके साथ लंगडी टाँग खेलूँ ? जाते समय उसकी आँखें लाल थीं और उसमें पानी भर गया था । मेरा विश्वास है कि वह भी दुखी है । क्योंकि हमारी दोस्ती उतनी सख्त थी ।

37. बेला की डायरी (नए स्कूल के पहले दिवस की)

तारीख : …………………..

मैं बहुत उदास हूँ । आज साहिल के बिना स्कूल का पहला दिवस था । आज से हम अलग-अलग स्कूल में हैं । स्कूल में नए दोस्तों को मिला । लेकिन साहिल के सामने ये कहाँ ? साहिल ही मेरा सच्चा दोस्त है । मैं सदा हमारी दोस्ती के बारे में सोचती हूँ । मैं फिर कब साहिल से मिलूँगी ? हम कब बीरबहूटियों को ढूँढेंगे? हम कब एकसाथ खेलेंगे? इन विचारों से पढने को भी मन नहीं लगता है । सुरेंदरजी हमें पीट लेते तो भी कोई परवाह नहीं था । आज ही साहिल को एक पत्र लिखना है । साहिल भी वहाँ दुखी होगा । मेरा पत्र उसको आश्वासन देगा । मैं अगली छुट्टियों की प्रतीक्षा में हूँ ।

38. फुलेरा गाँव में उच्च शिक्षा केलिए सुविधाएँ नहीं है । इस विषय के आधार पर समाचार तैयार करें ।

फुलेरा गाँव में उच्च शिक्षा की सुविधाएँ नहीं

स्थान : ………………….. फुलेरा गाँव में उच्च शिक्षा केलिए सुविधाएँ नहीं है । यहाँ सिर्फ एक प्राईमरी स्कूल है । वहाँ पाँचवीं तक है । उच्च शिक्षा केलिए यहाँ के लोगों को दूसरे स्थानों पर जाना पडता है । यहाँ से दूसरे स्थान जाने केलिए गाडियों की सुविधाएँ भी नहीं हैं । फुलेरा के अधिक लोग किसान हैं । उनको अपने बच्चों को दूरी पर भेजने की संपत्ति भी नहीं है । यह बात शासकों को समझाई तो भी उनकी ओर से कोई कार्यवाई नहीं किया है । अब फुलेरा के लोग मुख्यमंत्री और शिक्षा मंत्री को निवेदन करने जा रहे हैं । लोगों का विश्वास है कि इस निवेदन से शासक लोग आवश्यक कार्यवाई लेंगे । ज़रूर यहाँ उच्च शिक्षा की आवश्यक सुविधाएँ देनी चाहिए ।

39. साहिल का पत्र – रिज़ल्ट के बाद

स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ ।

आज पाँचवीं के रिज़ल्ट का दिन था । मैं और बेला हम दोनों पास हो गए । मैं बहुत खुश हूँ … साथ-साथ दुखी भी । क्योंकि मैं कल से बेला से मिल नहीं पाएगा । अगले साल वह राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगी । घरवाले मुझे अजमेर भेज देंगे । घर से दूर एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा । आज तक कितनी खुशी थी । बारिश के मौसम में बेला के साथ बीरबहूटियों को खोजकर कितने दिन बिताए । कल से किसके साथ लंगडी टाँग खेलूँ ? क्या वह मुझे याद रखेगी ? मेरा रिपोर्ट कार्ड देखते समय उसकी आँखों में आँसू आ गए । मेरा विश्वास है कि वह भी दुखी है । क्योंकि हमारी दोस्ती उतनी सख्त थी । नए स्कूल में मुझे मित्र ज़रूर मिलेंगे … पर बेला जैसे कोई नहीं होगी ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे हो रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

40. बेला का पत्र – रिज़ल्ट के बाद

स्थान : ....
तारीख : ....

प्रिय सहेली,

तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ ।

आज पाँचवीं के रिज़ल्ट का दिन था । मैं और साहिल हम दोनों पास हो गए । मैं बहुत खुश हूँ ... साथ-साथ दुखी भी । क्योंकि मैं कल से बेला से मिल नहीं पाएगी । अगले साल वह राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगा । घरवाले मुझे अजमेर भेज देंगे । घर से दूर एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा । आज तक कितनी खुशी थी । बारिश के मौसम में साहिल के साथ बीरबहूटियों को खोजकर कितने दिन बिताए । कल से किसके साथ लंगडी टाँग खेलूँ ? क्या वह मुझे याद रखेगी ? मेरा रिपोर्ट कार्ड देखते समय उसकी आँखों में आँसू आ गए । मेरा विश्वास है कि वह भी दुखी है । क्योंकि हमारी दोस्ती उतनी सख्त थी । नए स्कूल में मुझे मित्र ज़रूर मिलेंगे ... पर बेला जैसे कोई नहीं होगी ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे हो रही है ? तुम कब यहाँ आओगी ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारी सहेली
(हस्ताक्षर)
नाम

41. बेला का पत्र साहिल को (अजमेर के स्कूल के बारे में)

स्थान : ....
तारीख : ....

प्रिय साहिल,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, तुम्हारे नए स्कूल के बारे में जानने और मेरे नए स्कूल के बारे में बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ ।

अब तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? अजमेर का तुम्हारा नया स्कूल कैसा है ? वहाँ कोई नया दोस्त मिला है क्या ? हॉस्टल स्कूल के पास ही है न? तुम्हारा नया स्कूल फुलेरा का स्कूल जैसा है क्या ? तुम्हें पुराने स्कूल की याद कभी आती है ? अपने बारे में कहे तो मेरा नया स्कूल बहुत अच्छी है । वहाँ मुझे कई दोस्त मिले हैं । मुझे हमेशा तुम्हारी याद आती हैं । पहले की तरह हम कब खेत में बीरबहूटियों को खोजेंगे ? तुम्हारे स्कूल के गणित के माटसाब सुरेंदरजी जैसा नहीं है न ?

वहाँ की सारी बातें विशद रूप से ज़रूर लिखना । अगली छुट्टी में हम मिलें । तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारी सहेली
(हस्ताक्षर)
नाम

42. साहिल का पत्र बेला को (नए स्कूल के बारे में)

स्थान : ....
तारीख : ....

प्रिय बेला,

तुम कैसी हो? कुशल हो न? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, मेरे नए स्कूल के बारे में बताने केलिए यह पत्र भेज रहा हूँ ।

परसों मैं इधर पहुँचा । यात्रा बहुत मुश्किल थी । गाडी में बडी भीड थी । कल यहाँ के स्कूल में मेरी भर्ती हुई । स्कूल होस्टल से आधा किलोमीटर दूर पर है । बडा स्कूल है । बडे बडे कमरे और मैदान । आँगन का बगीचा तरह तरह के फूलों से बहुत खूबसूरत है । कल सुबह स्कूल खुलेगा । होस्टल में पचास से अधिक छात्र हैं । कमरे में मेरा सहवासी है गणेश । वह आगरा से है । स्कूल जाने के लिए यहाँ से गाडी है । यहाँ की सडकें तो गाडियों से भरी हैं । कल शाम हम घूमने गए । इलाका बहुत सुंदर है । फुलेरा कितना छोटा है । यहाँ छोटी बडी दूकानें, बैंक, सिनेमाघर, मंदिर, मस्जिद सब कुछ हैं । यहाँ के लोग सदा व्यस्त हैं ।

आच्छा, वहाँ कैसे चल रहा है ? सब ठीक हैं न ? नया स्कूल कैसा है ? कल रात में भी मैंने बीरबहूटियों को खोजने का सपना देखा । वहाँ की सारी बातें विशद रूप से लिखना । अगली छुट्टी में हम मिलें । तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

2. हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था PART -1 (कविता)

1. इसका मतलब क्या है ?

1. हाथ बढाना - सहायता करना 2. साथ चलना - मिलकर चलना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. ‘ हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था ’- कविता किसकी रचना है ?
विनोद कुमार शुक्ल की
2. ‘ व्यक्ति को मैं नहीं जानता था ’- इसमें ‘ **मैं** ’ कौन है ?
विनोद कुमार शुक्ल
3. ‘ मैं हताशा को जानता था ।’- कौन हताशा को जानता था ?
मैं (कवि, विनोद कुमार शुक्ल)
4. इस कविता में कौन-सा शब्द पर बल दिया है ?
जानना
5. कवि ने रास्ते पर किसको देखा ?
अपरिचित/ हताश व्यक्ति को
6. रास्ते पर वह व्यक्ति किस हालत में बैठा था ?
हताशा या निराशा की स्थिति में
7. उसकी हताशा का कारण क्या था ?
जीवन की समस्याएँ
8. कवि क्या जानते थे ?
व्यक्ति की हताशा को
9. व्यक्ति को जानने का असली आधार क्या है ?
हताशा को जानना
10. कवि की राय में व्यक्ति को कैसे जानना है ?
उसकी हताशा से
11. कवि हाथ बढाने का कारण क्या था ?
कवि व्यक्ति की हताशा को जानता था ।
12. कवि हताश व्यक्ति के पास क्यों गया ?
क्योंकि कवि उसकी हताश को जानता था ।
13. व्यक्ति की हालत समझकर कवि ने क्या किया ?
कवि ने उस व्यक्ति के पास गया और सहायता करने केलिए उसकी ओर हाथ बढाया ।
14. कवि ने उस व्यक्ति के सामने क्यों हाथ बढाया ?
व्यक्ति की समस्या पहचानकर उसकी सहायता करने केलिए
15.‘ मैंने हाथ बढाया ’- का तात्पर्य क्या है ?
मैंने सहायता की ।
16. हताश व्यक्ति ने कवि का हाथ क्यों पकडा ?
क्योंकि वह कवि के हाथ बढाने को जानता था ।
17. कवि ने हाथ बढाया तो उस व्यक्ति ने क्या किया ?
व्यक्ति ने कवि का हाथ पकडा और उनके साथ चलने लगा ।
18. ‘ मेरा हाथ पकडकर वह खडा हुआ ।’- यहाँ ‘ **वह** ’ कौन है ?
अपरिचित/ हताश व्यक्ति
19. ‘ हम दोनों साथ चले’- कौन-कौन साथ चले ?
कवि और हताश व्यक्ति
20. ‘ वे दोनों साथ चले । ’- क्यों ?
क्योंकि दोनों साथ चलने को जानता था ।
21. ‘ व्यक्ति को मैं नहीं जानता था ’- इससे कवि क्या कहना चाहते हैं ?
हमें किसीको वैयक्तिगत (व्यक्तिगत) रूप से यानी उसके नाम, पता, उम्र, ओहदा, जाति आदि से जानना नहीं चाहिए ।
22. ‘ मैं उसकी हताशा को जानता था ’- इससे कवि क्या कहना चाहते हैं ?
हमें किसीको उसकी हताशा, दुख-दर्द, विवशता, समस्या, आवश्यकता आदि से जानना चाहिए ।
23. कवि क्या जानते थे और क्या नहीं जानते थे ?
कवि व्यक्ति की हताशा, निराशा, असहायता या संकट को जानते थे, उसके नाम, पता, उम्र, ओहदा या जाति नहीं जानते थे ।
24. कविता किसकी याद दिलाती है ?
मनुष्य को मनुष्य की तरह जानने की

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCR145 ph- 9567224545

25. कविता के अनुसार मनुष्य को किस तरह जानना चाहिए ?
मनुष्य की तरह
26. मुसीबत में पडे लोगों को किसकी ज़रूरत है ?
हमारी मदद की
27. कवि के अनुसार हताश व्यक्ति अपनेलिए क्यों अपरिचित नहीं है ?
क्योंकि उस व्यक्ति की मानसिक स्थिति को वे समझ सकते थे।
28. कविता का केंद्रीय भाव क्या है ?
मनुष्यता यानी इनसानियत मानवीय संबंधों का आधार है।
29. कविता में कवि किस शब्द के रूढिग्रस्त अर्थ को बदल देते हैं ?
जानना शब्द के
30. कविता में लोकगीत की स्थायी की तरह किन-किन शब्दों का प्रयोग हुआ है ?
नहीं जानना और जानना
31. कविता में कवि का कौन सा मनोभाव प्रकट है ?
मनुष्य में मानवीय संवेदना का या मनुष्यता का बोध होना अनिवार्य है।
32. कविता का संदेश क्या है ?
दो मनुष्यों के बीच मनुष्यता का अहसास यानी मानवीय संवेदना होना ज़रूरी है, जानकारियाँ ज़रूरी नहीं हैं।

33. ' अपरिचित होने पर भी कवि ने हताश व्यक्ति की सहायता की।'- इससे क्या संदेश मिलता है ?
किसी व्यक्ति की सहायता करने केलिए उसको व्यक्तिगत रूप से जानने की ज़रूरत नहीं है। उसकी हताशा, दुख-दर्द, विवशता, समस्या, आवश्यकता आदि को पहचानना ही असली जानना है। दो मनुष्यों के बीच मानवीय संवेदना चाहिए।

34. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ समकालीन हिंदी साहित्य के विख्यात कवि श्री. विनोद कुमार शुक्ल की सुंदर कविता हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था से ली गई हैं। इस कविता में कवि जानना शब्द की हमारी जानी पहचानी रूढी को तोड देते हैं।

कवि कहते हैं कि सडक पर हताशा से बैठे एक अपरिचित व्यक्ति को देखते ही कवि उसकी समस्या को जल्दी पहचान लेते हैं। इसलिए उसकी सहायता करने केलिए उसकी ओर हाथ बढाते हैं। कवि के हाथ पकडकर वह खडा हुआ। कवि को वह नहीं जानता था, पर कवि के हाथ बढाने को जानता था। दोनों साथ-साथ चले। यानी कवि व्यक्ति को जानने के बदले उसकी समस्या को पहचाने। कवि का कहना है कि अकसर हम दूसरों को उनके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति आदि के द्वारा जानते हैं। लेकिन असल में किसीको जानना है तो उसकी हताशा,निराशा, असहायता या संकट को जानना ही काफी होगा। किसीको व्यक्तिगत रूप से जानना और उसकी हताशा, दुख-दर्द, विवशता, समस्या, आवश्यकता आदि से जानना दोनों अलग है। मनुष्य की समस्या को पहचानने केलिए उसको वैयक्तिगत (व्यक्तिगत) रूप से जानने की ज़रूरत नहीं है। सडक पर घायल पडे व्यक्ति को देखना पडे तो हमें समझना चाहिए कि वह व्यक्ति मुसीबत में है और उसे हमारी मदद की आवश्यकता है। यहाँ कवि मनुष्य को मनुष्य की तरह जानने की याद दिलाती है। कविता का संदेश है कि मनुष्यों के बीच मानवीय संवेदना का होना अनिवार्य है, जानकारियाँ नहीं।

जानना शब्द को एक विशेष अर्थ प्रस्तुत करनेवाली इस कविता की प्रासंगिकता सार्वकालिक है। कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है। गद्य में लिखी हुई इस कविता में गीतात्मकता का बोध खूब मिलता है। यह कविता कोई लोकगीत जैसा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती है। जानता था और नहीं जानता था का प्रयोग अधिक आकर्षक बना है।

35. कविता की प्रासंगिकता पर टिप्पणी

कविता के अनुसार कवि विनोद कुमार शुक्ल ने सडक पर घायल पडे व्यक्ति की, अपरिचित होने पर भी उसकी हताशा पहचानकर उसकी मदद की। व्यक्ति को पहचानने केलिए कवि को उसके व्यक्तिगत जानकारी की आवश्यकता नहीं थी। कवि व्यक्ति को सिर्फ उसकी हताशा, दुख-दर्द, विवशता, समस्या, आवश्यकता आदि से जानने की कोशिश की। लेकिन वर्तमान ज़माने के लोग ऐसा नहीं है। उनमें मनुष्यता देखने को भी नहीं मिलता। सभी को अपनी-अपनी बातें हैं। सामाजिक जीवन में एक दूसरे के बीच प्यार, दोस्ती, सहानुभुति जैसी भावनाओं का होना ज़रूरी है। यदि किसी व्यक्ति को, चाहे अपरिचित हो आवश्यकता पडने पर सहायता देना ही जानना शब्द का सही अर्थ है। सडक पर घायल पडे एक व्यक्ति को देखना पडे तो हमें समझना चाहिए कि वह व्यक्ति मुसीबत में है और उसे हमारी मदद की ज़रूरत है। कवि के अनुसार मनुष्यों के बीच मानवीय संवेदना का होना अनिवार्य है, जानकारियाँ नहीं। जानना शब्द की हमारी जानी-पहचानी रूढी पूरी तरह बदल देनेवाली यह कविता मनुष्यत्व रहित इस ज़माने में बिलकुल प्रासंगिक है।

36. टिप्पणी - व्यक्ति को जानने के संबंध में कवि के मत पर

श्री. विनोद कुमार शुक्ल द्वारा लिखित हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था नामक कविता में प्रस्तुत प्रसंग आता है। कविता द्वारा कवि ने जानना शब्द के रूढीग्रस्त अर्थ को पूरी तरह से बदल दिया है। कवि का कहना है कि अकसर हम दूसरों को उनके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति आदि के द्वारा जानते हैं। लेकिन असल में किसीको जानना है तो उसकी हताशा,निराशा, असहायता या संकट को जानना ही काफी होगा। किसीको व्यक्तिगत रूप से जानना और उसकी हताशा, दुख-दर्द, विवशता, समस्या, आवश्यकता आदि से जानना दोनों अलग है। मनुष्य की समस्या को पहचानने केलिए उसको वैयक्तिगत (व्यक्तिगत) रूप से जानने की ज़रूरत नहीं है। सडक पर घायल पडे व्यक्ति को देखना पडे तो हमें समझना चाहिए कि वह व्यक्ति मुसीबत में है और उसे हमारी मदद की आवश्यकता है। यहाँ कवि मनुष्य को मनुष्य की तरह जानने की याद दिलाती है। कविता का संदेश है कि मनुष्यों के बीच मानवीय संवेदना का होना अनिवार्य है, जानकारियाँ नहीं।

37. टिप्पणी – समाज में हताशा से जीवन बितानेवालों को साथ लेना है ।

समाज में सभी सदस्य एक समान नहीं । यहाँ खुशी से जीवन बितानेवाले और हताशा से जीवन बितानेवाले हैं । हमें व्यक्तियों के नाम, जाति आदि के बारे में नहीं सोचना है । एक व्यक्ति को हताश देखें तो उसकी सहायता करने का मन होना है । हाथ बढाकर उसकी हताशा को दूर करना है ।

38. हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था कविता के आधार पर कवि विनोद कुमार शुक्ल की डायरी तैयार करें ।

तारीख : ....

आज मैं दुकान की ओर चल रहा था । तब एक जगह पर एक वयक्ति बैठते हुए देखा । वह निराश दिख पडा । उसे मैं नहीं जानता था । मैं उसके पास गया । मैंने उसकी ओर हाथ बढाया । वह मेरा हाथ पकडकर मेरे साथ चला । हम इसके पहले कभी देखा भी नहीं था । किसी की हताशा जानने केलिए उसके नाम, पता, उम्र, ओहदा, जाति आदि जानने की आवश्यकता नहीं । मेरा यह काम से उसको आश्वासन हुआ होगा ।

39. पत्र - कविता के आधार पर अपने मित्र के नाम कवि विनोद कुमार शुक्ल का

स्थान : ....
तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारे पिछले पत्र के जवाब में अभी तक लिख न सका । माफ करो यार ।

आज एक विशेष बात हुई । आज मैं दुकान की ओर चल रहा था । तब एक जगह पर एक वयक्ति बैठते हुए देखा । वह निराश दिख पडा । उसे मैं नहीं जानता था । मैं उसके पास गया । मैंने उसकी ओर हाथ बढाया । वह मेरा हाथ पकडकर मेरे साथ चला । हम इसके पहले कभी देखा भी नहीं था । किसी की हताशा जानने केलिए उसके नाम, पता, उम्र, ओहदा, जाति आदि जानने की आवश्यकता नहीं । मेरा यह काम से उसको आश्वासन हुआ होगा ।

तुम्हारे पिताजी और माताजी को मेरा प्रणाम कहना । छोटी बहन को मेरा प्यार । जवाब की प्रतीक्षा में,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

40. कवि ने रास्ते पर एक अपरिचित व्यक्ति को देखा । वह निराश था । कवि ने उस व्यक्ति के पास जाकर अपना हाथ बढाया । प्रस्तुत प्रसंग पर कवि और अपरिचित व्यक्ति के बीच होनेवाले संभावित वार्तालाप तैयार करें ।

कवि - (हाथ बढाकर) आप उठिए ।

व्यक्ति – क्या, आप मुझे जानते हैं ?

कवि - बिलकुल नहीं ।

व्यक्ति – फिर क्यों मुझे उठाते हैं ।

कवि - आप निराश हैं, यह मैं जानता हूँ ।

व्यक्ति – यह आपको कैसे समझ गया ?

कवि - मुझे भी पहले निराशा का अनुभव हुआ था । इसलिए आपको देखते ही मुझे मालूम हो गया ।

व्यक्ति – आपका यह स्वभाव मुझे बहुत प्रभावित किया ।

कवि - क्या, हम कुछ दूर चलें ?

व्यक्ति – ठीक है, जी ।

41. कविता के आधार पर संदेशात्मक पोस्टर तैयार करें ।

एक व्यक्ति की
हताशा
दूर करने केलिए
उसको जानने की आवश्यकता नहीं है ।
असहाय व्यक्तियों की हताशा दूर करें ...
उनको आस्वासन दें ।
यह हमारा कर्तव्य है ।

2. हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था PART - 2 (टिप्पणी)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. रोक देना – बंद करना 2. बयान करना – विवरण देना 3. मनुष्य को मनुष्य की तरह जानना – सहानुभूति का भाव अपनाना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. कविता के टिप्पणीकार कौन है ?
   नरेश सक्सेना
2. शुक्ल जी की कविता की विशेषताएँ क्या-क्या हैं ? / विनोद कुमार शुक्ल किस बात केलिए प्रसिद्ध है ?
   अपनी मौलिकता और भाषा की अनगढता
3. ‘ स्थायी ’ किसे कहते हैं ?
   लोकगीतों में बार-बार आनेवाले शब्दों को स्थायी कहते हैं ।
4. किसीको जानने केलिए हमें क्या करना चाहिए ?
   हमें उसकी हताशा, निराशा, असहायता या उसके संकट को जानना चाहिए ।
5. ‘ जानना ‘ शब्द का परंपरागत अर्थ यानी हमारी जानी-पहचानी रूढी क्या है ?
   व्यक्ति को उसके नाम, पते, उम्र, ओहदे या जाति से जानना ।
6. ‘ जानने ’ का असली आधार क्या है ?
   व्यक्ति को उसकी हताशा से जानना
7. कवि के मत में व्यक्ति को जानने का मतलब है ?
   उसकी हताशा से जानना
8. सडक पर घायल पडे अपरिचित व्यक्ति को देखकर हमें क्या करना चाहिए ?
   उसकी मदद करनी चाहिए ।
9. घायल पडे व्यक्ति के प्रति हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए ? क्यों ?
   सहानुभूतिपूर्ण । समय पर मदद करने से ही वह बच जाएगा ।
10. यहाँ ‘ मदद की ज़रूरत ’- का मतलब क्या है ?
    सांत्वना देकर अस्पताल पहुँचाना
11. हमें किन-किन व्यक्तियों की मदद करनी चाहिए ?
    हताश, असहाय और संकट में पडे
12. लेखक की राय में कविता का शिल्प पक्ष किस प्रकार है ?
    एकदम बारीक
13. कविता की शिल्प पक्ष में क्या आता है ?
    गीतात्मकता और भाषा प्रयोग
14. कविता पर टिप्पणी लिखते समय हमें किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिए ?
    कवि और कविता का परिचय, कविता का आशय, भाषापरक विशेषताएँ और कविता की प्रासंगिकता पर अपना विचार ।
15. ‘ जानना ‘ शब्द की लेखक की व्याख्या से आप कहाँ तक सहमत हैं ?
    जानना शब्द की लेखक की व्याख्या से मैं सहमत हूँ । अकसर हम दूसरों को उसके नाम, पते, उम्र, ओहदे या जाति से ही जानते हैं । लेकिन सच में किसीको जानना है तो उसके दर्द और एहसास को समझना चाहिए । उसकी हताशा, असहायता, दुख और कठिनाई को जाने बिना जानना कभी पूर्ण नहीं होता ।
16. कविता के शिल्प पक्ष पर लेखक के क्या –क्या निरीक्षण हैं ?
    लेखक की राय में कविता का शिल्प पक्ष एकदम बारीक है । गद्य में लिखी हुई इस कविता में लिरिकल या गीतात्मकता का बोध भी खूब मिलता है । यह कविता कोई लोकगीत या गज़ल जैसा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती है । ‘ जानता था ’ और ‘ नहीं जानता था ’ का प्रयोग अधिक आकर्षक बना है ।

17. टिप्पणी – जानना शब्द की लेखक की व्याख्या

जानना शब्द की लेखक की व्याख्या से मैं सहमत हूँ । यहाँ लेखक ने जानना शब्द की हमारी उस जानी-पहचानी रूढी को तोड दिया है, जो व्यक्ति के नाम, पते, उम्र, ओहदे या जाति से जानने को जोडती है । प्रस्तुत टिप्पणी में लेखक ने जानना शब्द को नए ढंग से परिभाषित किया है । इस व्याख्या के पीछे लेखक का उद्देश्य व्यक्ति की आंतरिकता को जानने से है । जैसे अगर कोई व्यक्ति सडक पर घायल अवस्था में पडा है, तो हमें मदद करनी चाहिए । क्योंकि दो मनुष्यों के बीच लेखक ने मनुष्यता अहसास यानी मानवीय संवेदना का होना ज़रूरी माना है – जानकारियाँ का नहीं । किसी व्यक्ति की मुसीबत में सहायता करना चाहिए न कि जब हम उसे जानते हैं तभी उसकी मदद करें ।

18. टिप्पणी – सडक पर घायल पडे व्यक्ति को हम क्या-क्या सहायताएँ कर सकते हैं ।

सडक दुर्घटनाओं में बहुत लोग घायल पड जाते हैं । आज के ज़माने में घायल व्यक्तियों को बचाने में लोग हिचकते हैं । कुछ लोग उसे देखे बिना चला जाता है तो कुछ उसे एक शो की तरह देखता रहता है तो और कुछ उसकी फोटो खीचकर ज़्यादा लैक प्राप्त करने की कोशिश में लगे रहते हैं । यह तो कितनी बुरी बात है । उचित समय पर उसे अस्पताल पहुँचाना मनुष्यता का लक्षण है । घायल पडे व्यक्ति कभी किसी के घर की रोशनी होगी । अगर उसकी रक्षा न की जाए तो उस घर में अंधेरा छा जाएगा । एक और बात है आज उस व्यक्ति को हुआ हादसा अपने आपको या अपने परिवार में भी होने की संभावना है । इसलिए घायल व्यक्तियों को बचाने केलिए उचित कारवाई करना मनुष्य अपना कर्तव्य समझना चाहिए ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCR145 ph- 9567224545

19. रपट - सडक दुर्घटना में एक व्यक्ति घायल पडा । किसीने उसकी सहायता नहीं की । बहुत समय तक वह सडक पर ही पडा रहा ।

घायल आदमी पडे रहे लंबी देर सडक पर

स्थान : ------- कल शाम को किसी अज्ञात गाडी के टकराने से घायल हुए एक आदमी बहुत समय सडक के किनारे ही पडा रहा । उसके शरीर से खून बह रहा था । उसका एक हाथ टूट गया था । सिर पर भी चोट लग गई थी । उसकी हालत बहुत नाजुक थी । बहुत लोग उसके पास से गुज़रे । पर किसीने उसकी सहायता करने की कोशिश नहीं की । कुछ लोग उसे देखे बिना चला गया तो कुछ उसे एक शो की तरह देखता रहा तो और कुछ उसकी फोटो खीचकर ज़्यादा लैक प्राप्त करने की कोशिश में लगे रहे । भाग्य से अंत में एक बूढा आदमी आकर उसे अस्पताल पहुँचाया । उनके अवसरोचित हस्तक्षेप से उसकी जान बच गई । इससे पता चलता है कि आज के ज़माने के लोगों में मनुष्यता बहुत कम देखने को मिलते हैं । वे अपने–अपने बारे में ही सोचते हैं । दूसरों की मदद करने में वे हिचकते हैं । यह तो बहुत खतरनाक स्थिति है ।

17. टिप्पणी- मनुष्य को मनुष्य की तरह जानना है

समकालीन हिंदी कवि विनोद कुमार शुक्ल की हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था कविता पर नरेश सक्सेना लिखी टिप्पणी में जानना शब्द की एक विशेष अर्थ प्रस्तुत किया है । यह कविता जानने की हमारी जानी पहचानी रूढी को तोड देते हैं । मनुष्य की समस्या को पहचानने केलिए उसको व्यक्तिगत रूप से जानने की ज़रूरत नहीं । किसीकी मदद करने केलिए उसकी दुख –दर्द और एहसास को समझना ही उचित होगा । यानी एक व्यक्ति को जानने केलिए उसके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति अदि की ज़रूरत नहीं । उसकी हताशा, निराशा, असहायता या उसके संकट को जानना ही सच्चा जानना है । मनुष्य को मनुष्य की तरह जानना चाहिए । सडक पर घायल पडे या मुसीबत में पडे अपरिचित व्यक्ति को देखकर उसकी मदद करना सच्चे मनुष्य का दायित्व है । व्यक्ति को जानने के बदले उसकी आवश्यकता या समस्या पहचानकर उसे ज़िंदगी की ओर वापस ले आना ही असली जानना है । अर्थात दो मनुष्यों के बीच मनुष्यता का अहसास यानी मानवीय संवेदना होना ज़रूरी है, जानकारियाँ ज़रूरी नहीं हैं ।

18. टिप्पणी – जीवन में मानवीय मूल्य का महत्व

हरेक व्यक्ति के जीवन में मूल्यों का अत्यधिक महत्व है । हमारा व्यक्तित्व और चरित्र हमारे द्वारा बनाए गए मूल्यों के आधार पर बनता है । अच्छे मूल्य हमें समाज में दूसरों की ज़रूरतों के प्रति मानवीय और संवेदनशील बनाते हैं । मूल्य मनुष्य को मनुष्य बनाते हैं , इसके बिना एक आदमी जानवर से कम नहीं होगा । जीवन की समस्याओं से बचने में मानवीय मूल्य आम जनता की मदद करती है । हमें दूसरों की परेशानियाँ जानकर उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए । जो विपत्ति के समय दूसरों की सहायता करता है , वही सच्चा मानव है । दूसरों की परेशानियों को हमें अपनी परेशानियाँ जैसा मानना चाहिए । हमें सहजीवियों के साथ करुणा एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार करना चाहिए । दूसरों केलिए अपने जीवन तथा जीवन की सुविधाएँ तक त्यागनेवाले बहुत लोग आज भी हमारे ज़माने में रहते हैं । ऐसे लोग अमर बन जाते हैं । हम सब परस्पर सहायता करनेवाला हो तो समाज के हरेक प्यार –भरे जीवन बिता सकेंगे । संक्षेप में हम सभी को अच्छे मूल्यों को अपनाना चाहिए और आनेवाली पीढियों को भी इसका महत्व सिखाना चाहिए।

20. टिप्पणी – मनुष्य में मानवीय संवेदना का होना अनिवार्य है

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । मनुष्य में मानवीय संवेदना का होना अनिवार्य है । किसी व्यक्ति को जानने केलिए उसके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति आदि को जानने की ज़रूरत नहीं है । उसकी हताशा, निराशा, असहायता, संकट आदि को जानना ही काफी होगा । यदि किसी व्यक्ति को इन बातों से हम नहीं जानते तो उस व्यक्ति के बारे में हम कुछ नहीं जानते । दुख-दर्द और एहसास सबके एक जैसे होते हैं । उसे समझने केलिए किसीको वैयक्तिक रूप से जानने की ज़रूरत नहीं । सडक पर घायल पडे व्यक्ति को देखना पडे तो हमें समझना चाहिए कि वह व्यक्ति मुसीबत में है और उसे हमारी मदद की आवश्यकता है । दो मनुष्यों के बीच लेखक ने मनुष्यता का अहसास यानी मानवीय संवेदना का होना ज़रूरी माना है, जानकिरियों का नहीं । किसी व्यक्ति की मुसीबत में सहायता करना चाहिए न कि जब हम उसे जानते हैं तभी उसकी मदद करें ।

21. लेख- अवयव/ अंगदान का महत्व

अवयवदान जीवन का महादान है । हम 13 अगस्त को विश्व अवयवदान दिवस मनाते हैं । मरने के बाद और जीते जी कुछ लोग अपने अवयवों को दान करने केलिए तैयार होते हैं । हमें अपने अवयवों को दान करने से अनेकों के जीवन बचा सकते हैं । आँख, किड्नी, हृदय, फेफडा, जिगर आदि शरीर अंग हम दान कर सकते हैं । इससे हम कुछ लोगों के अंधकार में डूबी ज़िंदगी को प्रकाशमय बना सकते हैं । रक्तदान से किसी ज़रूरतमंद की जान हम बचा सकते हैं । कुछ लोग मृत्यु के बाद अपने शरीर मेडिकल विद्यार्थियों को देने का निश्चय करते हैं । ऐसे लोग मरने के बाद भी समाज केलिए काम आते हैं । इसलिए हम भी अंगदान में शामिल हो जाएँ और कोई दूसरे की ज़िंदगी को बचाएँ ।

22. पोस्टर (संदेश) points – अंगदान का महत्व

1. अंगदान जीवन दान ... अंगदान जीवन में मुस्कान ।	2. अंगदान सर्वश्रेष्ठ दान ... स्वर्ग में स्थान मिलने को करो अंगदान ।
3. अंधविश्वास को छोडिए ... अंगदान में सहयोग दीजिए ।	4. मृत्यु के बाद दीजिए दूसरों को प्राण ... आगे बढिए और कीजिए अंगदान ।
5. करो दान किड्नी, नेत्र, हृदय, जिगर और देह की ... अपनी मृत्यु के बाद किसीको जीवित रहने को मदद करें ।	6. जीते जीते रक्तदान जाते जाते अंगदान और जाने के बाद नेत्रदान और देहदान।

विश्व अंगदान दिवस – अगस्त 13

23. पोस्टर (points)संदेश – सडक सुरक्षा

1. यातायात की सुरक्षा नियमों में सख्ती
   तभी मिलेगी, दुर्घटनाओं से मुक्ति
2. सुरक्षित जब रहेंगे आप
   तभी दे पाएँगे अपनो के साथ
3. दुपहिये वाहन पर तीन सवारी न बिठाएँ
   गाडी चलाते वक्त ज़्यादा मस्ती करना खतरा है।
4. शराब पीकर गाडी न चलाएँ
   गाडी चलाते वक्त मोबाइल, धूम्रपान आदि न कराएँ
5. सडक पर वाहन धीमा चलाये, तेज़ रफ्तार से नहीं
6. चौपहिया वाहन चालक सदैव सीट बेल्ट पहने
   दुपहिया वाहन चालक हेलमेट
7. सही दिशा से ओवरटेक करें
   हरेक जीवन अनमोल है
8. रेलवे पटरियों को पार करते वक्त रेलवे क्रॉसिंग का उपयोग करें
9. 18 साल के कम उम्र के बच्चे गाडी चलाना कानूनी जुर्म है।

24. पोस्टर (points)संदेश – सडक पर घायल पडे लोगों की जान बचाना मनुष्यता है

1. घायलों को जल्दी जल्दी पहुँचाएँ अस्पताल
   रक्त बहाकर उन्हें वहाँ पडने न दें
2. सडक पर घायल पडे को बचाना मनुष्यता है
   हरेक व्यक्ति की जान कीमत है
3. घायल पडे लोगों को देखे बिना गुज़रना नहीं चाहिए
   मोबाइल पर फोटो खींचने पर नहीं,
   उसकी रक्षा करने में हमारा ध्यान होना चाहिए।
4. घायल पडे की जान बचाएँ
   उनके घर का प्रकाश मिटने न दें
5. ध्यान रखें, उसे देखे बिना जाने वाले आपको ही
   यही हालत होने की संभावना है
6. घायलों का फोटो खींचकर लैक मिलने में नहीं
   उसपर मनुष्यता दिखाने में होना है हमारा ध्यान

25. पोस्टर – रक्तदान का महत्व

रक्तदान जीवनदान

1.रक्तदान को बनाइए अभियान,
   रक्तदान करके बचाइए जान।
2. रक्त के मोल को जानो,
   उसमें छुपी जिंदगी को पहचानो।
3. रक्तदान कीजिए
   राष्ट्रीय एकात्मता बढाइए।
4. आपके रक्तदान के कुछ मिनट का मतलब है
   किसी ओर केलिए पूरा जीवनकाल।
5. रक्तदान इंसानियत की पहचान,
   आओ करो रक्तदान।
6. रक्तदान अपनाओ
   सबका जीवन बचाओ।
7. रक्तदान करने से नहीं होती शरीर में कमज़ोरी,
   रक्तदान करने में कभी मत करना सोची समझी।
8. मानवता के हित में काम कीजिए
   रक्तदान में भाग लीजिए।

विश्व रक्तदान दिवस – जून 14

26. पोस्टर (points)संदेश – नेत्रदान महादान

1. जीवन का अनमोल वरदान
   नेत्रहीन को नेत्रदान
2. नेत्रदान करेंगे
   दुनिया फिर से देखेंगे
3. नेत्रदान का संकल्प लें
   ताकि किसी का अंधेरा जीवन उजाले से भर जाए
4. जाने से पहले किसीको दे दो जीवनदान,
   अमर रहना है तो कर दो नेत्रदान।
5. नेत्रदान से बडा कोई दान नहीं है,
   जिससे जीव निर्जीव होकर भी दूसरे के काम आ सकता है।
6. नेत्रदान कीजिए,
   मानवता के हित में काम कीजिए।
7. आँखों को कभी मिटने न दें,
   जीवन के पश्चात भी इन्हें जीने दे।
8. नेत्रदान मरके भी ज़िंदा रहने का
   अनमोल वरदान है।

जानना, मालूम होना – का प्रयोग

(क) <u>जानना</u> <u>അറിയുക, മനസ്സിലാക്കുക</u>

एक वाक्य में जानना क्रिया का प्रयोग करते समय कर्ता के साथ कोई विभक्ति नहीं जोडते हैं। तब कर्ता को प्रधानता है। कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार जानना क्रिया में परिवर्तन आते हैं।

(ख) <u>मालूम होना</u> <u>മനസ്സിലാവുക</u>

एक वाक्य में मालूम होना क्रिया का प्रयोग करते समय कर्ता के साथ को विभक्ति जोडते हैं। तब कर्ता को प्रधानता नहीं है।

जैसे – मैं पाठ जानता हूँ।	मुझे पाठ मालूम है।
तुम भाषण जानते हो।	तुमको भाषण मालूम है।
हम अंग्रेज़ी जानते हैं।	हमको अंग्रेज़ी मालूम है।
वह रास्ता जानता है।	उसको रास्ता मालूम है।
लडका कहानी जानता है।	लडके को कहानी मालूम है।
लडके कहानी जानते हैं।	लडकों को कहानी मालूम है।
लडकी कहानी जानती है।	लडकी को कहानी मालूम है।
लडकियाँ कहानी जानती हैं।	लडकियों को कहानी मालूम है।

3. टूटा पहिया PART -1 (मैं रथ का ----- घिर जाए)

1. समानार्थी शब्द लिखें।

1. पहिया - चक्र 2. चुनौती - ललकार 3. टूटा - तोडा/ छिन्न भिन्न 4. दुरूह - समझने में कठिन/ रहस्यमय 5. व्यूह - श्रेणी
6. सेना - सैन्य 7. अक्षौहिणी सेना – चतुरंगिणी सेना 8. दुस्साहसी - अति साहसी/ अनुचित रूप में धैर्य दिखानेवाला

2. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1.मत फेंकना – नहीं छोडना/ उपेक्षा नहीं करना 2. चुनौती देना – ललकार देना 3. घिर जाना – फँस जाना

3. विशेषण शब्द लिखें ।

1. दुरूह चक्रव्यूह - दुरूह 2. दुस्साहसी अभिमन्यु - दुस्साहसी 3. अक्षौहिणी सेना – अक्षौहिणी 4. टूटा हुआ पहिया - टूटा हुआ

4. किसका प्रतीक है ?

1. टूटा पहिया – उपेक्षित लघु मानव/ टूटे हुए मानवीय मूल्य/ उपेक्षित सामान्य मनुष्य/ आम जनता/ शोषितों की आवाज़
2. चक्रव्यूह – जीवन की समस्याएँ / जीवन की विषमताएँ/ वर्तमान संसार / जटिल समस्या
3. अभिमन्यु – शोषण से पीडित आम जनता/ साहसी युवा पीढी/ अधर्म का विरोधी/ चुनौतियों का सामना करनेवाला
4. अक्षौहिणी सेना – अधर्मियों का संघ/ शोषण की व्यवस्था
5. रथ – जीवन

5. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. कविता में **मैं** का प्रयोग किस केलिए किया गया है ?
   टूटा पहिया
2. ‘ लेकिन मुझे पेंको मत ’ यह किसकी प्रार्थना है ?
   टूटे पहिये की
3. हमें किसकी उपेक्षा मत करनी चाहिए ?
   मानवीय मूल्य रूपी टूटे पहिए की
4. कवि ने किसको मत फेंकने को कहा है ?
   टूटे पहिये को
5. कवि के मत में अक्षौहिणी सेनाओं को कौन चुनौती देगा ?
   अभिमन्यु
6. चक्रव्यूह के अंदर घुसकर युद्ध करनेवाला वीर कौन था ?
   अभिमन्यु
7. टूटा पहिया अभिमन्यु केलिए कब उपयोगी सिद्ध हुआ ?
   युद्ध के समय
8. चक्रव्यूह में कौन फँस गया था?
   अभिमन्यु
9. चक्रव्यूह कैसा है ?
   दुरूह
10. अभिमन्यु किसको चुनौती दे रहा था ?
    अक्षौहिणी सेना को
11. अभिमन्यु किसके पक्ष में था ?
    धर्म, न्याय और सत्य के पक्ष में
12. दुस्साहसी कौन है ?
    अभिमन्यु
13. टूटा पहिया किसका सहारा बन सकता है?
    किसी दुस्साहसी अभिमन्यु का
14. कवि टूटा पहिये को तुच्छ क्यों नहीं समझते हैं ?
    वही रण में अभिमन्यु का शस्त्र बना था ।
15. कविता से कवि क्या संदेश देना चाहते हैं ?
    संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा नहीं करना चाहिए ।
16. ‘ टूटा पहिया ’ कविता में कवि ने किस शक्ति की ओर संकेत किया है ?
    टूटे पहिए के माध्यम से कवि ने उपेक्षित और लघु मानव की शक्ति की ओर संकेत किया है ।

SREEJITH R. KOVOOR VARKALA, SCR145 ph- 9567224545

17. टूटे पहिए से कवि क्या आशा करते हैं ?

आजकल समाज में असत्य और अन्याय का बोलाबाला है। इन असत्यों और अन्यायों के खिलाफ अगर कोई लडेगा तो कोई टूटा पहिया यानी लघु मानव ही उसका सहारा बने। यही कवि की आशा है।

18. अभिमन्यु को दुस्साहसी क्यों कहा गया है ?

अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु केवल चक्रव्यूह में घुसने की विद्या ही जानता था। लेकिन उससे बाहर निकलने का रास्ता उसे पता नहीं था। फिर भी बिना सोचे शत्रुओं की चुनौती स्वीकार करके चक्रव्यूह के अंदर प्रवेश करके युद्ध करने तैयार हुआ। इसलिए अभिमन्यु को दुस्साहसी कहा गया है।

19. कवि ने टूटा पहिए को मत फेंकने को क्यों कहा गया है ?

कवि के अनुसार जिस चीज़ को हम फालतू समझकर फेंक देते हैं,उसका कभी उपयोग करने का मौका आ सकता है। महाभारत युद्ध में महारथियों का मुकाबला करने में रथ के टूटे हुए पहिए का सहारा लिया था। उसी प्रकार शोषण से पीडित आम जनता केलिए शासक वर्ग के अधर्म और अत्याचार के खिलाफ मानवीय मूल्य रूपी यह टूटा पहिया काम आएगा।

20. कवितांश का आशय (मै रथ का टूटा हुआ पहिया .... अभिमन्यू आकर घिर जाए !)

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **' श्री . धर्मवीर भारती '** की कविता संग्रह **' सात गीत वर्ष '** से चुनी गई ' टूटा पहिया ' कविता से ली गई हैं। महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए।

कवि रथ का टूटा हुआ पहिया बताने के जैसे कहते हैं कि मैं भले ही रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ, किंतु मुझे अनुपयोगी मानकर मत फेंको। क्योंकि कौरवों से रचित दुरूह चक्रव्यूह में अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ दुस्साहस के साथ अभिमन्यु आकर घिर जाएगा। यानी जीवन की समस्याएँ रूपी चक्रव्यूह में शोषण की अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ कोई शोषित मनुष्य अभिमन्यु के समान आ जाए तो टूटा पहिया, टूटे मानवीय मूल्य ही उसका सहारा बन जाएगा। यहाँ टूटा पहिया मानवीय मूल्यों का,चक्रव्यूह जीवन की समस्याओं का और अभिमन्यु शोषण से पीडित आम जनता का प्रतीक है।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है। कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है।

21. टूटा पहिया कविता की प्रासंगिकता पर टिप्पणी लिखें।

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि धर्मवीर भारती की छोटी कविता है टूटा पहिया। प्रस्तुत कविता में रथ का टूटा हुआ पहिया हमें बताता है कि उसे बेकार समझकर मत फेंकना। दुरूह चक्रव्यूह रचकर कुरुक्षेत्र की युद्ध भूमि में महीरथियों को लडने केलिए तैयार होते देखकर उन्हें चुनौती देता हुआ अभिमन्यु आगे आया। इसी प्रकार हो सकता है कि हमारे समाज में अमर्ध की अक्षौहिणी सेनाओं से लडने के लिए सच्चाई के मार्ग पर टलनेवाला कोई नौजवान आए। ज़रूरत के अवसर पर अभिमन्यु टूटे पहिये का सहारा लेता है। उसीप्रकार सच्चाई की स्थापना के लिए हमारे सामने जो भी चीज़ आएगी उसे बेकार मत समझना। आज के समाज के शोषित जन को शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाने का आह्वान भी इसमें है।

विधिरूप –

जिस क्रिया से आज्ञा, अनुमति, प्रार्थना, प्रश्न, निषेध आदि का बोध होता है, उसे विधिरूप कहते हैं।

सूचना – निषेधार्थ में क्रियाधातु के आगे मत का प्रयोग करते हैं।

जैसे – तू वहाँ मत जा। तुम वहाँ मत जाओ। आप वहाँ मत जाइए।

तू	तुम	आप
വ്യഞ്ജനാന്ത്യം पढ	पढो	पढिए
സ്വരാന്ത്യം आ	आओ	आइए
നിയമം कर	അനുസരിക്കാത്തവ करो	कीजिए
दे	दो	दीजिए
ले	लो	लीजिए
पी	पिओ	पीजिए
जी	जिओ	जीइए
छू	छुओ	छूइए

3. टूटा पहिया PART – 2 (अपने पक्ष को ----- लोहा ले सकता हूँ)

1. समानार्थी शब्द लिखें।

1. असत्य -झूठ 2. महारथी - महान योद्धा 3. अकेली - एकाकी 4. आवाज़ - ध्वनि 5. निहत्थी - निरायुध/ शस्त्रहीन 6. हाथ - कर

2. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. कुचल देना – रौंद डालना / शत्रु का सर्वनाश कर देना 2. लोहा लेना – सामना करना / मुकाबला करना

3. विशेषण शब्द लिखें ।

1. बडे–बडे महारथी - बडे–बडे 2. निहत्थी आवाज़ - निहत्थी

4. किसका प्रतीक है ?

1. ब्रह्मास्त्र – शासक वर्ग द्वारा अधिकार और शक्ति का दुरुपयोग/ सर्वनाश/ महाशक्ति

2. महारथी लोग – असत्य और अधर्म / शोषक वर्ग / अन्याय लोग / ऊँचे अन्यायी वर्ग

5. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. कविता में किसका पक्ष असत्य का है ?
बडे बडे महारथी का (कौरवों का)

2. कविता में अकेली निहत्थी आवाज़ किसकी है ?
अभिमन्यु की

3. ‘ अकेली निहत्थी आवाज़ ’– यह किसके बारे में कहा गया है ?
अभिमन्यु के बारे में

4. ‘ अकेली निहत्थी आवाज़ ’ किसका विशेषण है ?
अभिमन्यु का (अन्याय के विरुद्ध लडनेवाले का)

5. कौन ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता है ?
टूटा पहिया

6. यहाँ निहत्थी आवाज़ को क्या करना चाहता है ?
ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहता है ।

7. अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहें । कौन-कौन ?
बडे-बडे महारथी

8. बडे-बडे महारथी क्या-क्या करना चाहते थे ?
वे अकेली निहत्थी आवाज़ को (निरायुध अभिमन्यु को) अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहते थे ।

9. ब्रह्मास्त्रों से लोहा लेने में किसने अभिमन्यु की मदद की ?
टूटा पहिया ने

10. महारथी किसको ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहते हैं ?
अकेली निहत्थी आवाज़ को

11. टूटा पहिया किनसे लोहा ले सकता है ?
ब्रह्मास्त्रों से

12. ‘ उसके हाथों में ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ ’– किसके हाथों में ?
अभिमन्यु के (अन्याय के विरुद्ध लडनेवाले के)

13. युद्ध में निरायुध अभिमन्यु को अचानक किसकी सहायता मिली ?
एक टूटे पहिए की

14. निरायुध होने पर अभिमन्यु ने किसे शस्त्र बनाकर शत्रुओं का सामना किया ?
टूटा पहिये को

15. ‘ अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी ’- यह किसके बारे में यह कहा गया है ?
महारथी के

16. ‘ सकता हूँ ’- क्रिया का सीधा संबंध किससे है ?
मैं

17. बडे-बडे महारथी क्या जानते थे ?
अपना पक्ष असत्य का है ।

18. टूटा पहिया ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता है । इससे आपने क्या समझा ?
शोषक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति के ज़रिए ब्रह्मास्त्र से अकेले निरायुध व्यक्ति की असहाय आवाज़ को कुचल देना चाहते हैं । अगर उसके शस्त्रहीन हाथों में रथ का पहिया आ जाए तो वह ब्रह्मास्त्र से लड सकता है, उसका सामना कर सकता है ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRI45 ph- 9567224545

19. अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी
बडे-बडे महारथी
अकेली निहत्थी आवाज को
अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहें ! - इन पंक्तियों के आशय पर चर्चा करें ।

अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी बडे बडे महारथियों ने अपने ब्रह्मास्त्रों से अभिमन्यु अकेली निहत्थी आवाज़ को कुचल डालना चाहा। शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति का दुरुपयोग करके आम जनता को कुचल डालना चाहता है ।

20. तब मैं
रथ का टूटा हुआ पहिया
उसके हाथों में
ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ ! - इन पंक्तियों में चर्चित पौराणिक संदर्भ वर्तमान परिवेश में कहाँ तक प्रासंगिक है ?

चक्रव्यूह में फँसे निरायुध अभिमन्यु ने रथ के टूटे हुए पहिए से शत्रुओं के ब्रह्मास्त्रों का लोहा ले सकता है । उसी प्रकार शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति के जरिए आम जनता पर अत्याचार करते समय इससे मुक्ति पाने केलिए उनको मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पडेगा ।

21. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **'श्री . धर्मवीर भारती'** की कविता संग्रह **'सात गीत वर्ष'** से चुनी गई 'टूटा पहिया' कविता से ली गई हैं । महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है । इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए ।

कवि रथ का टूटा हुआ पहिया बताने के जैसे कहते हैं कि अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी बडे बडे महारथियों ने अपने ब्रह्मास्त्रों से अभिमन्यु अकेली निहत्थी आवाज़ को कुचल डालना चाहा । उस वक्त अभिमन्यु ने अपने रथ के टूटे हुए पहिए को हथियार बनाकर ब्रह्मास्त्रों से लोहा लिया था । शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति का दुरुपयोग करके आम जनता को कुचल डालना चाहता है । ऐसी अवसर पर मैं, रथ का टूटा पहिया मानवीय मूल्य बनकर निरायुध के हाथ में आ जाता हूँ और ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ । यहाँ महारथी शोषक वर्ग का और ब्रह्मास्त्र शोषक के हाथ की महाशक्ति का प्रतीक है ।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है । कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है ।

22. टिप्पणी – तुच्छ-सी लगनेवाली वस्तु भी कभी काम आ सकती है ।

महाभारत युद्ध में चक्रव्यूह में फँसे निरायुध अभिमन्यु पर कौरवों ने आक्रमण किया । उस समय उसके विरुद्ध लडने में अभिमन्यु केलिए रथ का टूटा हुआ पहिया उपयोगी बना। उसी प्रकार वर्तमान समय में भी समाज कौरवों के जैसे ही अन्यायी और दुराचारी लोगों से भरा हुआ है, जो अपनी अधार्मिक शक्तियों के माध्यम से किसी अकेले समाज सेवी,जो उनके विरुद्ध आवाज़ उठाता है,उसको अपनी शक्तियों के दम पर अधर्म के माध्यम से समाप्त कर देते हैं । तब उसे अपने टूटे हुए मानव मूल्यों की आवश्यकता पडेगी । उस विपरीत परिस्थिति में वे टूटे हुए मानव मूल्य उसकेलिए लाभदायक होंगे । टूटा पहिया यहाँ टूटे हुए मानव मूल्यों का प्रतीक है । हमें किसी भी मूल्य और वस्तु को निस्सार, अनुपयोगी मानकर फेंकना नहीं चाहिए। क्योंकि पता नहीं कब समय बदले,परिस्थितियाँ विपरीत हो जाएँ और वह निस्सार वस्तु या मूल्य अपनेलिए सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध हो । तुच्छ-सी लगनेवाली वस्तु भी सांत्वना देने में समर्थ हो सकती है । जब दुनिया में मानव मूल्यों का नाश होता रहेगा, तो साधारण मनुष्य उन्हीं मानव मूल्यों को समेटकर समाज की भलाई केलिए कर्मनिरत रहेगा । मानवीय मूल्यों के संरक्षण से ही संसार की उन्नति होगी ।

23. युद्ध विरुद्ध पोस्टर तैयार करें ।

युद्ध छोडो ... सब मिलजुलकर रहो ...

1. युद्ध विनाशकारी है ।
   युद्ध छोडो शांति से रहो ।
2. युद्ध से किसीको कोई लाभ नहीं
   युद्ध सर्वनाश है उसको रोको ।
3. युद्ध देश को विकास की ओर नहीं,
   विनाश की ओर ले जाता है ।
4. युद्ध से दूर रहें ...
   मानवराशी को बचाएँ ।
5. बंदूक, तोप, अणुबम आदि का प्रयोग न होने दे ...
   मानव की धन-संपत्ति, घर, बंधुजन आदि का नाश न करने दे ।
6. युद्ध की भयानकता समझो
   आगे युद्ध न होने केलिए सब कोशिश करें ।

हिरोशिमा दिवस – अगस्त 6

24. टूटा पहिया हाशिए पर लगे लघु मानव की समस्या का भी वर्णन है । हाशिए पर लगे लोगों की रक्षा का संदेश देकर एक **पोस्टर** लिखें ।

1. इस दुनिया में हरेक वस्तु का अपना मूल्य है
   किसीको भी तुच्छ समझकर फेंकना बुरी बात है ।
2. लघु मानवों की संभावनाओं को भी पहचानें
   तुच्छ-सी लगनेवाली वस्तु भी सांत्वना देने में समर्थ ।
3. लघु मानवों की प्रतिष्ठा से समाज का कल्याण
   विपरीत परिस्थिति में यही अपनेलिए लाबकारी होंगे ।
4. कोई आदमी, चाहे वह लघुमानव हो, उसे हाशिए पर मत लगाए
   उसकी रक्षा हमारा ही दायित्व ।
5. कल ज़रूर वही हाशिए पर लगे लोग ही हमारेलिए काम आ सकता है
   इसलिए हाशिए पर लगे लघुमानव को भी उचित मान्यता दे ।

3. टूटा पहिया PART - 3 (इतिहासों की ----- आश्रय ले)

1. समानार्थी शब्द लिखें।

1. सहसा - अचानक 2. सच्चाई - सत्य 3. गति - संचार 4. आश्रय - सहारा 5. सामूहिक - एकत्रित

2. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. झूठी पड जाना – असत्य सिद्ध होना 2. आश्रय लेना – सहारा लेना

3. विशेषण शब्द लिखें ।

1. सामूहिक गति – सामूहिक

4. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. इतिहासों की सामूहिक गति सहसा झूठी पड जाने पर सच्चाई किसका आश्रय लेती है ?

टूटे हुए पहियों का

2. निहत्थे लोग किसका आश्रय ले सकते हैं ?

टूटे हुए पहियों का

3. किसकी सामूहिक गति अधर्म की ओर जाने की संभावना है ?

इतिहासों की

4. ‘ इतिहासों की सामूहिक गति ’– यहाँ गति शब्द का लिंग क्या है ?

स्त्रीलिंग

5. इतिहासों की सामूहिक गति की क्या होने की संभावना है ?

असत्य साबित होने की

6. ‘ इतिहासों की सामूहिक गति सहसा झूठी पड जाने पर ’– इन पंक्तियों का आशय है ------ ?

इतिहासों की गति झूठे मार्ग पर चलने लगती है ।

7. वर्तमान समय में सत्य की पुन स्थापना की लडाई में कौन सहायक बनेगा ?

मानवीय मूल्य

8. ‘ सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय लेगी ’– कब ?

इतिहासों की सामूहिक गति सहसा झूठी पड जाने पर

9. सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले ! – इससे आपने क्या समझा ?

आज के इस बदलते युग में भी इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोडकर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है । तब सत्य के पक्ष,आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पडेगा । इसलिए हमें टूटा पहिया रूपी मानवीय मूल्य की उपेक्षा नहीं करना चाहिए । मुसीबत के अवसर पर अभिमन्यु केलिए टूटा पहिया कैसे उपयोगी बना उसी प्रकार आम जनता केलिए मानवीय मूल्य काम आएगा ।

10. इतिहासों की सामूहिक गति
सहसा झूठी पड जाने पर
क्या जाने
सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले ! - इन पंक्तियों से कवि क्या बताना चाहते हैं ?

आज के इस बदलते युग में भी इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोडकर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है । तब सत्य के पक्ष, आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पडेगा । इसलिए हमें टूटा पहिया रूपी मानवीय मूल्य की उपेक्षा नहीं करना चाहिए। मुसीबत के अवसर पर अभिमन्यु केलिए टूटा पहिया कैसे उपयोगी बना उसी प्रकार आम जनता केलिए मानवीय मूल्य काम आएगा ।

11. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **‘ श्री . धर्मवीर भारती ’** की कविता संग्रह **‘ सात गीत वर्ष ’** से चुनी गई ‘ टूटा पहिया ’ कविता से ली गई हैं । महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है । इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए ।

कवि रथ का टूटा हुआ पहिया बताने के जैसे कहते हैं कि इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोडकर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है । उस समय सत्य के पक्ष, आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पडेगा । यानी समाज में शोषण और असमत्व बढते वक्त आम जनता को मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पडता है ।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है । कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCR145 ph- 9567224545

4. आई एम कलाम के बहाने PART -1

(गाँव के स्कूल में मेरा एक साथी था - मोरपाल । -------------------- रोज़ पंद्रह किलोमीटर बिना छलकाए लिए आता था ।)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. बाँछें खिल जाना – प्रसन्न होना/ खुशी से खिल जाना 2. अदला-बदली करना - लेन-देन करना/ विनिमय करना 3. लुक लुक के देखना – छिपकर देखना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. बचपन में लेखक का साथी कौन था ?
   मोरपाल
2. लेखक और मोरपाल के अंग्रेज़ी मास्टर का नाम क्या था ?
   तिवारी जी
3. मोरपाल से अंग्रेज़ी मास्टर ने कौन-सा सवाल किया ?
   लुक का मतलब और सही हिज्जे
4. मिहिर और मोरपाल कहाँ पर साथ-साथ बैठते थे ?
   क्लास की दरीपट्टी पर
5. क्लास की दरीपट्टी पर लेखक और मोरपाल की जगहें साथ थीं । क्यों ?
   नाम का पहला अक्षर मिलने की वजह से
6. खेलघंटी में मिहिर और मोरपाल के बीच का सौदा क्या था ?
   खेल घंटी में खाने की अदला-बदली करने का
7. क्या देखकर मोरपाल प्रसन्न हो जाता है ?
   मिहिर के खाने के डिब्बे में रखे राजमा देखकर
8. कौन पहली बार राजमा खा रहा था ?
   मोरपाल
9. किसकेलिए राजमा एक सामान्य-सी चीज़ है ?
   मिहिर केलिए
10. मोरपाल ने पहले कभी राजमा देखा भी नहीं था । कारण क्या होगा ?
   मोरपाल की गरीबी
11. राजमा-चावल किसको बहुत पसंद था ?
   मोरपाल को
12. किसको छाछ बहुत पसंद था ?
   मिहिर को
13. छाछ किसकी कमज़ोरी है ?
   मिहिर की
14. कौन छाछ लाता था ?
   मोरपाल
15. मोरपाल कैसे छाछ लाता था ?
   गाँव से पंद्रह किलोमीटर साइकिल चलाकर बिना ज़रा भी छलकाए लाता था ।
16. मोरपाल को घर से स्कूल तक कितने किलोमीटर साइकिल चलाना पडता था ?
   पंद्रह
17. मोरपाल कैसे स्कूल आता था ?
   गाँव से पंद्रह किलोमीटर साइकिल चलाकर
18. दोनों खाने की अदला-बदली कैसे करता था ?
   मिहिर लाया राजमा-चावल मोरपाल खाता था तो मोरपाल लाया छाछ मिहिर खाता था ।
19. मोरपाल का घर कहाँ पर है ?
   स्कूल से पंद्रह किलोमीटर के दूर के गाँव पर
20. माटसाब पूछने पर मोरपाल लुक का मतलब और सही हिज्जा अच्छी तरह से बता देता है । - यहाँ मोरपाल की कौन-सी विशेषता प्रकट है ?
   क्लास में उसकी सतर्कता तथा पढाई के प्रति उसकी रुचि
21. मोरपाल केलिए खास चीज़ थी राजमा । क्यों?
   अपनी गरीबी के कारण घर में राजमा खरीद नहीं सकता था । इसलिए उसे राजमा देखने या खाने का अवसर नहीं मिला था ।
22. मोरपाल खाने केलिए क्या लाता था ?
   छाछ
23. मिहिर खाने केलिए क्या लाता था ?
   राजमा - चावल

SREEJITH P, KUDOOR VARKALA, SCR145 ph- 9567224545

23.‘ हमारा सौदा था घंटी में खाने की अदला-बदली का ।‘- इस तरह की अदला बदली से हम क्या समझ पाते हैं ?

सच्ची मित्रता का मिसाल यहाँ हम देख सकते हैं । दोनों के बीच आपस में ऊँच-नीच या अमीर-गरीब का कोई भेद भाव नहीं था । इसलिए मोरपाल को पसंद राजमा-चावल लेखक लाकर देता था और लेखक को पसंद छाछ मोरपाल भी लाकर देता था ।

24. लघु लेख – मित्रता / दोस्ती

दोस्ती जीवन की सबसे कीमती उपहारों में से एक है । जिसकी ज़िंदगी में सच्चे दोस्त हैं, वह भाग्यशाली है । यह रिश्ता मनुष्य खुद बनता है । सच्चा मित्र मुश्किल हालतों में भी हमारे साथ खडा होता है । यह तो अनमोल धन के समान होता है । इसकी तुलना हम दुनिया की किसी और चीज़ से नहीं कर सकते । सच्ची मित्रता से एक साधारण मानव भी श्रेष्ठ और पूजनीय अनुभव है । अमीर- गरीब, छोटा-बडा आदि बातों में मित्रता का कोई स्थान नहीं है ।

25. टिप्पणी – मोरपाल और मिहिर की दोस्ती

बचपन में मोरपाल और मिहिर अच्छे दोस्त थे । गाँव के स्कूल में दोनों एक साथ पढते थे । क्लास की दरीपट्टी पर नाम का पहला अक्षर मिलने से दोनों की बैठने की जगहें साथ थीं । खेल घंटी में दोनों खाना अदला-बदली करके खाते थे । मोरपाल अपने घर से छाछ लाकर मिहिर को देता था और मिहिर अपने घर से राजमा-चावल लाकर मोरपाल को देता था । दोनों आपस में बहुत प्यार करते थे । पढाई में वे एक दूसरे की सहायता भी करते थे । दोनों अपनी दोस्ती को बनाये रखने की कोशिश भी करता था । उनकी दोस्ती के बीच अमीरी-गरीबी की कोई भेदभाव नहीं था ।

26. पटकथा (खाने की अदला बदली के बारे में)

स्थान - स्कूल के कमरे में ।
समय - दोपहर के 1 बजे ।
पात्र - 1. मिहिर, 11 साल का लडका, नीली-खाकी यूनीफॉर्म पहना है ।
2. मोरपाल, 11 साल का लडका, नीली-खाकी यूनीफॉर्म पहना है ।
घटना का विवरण - खेल घंटी के समय दोनों खाना खाने लगते हैं। दोनों आपस में बातें करते हैं ।

संवाद -

मोरपाल - अरे मिहिर, जल्दी आओ हम साथ खाएँ ।
लेखक - पुस्तक बैक में रखकर मैं अभी आया ।
मोरपाल - वाह ! तुम्हारे टिफिन बॉक्स में यह क्या है ?
लेखक - यह तो राजमा है । क्या तुमने इसे अभी तक खाया नहीं ?
मोरपाल - नहीं यार । मैं इसे आज पहली बार देख रहा हूँ ।
लेखक - मेरेलिए सामान्य सी चीज़ तुम्हारेलिए इतना खास ! खाकर कहिए, कैसा है राजमा-चावल ? तुमने आज क्या लाया ?
मोरपाल - मैं तो छाछ लाया हूँ ।
लेखक - वाह छाछ ! इसे खाए कितने दिन हुए ?
मोरपाल - तुम्हारे चावल और राजमा की कडी बहुत स्वादिष्ठ है ।
लेखक - तुम्हारे सब्जी-चावल और छाछ भी बहुत बढिया है ।
मोरपाल - सच ! तो हम एक काम करें, आज से हर दिन खाना अदला-बदली करके खाएँ ।
लेखक - ज़रूर । आज से मेरे घर से लाते राजमा-चावल तुम खाओगे और तुम्हारे घर से लाते छाछ-चावल मैं ।
मोरपाल - सचमुच यह तो बडी खुशी की बात है । खेलने जाना है न ? जल्दी खाएँ ।
लेखक - ठीक है ।
(दोनों खाने की अदला-बदली करके खाते हैं ।)

27. वार्तालाप को आगे बढाएँ ।

मोरपाल - घंटी बज गई । जल्दी आओ, हम साथ खाएँ ।
मिहिर - ठीक है । मैं अभी आया ।
मोरपाल - कहाँ है मेरा राजमा – चावल ।
मिहिर - यह लो राजमा – चावल, मुझे छाछ दो ।
मोरपाल - यर बडा स्वादिष्ठ है यार । छाछ कैसा है ?
मिहिर - बहुत अच्छा है । मोरपाल, तुम यह डब्बा इतने दूर से बिना छलकाए कैसे लाते हो ?
मोरपाल - महीनों से आ रहा हूँ न यार । अभ्यास हो गया ।
मिहिर - जो भी हो, बडे आश्चर्य की बात है । मैं ऐसा नहीं कर पाऊँगा ।

28. वार्तालाप – मिहिर और मोरपाल के बीच (मोरपाल गाँव से साइकिल चलाकर स्कूल आने पर)

मिहिर - अरे मोरपाल, तुम आ गए ?

मोरपाल - हाँ । आज मैं बहुत थक गया ।

मिहिर - वह कैसे ?

मोरपाल - इस गर्मी में पंद्रह किलोमीटर साइकिल चलाकर आया है न ?

मिहिर - ओ ... मैं भूल गया ।

मोरपाल - कहाँ है मेरा राजमा-चावल ?

मिहिर - वह मेरे बैक में है । और मेरा छाछ ?

मोरपाल - वह तो साइकिल के पीछे रखा है ।

मिहिर - यार तुम यह डिब्बा इतने दूर बिना छलकाए कैसे लाते हो ?

मोरपाल - महीनों से आ रहा हूँ न यार । अभ्यास हो गया ।

मिहिर - जो भी हो, बडे आश्चर्य की बात है । मैं ऐसा नहीं कर पाऊँगा । जल्दी चलो, स्कूल की घंटी लग गई है ।

मोरपाल - ठीक है । साइकिल रखकर मैं अभी आया ।

29. मोरपाल की डायरी (पहली बार राजमा खाए दिवस)

तारीख : ....

आज मेरेलिए एक विशेष दिन था । पहली बार मैंने राजमा खाया । कितना स्वादिष्ठ था। खाने केलिए बैठने पर मेरे दोस्त मिहिर के टिफिन बॉक्स में रखे राजमा देखते ही मेरी बाँछें खिल गयी थीं । उसे खाने से पहले मैंने कभी राजमा देखा भी नहीं था । राजमा जैसी चीज़ मेरेलिए तो अपूर्व ही था, पर उसकेलिए वह एक साधारण चीज़ था । मैं और उसके बीच खेल घंटी में खाने की अदला बदली करने का निश्चय किया । उसके घर से लाया राजमा-चावल मैंने खाया और मेरे घर से लाया छाछ -चावल उसने भी । जैसे मैंने राजमा खाया, वैसे उसने छाछ को भी बहुत चाव से खा लिया । ऐसा लगा कि छाछ उसकी कमज़ोरी है । आज से हर दिन मैं अपने घर से छाछ लाकर उसे दूँगा ।

30. मिहिर की डायरी (मोरपाल केलिए राजमा सामान्य-सी चीज़ था)

तारीख : ....

आज मेरेलिए एक विशेष दिन था । आज मैं मित्र मोरपाल के साथ खाने केलिए बैठा । मेरे खाने के डिब्बे में राजमा देखकर वह बहुत खुश हुआ था । वह पहली बार राजमा देख रहा था । उसकी गरीबी के कारण घर में राजमा खरीद नहीं सकता था । मेरेलिए तो यह सामान्य-सी चीज़ था । पर उसकेलिए वह खास चीज़ थी । उसने खाने केलिए छाछ लाया था । छाछ मेरी कमज़ोरी थी । हमने आज से खाना अदला-बदली करके खाने का निश्चय किया । मैं उसकेलिए राजमा लाऊँगा, वह मेरेलिए छाछ । हम दोनों बडी चाव से खाना खाते रहे ।

31. मिहिर का पत्र (मोरपाल के साथ अपनी खाने की अदला बदली)

स्थान: ....

तारीख: ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ ।

तुमको मेरा दोस्त मोरपाल को याद है न ? आज हम खाने केलिए बैठा तो मेरे टिफिन बॉक्स में रखे राजमा देखकर वह बहुत प्रसन्न हो गया । वह राजमा को पहली बार देख रहा था । मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मेरेलिए सामान्य सी चीज दूसरों केलिए इतनी खास हो सकती है । आज से हमारा सौदा हुआ, खाने की अदला-बदली करने का । उसके घर से लाया छाछ का डिब्बा मुझे दिया और मेरे घर से लाया राजमा -चावल उसको । मुझे लगता है कि अपने घर की गरीब हालत से ही वह राजमा जैसा बढिया दाल खरीद न सकता होगा । मैं हर दिन उसे अपने घर से राजमा लाकर देना चाहता हूँ ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है? तुम कब यहाँ आओगे? तुम्हारे माँ-बाप से मेरा प्रणाम कहना। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

32. मोरपाल का पत्र (पहली बार राजमा खाए दिवस)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ ।

मेरा दोस्त मिहिर रोज़ राजमा लाता है । उसके खाने के डिब्बे में राजमा देखकर मैं खुशी से खिल जाता हूँ । उसके टिफिन बाँक्स से मैंने पहली बार राजमा खाया । कितना स्वादिष्ठ है । मेरी छाछ उसको बहुत पसंद है । उसके घर में रोज़ राजमा पकाता है । उसकेलिए वह सामान्य चीज़ है । वह बहुत निष्कलंग है । लेकिन स्कूल जाना उसे पसंद नहीं है । छुट्टी के दिन पर वह घर में नाचा करता । जो भी हो,अब मुझे यहाँ भी एक मनपसंद मित्र को मिला । मिहिर जैसे एक मित्र को मिलने पर मैं बहुत भाग्यशाली हूँ ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRT45/K-9567224545

4. आई एम कलाम के बहाने PART - 2

(मैं स्कूल जाने में रोया करता। ------------------ वह से ही शादी में पहनकर आता।)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. कमरतोड मेहनत करना – अत्यधिक परिश्रम करना 2. हैरान रह जाना – आश्चर्य हो जाना 3. जान पाना – समझ सकना 4. चिढाना – क्रुद्ध बनाना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें।

1. मिहिर के पास ज़्यादा कपडे थे, जिनको वह कहाँ से खरीदा था ?
   बडे शहरों के बडे बाज़ारों से
2. स्कूल जाने में मिहिर और मोरपाल में क्या फर्क होता है ?
   मोरपाल रोज़ स्कूल जाना चाहता तो मिहिर को स्कूल जाना कतई पसंद नहीं था।
3. मोरपाल सदा स्कूल की यूनीफॉर्म पहनता था। क्यों ?
   क्योंकि मोरपाल के पास एकमात्र कमीज़ पैंट का नया जोडा वह नीली खाकी स्कूल यूनिफॉर्म ही थी।
4. मोरपाल पढाई छोडकर क्या किया ?
   घर की कमरतोड मेहनत और खेत-मजूरी
5. किसको स्कूल जाना पसंद नहीं था ?
   मिहिर को
6. मोरपाल की पढाई आठवीं के बाद छूट जाता है। इसका कारण क्या है ?
   गरीबी के कारण खेती में पिता की सहायता करने केलिए
7. लेखक के स्कूल की यूनीफॉर्म का रंग क्या था ?
   नीली-खाकी
8. किसके पास यूनीफॉर्म के अलावा बेहतर कपडे नहीं थे ?
   मोरपाल के पास
9. लेखक के अनुसार मोरपाल हफ्ते के किस दिन को सबसे बुरा मानता था ?
   रविवार को
10. स्कूल में बिताए समय किसको अपने बचपन का सबसे खराब समय था ?
    मिहिर को
11. किसके लिए स्कूली यूनीफॉर्म बोझ थी ?
    मिहिर केलिए
12. मोरपाल केलिए रविवार की छुट्टी का दिन हफ्ते का सबसे बुरा दिन क्यों होता ?
    रविवार को घर पर कमरतोड मेहनत करना पडता है।
13. लेखक बारिश के दिनों में घर पर नाचा करता था। क्यों ?
    उसे स्कूल जाना नहीं पडेगा।
14. मोरपाल की पढाई क्यों बंद हो जाती है ?
    घर की गरीबी के कारण आठवीं के बाद उसका स्कूल छूट जाता है।
15. बचपन में लेखक को यूनीफॉर्म पहनना क्यों पसंद नहीं था ?
    क्योंकि लेखक के पास अपनी पसंद से बडे शहरों के बडे बाज़ारों से खरीदे बेहतर कपडे थे।
16. मोरपाल शादी में भी स्कूली यूनीफॉर्म पहनकर क्यों आता था ?
    क्योंकि मोरपाल के पास एकमात्र कमीज़ पैंट का नया जोडा वह नीली खाकी स्कूल यूनिफॉर्म ही थी।
17. मिहिर ने स्कूल में बिताए समय को अपने बचपन का सबसे खराब समय समझा। क्यों?
    क्योंकि मिहिर को स्कूल जाना पसंद नहीं था।
18. मिहिर कब खुशी से नाचता था ?
    स्कूल की छुट्टी हो जाने से
19. किन-किन को स्कूल से गहरा प्यार था ?
    मोरपाल और सहपाठियों को
20. मिहिर क्या देखकर हैरान रह गया ?
    शादी में भी मोरपाल को स्कूली यूनीफॉर्म पहने देखकर
21. कई दिनों के बाद मिहिर ने एक वास्तविकता समझ ली। वह क्या थी ?
    स्कूल में बिताए समय को वह अपने बचपन का सबसे खराब समय समझता था।
22. मोरपाल स्कूल में किसपर आता था ?
    साइकिल पर
23. मिहिर को किस अवसर पर अपना बचपन बहुत याद आया ?
    आई एम कलाम फिल्म देखने पर
24. उसे हमेशा स्कूल यूनीफॉर्म पहनकर देखा। किसे ?
    मोरपाल को

SREEJITH P, KONDOOR VARKALA, SCR145 ph- 9567224545

25. यहाँ मोरपाल और मिहिर के स्कूल जीवन में क्या-क्या अंतर हैं ?

मोरपाल स्कूल आना पसंद करता है । उसको स्कूल में बिताए समय पर ही जीवन के कष्टों को भूलने का अवसर मिलता है । लेकिन मिहिर को स्कूल आना पसंद नहीं है । वह छुट्टी के दिन खुशी से बिताना चाहता है ।

26. मोरपाल के लिए जीवन का सबसे अच्छा समय स्कूल में बिताए समय था । क्यों ?

स्कूल जाते समय ही मोरपाल घर के काम से बचकर एक बच्चा बना रह सकता था और अपने मित्रों के साथ खुशी से रह पाता । स्कूल उसको अच्छी शिक्षा पाकर बडे आदमी बनने की जोश पैदा करता था । इसलिए वह अपनेगाँव से पंद्रह साइकिल चलाकर बिना नागा रोज़ स्कूल जाना चाहता था ।

27. मैं स्कूल की नीली-खाकी यूनीफॉर्म से हमेशा चिढा करता । - इससे आपने क्या समझा ?

लेखक के पास अपनी पसंद से बडे शहरों के बडे बाज़ारों से खरीदे बेहतर कपडे थे । इसलिए स्कूल की नीली-खाकी यूनीफॉर्म से सदा चिढा करता था और उसे पहनना पसंद नहीं करता था ।

28. बचपन का दोस्त मोरपाल के बारे में मिहिर की यादें क्या –क्या हैं ?

मोरपाल मिहिर का अच्छा मित्र था । वह एक गरीब परिवार का था। वह रोज़ 15 किलोमीटर साइकिल चलाकर स्कूल आता था । वह अपने घर से छाछ लाता था और वह मिहिर को देकर मिहिर का राजमा –चावल खाता था । मोरपाल रोज़ यूनीफॉर्म पहनना और स्कूल जाना पसंद करता था ।

29. ' रविवार की छुट्टी का दिन उनकेलिए हफ्ते का सबसे बुरा दिन हुआ करता ।'- ऐसा क्यों कहा गया है ?

स्कूल से गहरा प्रेम होने से मोरपाल ओर उसके जैसे सहपाठी बिना नागा रोज स्कूल आना चाहता था । स्कूल उनको जीवन में सफलता पाने की जोश पैदा करता था । रविवार को स्कूल न होने से वे निराश हैं और उसे हफ्ते का सबसे बुरा दिन मानते हैं ।

30. मिहिर और मोरपाल के जीवन अनुभवों के आधार पर टिप्पणी

मिहिर संपन्न परिवार में जन्मा था। उनको रोज़ स्कूल जाना पसंद नहीं था । उनके पास बडे शहरों के बडे बाज़ारों से खरीदे बेहतर कपडे होने से उनकेलिए स्कूल यूनीफॉर्म एक बोझ थी । स्कूल में बिताए समय को वह अपने बचपन का सबसे खराब समय समझा करता था । लेकिन उनका साथी मोरपाल दरिद्र परिवार का था । वह रोज़ पंद्रह किलोमीटर साइकिल चलाकर स्कूल आता था । घर की कडी मेहनत और खेत मजूरी के बाद स्कूल का एकमात्र समय वह बच्चा बना रह सकता था । उसके पास एकमात्र कमीज़ -पैंट का नया जोडा उसकी स्कूल यूनीफॉर्म ही थी । स्कूल में बिताए समय उसकेलिए बचपन का सबसे अच्छा समय था । रविवार की छुट्टी उनकेलिए हफ्ते का सबसे बुरा दिन था ।

31. टिप्पणी – अपनी स्कूली जीवन की याद करके

सब छात्रों की तरह मुझे भी बचपन में एक अच्छा मित्र था । उसका नाम था मुहम्मद । हम दोनों क्लास में पास-पास बैठते थे । हम दोनों अच्छी तरह पढते थे । कभी-कभी वह मेरा घर आता था तो कभी मैं उसका । शाम को हम पास के खेत में खेलते थे । स्कूल के खाने के समय हम खाने की अदला-बदली भी करते थे । वह घर से बिरियानी लाता था, वह मुझे देता था । मैं घर से लाता भात वह भी खाता था । ईद के दिन मैं उसका घर जाता था तो ओणम के दिन वह मेरा घर भी आता था । ऐसे अवसर पर हम साथ खाते थे । पढाई में हम एक दूसरे की मदद भी करते थे । हम दोनों पढ-लिखकर एक अच्छी नौकरी प्राप्त करना चाहते थे । वह अच्छी तरह चित्र खींचता था । मुझे तो गाना बहुत पसंद था । उसका जैसा मित्र मिलना मेरा सौभाग्य है । मैं उसकी दोस्ती कभी छूटना नहीं चाहती ।

32. लेख – गरीब बच्चों की हालत

हर बच्चा खेलना-खाना बहुत पसंद करता है । पर बहुत से बच्चे गरीब परिवार में जन्म लेने के कारण अपने बचपन से वंचित हैं । उनको स्कूल जाने के बजाय काम पर जाना पडता है । स्कूल जाने का मौका मिलते बच्चे भी पढाई में ध्यान नहीं दे सकते । उन्हें माँ-बाप के साथ खेत-मजूरी करने जाना पडता है । कभी समय पर खाना भी नहीं मिलता। मोरपाल जैसे कई बच्चे हैं जो स्कूल को बहुत पसंद करते हैं,पढाई में आगे हैं । पर भी बीच में पढाई छोडकर पूरा समय काम में लग जाना पडता है । गरीब बच्चे ऐसे कई तरह की परेशानियों में जीने को मजबूर होते हैं ।

33. टिप्पणी - मोरपाल की चरित्रगत विशेषताएँ

मिहिर की आई एम कलाम के बहाने फिल्मी लेख का पात्र है मोरपाल । वह गाँव के स्कूल में मिहिर का साथी था । वह लेखक के पास ही बैठता था । खेल घंटी में खाने की अदला-बदली करता था । लेखक के टिफिन बॉक्स में रखे राजमा को देखकर वह खुशी से खिल जाता था । अपनी गरीबी के कारण वह उसे पहली बार देखा था । घर की कमरतोड मेहनत और खेत-मजूरी से बचने केलिए वह रोज़ स्कूल आता था । स्कूल के 15 किलोमीटर दूर के किसी गाँव से साइकिल चलाकर आता था । स्कूल उसको अच्छी शिक्षा पाकर बडे आदमी बनने की जोश पैदा करता था । वह लेखक केलिए छाछ लाकर देता था । उसके पास एकमात्र कमीज़-पैंट का नया जोडा वह नीली-खाकी स्कूल यूनीफॉर्म ही थी,इसलिए इसे पहनकर वह सब कहीं जाता था । वह आठवीं तक ही पढाई कर सकता है ।

34. मिहिर की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

आई एम कलाम के बहाने फिल्म का के रचयिता मिहिर पांडेय संपन्न परिवार में जन्मा था । गाँव के स्कूल में बचपन की पढाई की थी । वहाँ उनका साथी था मोरपाल । नाम का पहला अक्षर मिलने से वह मोरपाल के पास बैठता था । खेल घंटी में वह मोरपाल के साथ खाने की अदला-बदली करता था । लेखक केलिए सामान्य चीज़ राजमा मोरपाल को देकर उसके घर से लाता छाछ वह खाता था । छाछ उसकी कमज़ोरी थी । स्कूल में बिताए समय को वह अपने बचपन का सबसे खराब समय समझा करता था । वह स्कूल जाने में हमेशा रोया करता था । रोज़ नए बहाने बनाया करता और जब तेज़ बारिश के दिनों में स्कूल के रास्ते में पानी भर जाने से छुट्टी हो जाया करती, तो वह घर पर नाचा करता । उसकेलिए स्कूल की नीली-खाकी यूनीफॉर्म बोझ थी । उसके पास उससे बेहतर कपडे थे जिन्हें उसने अपनी पसंद से बडे शहरों के बडे बाज़ारों से खरीदा था । वह स्कूल की यूनीफॉर्म से हमेशा चिढा करता और उसे पहनना हमेशा टाला करता । इससे अमीर होने पर भी दोस्ती को पसंद करनेवाला और स्कूल जाना, यूनीफॉर्म पहनना आदि न पसंद करनेवाले बच्चे को यहाँ हम उसमें देख सकते हैं ।

35. वार्तालाप – मिहिर और मोरपाल के बीच (मोरपाल स्कूल छूट देने की बात)

मिहिर - नमस्ते मोरपाल ।

मोरपाल - नमस्ते ।

मिहिर - तुम क्यों उदासीन हो ? बताओ मुझसे । क्या बात है ?

मोरपाल - तुमसे छिपाने को कुछ नहीं है । कल से मैं स्कूल नहीं आऊँगा ।

मिहिर - क्या ? तुमने क्या बताया ?

मोरपाल - ठीक ही कहा है मिहिर ।

मिहिर - फिर तुम क्या करने जा रहे हो ?

मोरपाल - कल से पिताजी को खेती में सहायता करने जाऊँगा ।

मिहिर - तुमको स्कूल आना बहुत पसंद है न ?

मोरपाल - पसंद है । लेकिन मैं मज़बूर हूँ ।

मिहिर - मुझे स्कूल आना बहुत पसंद नहीं है । कल से तुम भी नहीं हो तो ...

मोरपाल - कोई बात नहीं ... अच्छी तरह पढो । हम फिर मिलेंगे ।

मिहिर - ठीक है मोरपाल ।

36. वार्तालाप को आगे बढाएँ (मिहिर को स्कूल की छुट्टी पसंद है)

मोरपाल – यार, तुम कल कहाँ गए थे ?

मिहिर - बारिश में कोई स्कूल आएगा क्या ?

मोरपाल – तुम्हें स्कूल की छुट्टी उतना पसंद है ?

मिहिर - हाँ यार, मुझे तो स्कूल आना ही पसंद नहीं । इसलिए ऐसी किसी छुट्टी की इंतज़ार हमेशा करता रहता हूँ ।

मोरपाल – पर मुझे तो स्कूल की छुट्टी बुरी लगती है ।

मिहिर - पूछना भूल गया, तुम रोज़ नागा स्कूल क्यों आते हो ?

मोरपाल – स्कूल आते समय ही मैं घर के कमरतोड मेहनत से बचकर एक बच्चा बन जाता है ।

मिहिर - आज तुम छाछ नहीं लाया ?

मोरपाल – हाँ लाया । तुम राजमा भी लाया है न ?

मिहिर - नहीं भूला । अब हम क्लास में जाएँ । घंटी बजा होगा । क्लास टीचर को छुट्टी पत्र भी देना है ।

मोरपाल – ठीक है । जल्दी चलो ।

37. पटकथा (रोज़ मोरपाल स्कूल आने के बारे में मिहिर उससे पूछने पर)

मिहिर – अरे मोरपाल, मैं तुमसे एक बात पूछूँ ?

मोरपाल - पूछो यार, क्या बात है ?

मिहिर – क्या तुम्हें स्कूल आना बहुत पसंद है ?

मोरपाल - हाँ, क्या है ?

मिहिर – तुम एक दिन दिन भी छुट्टी क्यों न लेते ?

मोरपाल - स्कूल आने से मैं घर की खेत मजूरी से बच जाती और अपने मित्रों से मिल सकूँगा और खेल सकूँगा ।

मिहिर – ठीक है यार । मुझे तो स्कूल आना ही पसंद नहीं ।

मोरपाल – क्या छुट्टी पसंद है ?

मिहिर – हाँ, लेकिन मुझे तो हमारी दोस्ती बहुत पसंद है ।

मोरपाल – मुझे भी ऐसा ही है यार । काश हमारी दोस्ती कभी न छूट जाती !

मिहिर - फिकर मत करो यार, हमारी दोस्ती इसी तरह बनी रहेगी । अब मैं जाता हूँ, कल मिलेंगे ।

मोरपाल – ठीक है, बाई ।

38. मोरपाल की डायरी (कल रविवार है, स्कूल की छुट्टी है)

तारीख: ……………….

आज मेरेलिए कैसा दिन था, बता नहीं सकता । कल रविवार स्कूल की छुट्टी ... । हे भगवान पूरे दिन घर में कमरतोड मेहनत करना पडेगा । याद करते ही मन दुख से भर जाता है । स्कूल है तो यूनीफॉर्म पहनकर खेत मजूरी से बच पाता । पर ... दुख की बात है कल राजमा भी खा न सकता । मित्रों के साथ खुशी से कल बिता नहीं पाएगा । मुझे तो पढना ही बहुत पसंद है । लेकिन घरवालों को मुझसे काम करवाना अच्छा लगता है । काश रविवार को छुट्टी न होते तो कितनी अच्छी बात होती ! आज बस इतना ही ... बहुत नींद आ रही है । मैं सोने जा रहा हूँ ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRHS ph- 9567224545

39. मिहिर की डायरी (मोरपाल का स्कूल आठवीं के बाद छूट जाने के बारे में)

तारीख : ....

आज मेरेलिए दुखी दिन था । आज भी सारे दिनों के जैसे मोरपाल मेरेलिए छाछ लाया । बदले में मैंने उसको राजमा-चावल दिया । मोरपाल ने मुझसे कहा कि वह कल से स्कूल नहीं आएगा । मैं यह सुनकर स्तब्ध रह गया । वह गरीब है तो भी पढने में होशियार है । मुझे तो स्कूल जाना पसंद नहीं है । मोरपाल कल से अपने पिता के साथ खेत-मजूरी करने जाएगा । मैं मोरपाल की दोस्ती के कारण ही स्कूल जाता था । कल से मैं कैसे स्कूल जाऊँ ? किससे दोस्ती करूँ ? मैं बहुत उदास हूँ ।

40. मोरपाल की डायरी (वह कल से स्कूल नहीं जा पाने से दुखी होकर)

तारीख : ....

आज मेरेलिए दुखी दिन था । आज सबेरे पिताजी ने कहा कि कल से स्कूल नहीं जाएँ । मेरा परिवार बहुत गरीब है । इसलिए कल से पिताजी के साथ खेत-मजूरी करने जाना है । अब मैं आठवीं कक्षा में हूँ । मुझे आगे पढने का शौक है । मैं स्कूल जाए बिना मिहिर को कैसे मिलूँगा ? मेरे दोस्तो में सबसे जिगरी दोस्त मिहिर ही है । उससे राजमा-चावल कैसे खाऊँगा ? मेरे जैसे मिहिर भी दुखी होगा । मुझे सिर्फ एक जोडा नीली-खाकी यूनीफॉर्म ही थी । तब भी सारे दिन स्कूल जाना पसंद था । आगे मैं क्या करूँ ?

41. मिहिर का पत्र (मोरपाल रोज़ स्कूल आता है)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए यह पत्र भेज रहा हूँ ।

तुम्हें देखने की इच्छा से मैं तुम्हारे गाँव में आया था, पर देख न सका । तुम्हारे जैसा एक दोस्त है मुझे । हम कक्षा में पास-पास बैठते हैं । उसका नाम मोरपाल है । वह हर दिन घर से पंद्रह किलोमीटर साइकिल चलाकर स्कूल आता था । स्कूल के प्रति उसका प्रेम गहरा है । मैं छुट्टी मिलने पर नाचता हूँ और खुशियाँ मनाता हूँ । लेकिन वह छुट्टी पर रोता है । वह हर दिन स्कूल आता है । पढने की उसकी इच्छा देखकर मुझे बडी खुशी आती है । वह भी तुम जैसे प्यारा है । एक दिन मैं उसे लेकर तुम्हारे घर आऊँगा ।

वहाँ तुम्हारी नौकरी कैसे हो रही है ? तुम कब यहाँ आओगी ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

42. मिहिर का पत्र (शादी में भी मोरपाल यूनीफॉर्म पहनकर आया देखकर)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए यह पत्र भेज रहा हूँ ।

मैंने अपने मित्र मोरपाल के बारे में पहले तुमसे बताया था न ? उसे मैंने हमेशा स्कूल यूनिफॉर्म पहने ही देखा था । लेकिन मोहल्ले की किसी शादी में उसे वही स्कूल यूनिफॉर्म पहने हुए देखा तो सचमुच मैं हैरान रह गया । कोई शादी में ऐसा आता है क्या ? हम तो शादी में बेहतर कपडे ही पहनते हैं न ? सोचा कि उससे इसके बारे में पूछ ले । बाद में ही मुझे पता चला कि उसके पास एकमात्र कमीज पैंट का नया जोडा वह नीली - खाकी स्कूल यूनिफॉर्म ही थी । इसलिए वह हमेशा यही पहनकर घूमता था। कितनी बुरी हालत है उसकी । अगले दिन ही मैं अपने पास के कुछ नए कपडे उसको दूँगा ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? तुम्हारे परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

43. मिहिर का पत्र (मोरपाल का स्कूल आठवीं के बाद छूट जाने के बारे में)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ कुशलता से हूँ । परीक्षा की तैयारी में होंगे ? एक खुशी की बात बताने केलिए यह पत्र लिखता हूँ ।

मेरी कक्षा में एक मित्र है, उसका नाम मोरपाल है । सारे दिन मोरपाल मेरेलिए छाछ लाता है । बदले में मैंने उसको राजमा-चावल देता हूँ । आज मोरपाल ने मुझसे कहा कि वह कल से स्कूल नहीं आएगा । मैं यह सुनकर स्तब्ध रह गया । वह गरीब है तो भी पढने में होशियार है । मुझे तो स्कूल जाना पसंद नहीं है । मोरपाल कल से अपने पिता के साथ खेत-मजूरी करने जाएगा । मैं मोरपाल की दोस्ती के कारण ही स्कूल जाता था । कल से मैं कैसे स्कूल जाऊँ ? किससे दोस्ती करूँ ? मैं बहुत उदास हूँ ।

तुम्हारी माताजी और पिताजी को मेरा प्रणाम । छोटे भाई को मेरा प्यार । तुम्हारी जवाब की प्रतीक्षा में,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

44. टिप्पणी – मोरपाल जैसे बच्चों के बचपन की दुर्दशा

गरीब परिवार में जन्म लेने के कारम मोरपाल जैसे बच्चों को बहुत कठिनाइयाँ झेलना पडा था । पढे-लिखे न होने से घरवाले तो बच्चों को स्कूल भेजने के बदले काम पर भेजने को अधिक पसंद करते हैं । पढाई में आगे होने पर भी बच्चे शिक्षा से अलग होकर जीने में विवश थे । स्कूल जाने का मौका मिलते बच्चे भी पढाई में ध्यान नहीं दे सकते, उन्हें माँ-बाप के साथ पूरा समय खेत मजूरी करने जाना पडता है । गरीबी के कारण ठीक से भोजन तथा अच्छे कपडे भी उन्हें नज़ीब नहीं थे । गाँव में अपने घर के पास कोई स्कूल न होने से वह रोज़ घर से स्कूल तक पंद्रह किलोमीटर साईकिल चलाकर आता था । स्कूल जाते समय ही मोरपाल घर के काम काज से बचकर एक बच्चा बना रह सकता और अपने मित्रों के साथ खुशी से रह पाता । स्कूल उसको अच्छी शिक्षा पाकर बडे आदमी बनने की जोश पैदा करता था । इसलिए मोरपाल और उसके सहपाठी बिना नागा रोज़ स्कूल चले आते थे । स्कूल को लेकर उनका प्रेम इतना गहरा होने से रविवार की छुट्टी का दिन उनकेलिए हफ्ते का सबसे बुरा दिन हुआ करता । उसके पास एकमात्र कमीज़-पैंट का नया जोडा स्कूल की नीली-खाकी यूनीफॉर्म थी, इस कारण वही यूनीफॉर्म पहनकर सब कहीं जाता था । स्कूल जाने को बहुत पसंद करने पर भी कभी-कभी पढाई छोडकर पूरा समय काम पर लग जाने की गराब बच्चों की विवशता यहाँ हम देख सकते हैं ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRT45 ph- 9567224545

नित्यता बोधक क्रिया का प्रयोग

- क्रियाधातु के सामान्य भूतकाल रूप के साथ कर्ता के लिंग-वचन के अनुसार कर क्रियाधातु के विविध रूप का प्रयोग करें ।
- क्रियाधातु के सामान्य भूतकाल रूप हमेशा पुंलिंग एकवचन में होता है ।
- जा क्रियाधातु आने पर सामान्य भूतकाल रूप **गया / गये / गयी** होने पर भी **जाया / जाये / जायी** का प्रयोग करना है ।

जैसे – वह आम खाता है ।   वह आम खाया करता है ।

तुम कविता लिखो ।   तुम कविता लिखा करो ।

नित्यता बोधक क्रिया चार्ड

कर्ता	वर्तमान काल ആൺ പെൺ	भूतकाल ആൺ പെൺ	भाविकाल ആൺ പെൺ
मैं വ്യഞ്ജനാന്ത്യക്രിയാധാതു (पढ) സ്വരാന്ത്യക്രിയാധാതു (आ)	पढा करता हूँ पढा करती हूँ आया करता हूँ आया करती हूँ	पढा करता था पढा करती थी आया करता था आया करती थी	पढा करूँगा पढा करूँगी आया करूँगा आया करूँगी
तुम വ്യഞ്ജനാന്ത്യക്രിയാധാതു (पढ) സ്വരാന്ത്യക്രിയാധാതു (आ)	पढा करता हो पढा करती हो आया करता हो आया करती हो	पढा करते थे पढा करती थी आया करते थे आया करती थी	पढा करोगे पढा करोगी आया करोगे आया करोगी
एक वचन (वह, यह, तू) വ്യഞ്ജനാന്ത്യക്രിയാധാതു (पढ) സ്വരാന്ത്യക്രിയാധാതു (आ)	पढा करता है पढा करती है आया करता है आया करती है	पढा करता था पढा करती थी आया करता था आया करती थी	पढा करेगा पढा करेगी आया करेगा आया करेगी
बहुवचन (वे, ये, हम, आप) വ്യഞ്ജനാന്ത്യക്രിയാധാതു (पढ) സ്വരാന്ത്യക്രിയാധാതു (आ)	पढा करता हैं पढा करती हैं आया करता हैं आया करती हैं	पढा करते थे पढा करती थीं आया करते थे आया करती थीं	पढा करेंगे पढा करेंगी आया करेंगे आया करेंगी

सामान्य भूतकाल चार्ड

क्रियाधातु	पुल्लिंग एकवचन	पुल्लिंग बहुवचन	स्त्रीलिंग एकवचन	स्त्रीलिंग बहुवचन
വ്യഞ്ജനാന്ത്യം पढ	ക്രിയാധാതു + आ पढा	ക്രിയാധാതു + ए पढे	ക്രിയാധാതു + ई पढी	ക്രിയാധാതു + ईं पढीं
സ്വരാന്ത്യം आ	ക്രിയാധാതു + या आया	ക്രിയാധാതു + ये/ए आये/ आए	ക്രിയാധാതു + यी/ई आयी/ आई	ക്രിയാധാതു + यीं/ईं आयीं/ आईं
നിയമം അനുസരിക്കാത്തവ कर	किया	किये/ किए	की	कीं
दे	दिया	दिये/ दिए	दी	दीं
ले	लिया	लिये/ लिए	ली	लीं
पी	पिया	पिये/ पिए	पी	पीं
सी	सिया	सिये/ सिए	सी	सीं
जा	गया	गये/ गए	गयी	गयीं
हो	हुआ	हुए	हुई	हुईं
छू	छुआ	छुए	छुई	छुईं

4. आई एम कलाम के बहाने PART - 3

(नील माधव पांडा की ' आई एम कलाम ' देखते हुए मुझे ------------------- जिनसे मिलकर हमारे कलाम को कुछ कहना है ।)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. इशारा करना – संकेत करना
2. नकल करना – अनुकरण करना
3. दिल जीत लेना – आकर्षित करना/ प्रशंसा का पात्र बनना
4. वाहवाही करना – प्रशंसा करना
5. दवा करना – चिकित्सा करना
6. वादा करना – वचन देना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. आई एम कलाम फिल्म का निदेशक कौन था ?
   नील माधव पांडा
2. आई एम कलाम फिल्म के मुख्य पात्र कौन-कौन हैं ?
   छोटू और रणविजय
3. छोटू ने किसको पेड पर चढना सिखाया ?
   रणविजय को
4. फिल्म के नायक कलाम को छोटू नाम से क्यों बुलाते हैं ?
   क्योंकि ढाणी पर काम करनेवाले बच्चों को ऐसे बुलाते थे ।
5. छोटू ने किससे घुडसवारी सीखी ?
   रणविजय से
6. किसको स्कूल जाना कतई पसंद नहीं है ?
   रणविजय को
7. फिल्म में किसके अधूरे एकतरफा प्रेम के बारे में बताता है ?
   भाटी-सा के
8. दुकान में काम करनेवाले दूसरे बच्चे की (लफ्टन की) इच्छा क्या है ?
   अमिताभ हो जाना
9. फिल्म का नायक कौन था ?
   छोटू उर्फ कलाम
10. छोटू उर्फ कलाम का सपना क्या था ?
   स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालों वाले राष्ट्रपति कलाम जैसा बनना ।
11. छोटू उर्फ कलाम का साथी कौन था ?
   कुँवर रणविजय
12. फिल्म में कलाम क्या कर रहा है ?
   भाटीसा की चाय की दूकान में काम कर रहा है ।
13. छोटू कहाँ काम करता है ?
   चाय की दुकान में
14. रणविजय को स्कूल जाना कतई पसंद नहीं है । क्योंकि – ?
   परीक्षा का डर दिखाकर भयभीत करता है ।
15. रणविजय कौन है ?
   ढाणी के राणा सा का बेटा
16. कलाम और रणविजय के बीच दोस्ती कैसे होती है ?
   पहली मुलाकात के समय दोनों के बीच घुडसवारी सीखने और पेड पर चढना सिखाने के लेन देन को लेकर दोस्ती हो जाती है ।
17. कलाम और रणविजय के बीच का लेन-देन क्या था ?
   कलाम रणविजय को पेड पर चढना सिखाएगा और रणविजय कलाम को घुडसवारी सिखाएगा ।
18. लूसी मैडम कौन है ?
   विदेशी पर्यटक
19. लूसी मैडम कलाम को क्या वादा देती है ?
   वे उसे अपने साथ दिल्ली लेकर जाएँगी और राष्ट्रपति डॉ. कलाम जी से मिलवाएँगी ।
20. फिल्म का नायक अपना नाम कलाम रखा । क्योंकि ------- ?
   वह कलाम जैसा बनना चाहता है ।
21. लेकिन छोटू सिर्फ़ छोटू होकर नहीं जीना चाहता । - तो वह कैसे जीना चाहता है ?
   वह अब्दुल कलामजी का भाषण से प्रभावित होकर कलाम बनना चाहता है । इसलिए वह छोटू नाम के बदले अपना नाम कलाम रखता है ।
22. छोटू लूसी मैडम का दिल कैसे जीत लेता है ?
   विदेशी टूरिस्ट की बोली झट-से सीख जाता है । इस प्रकार वह लूसी मैडम का दिल जीत लेता है ।
23. ' छोटू को अपनी मंज़िल मिलती है ।' उसकी मंज़िल क्या थी ?
   स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालों वाले राष्ट्रपति कलाम जैसा बनना ।

SREENITH R KOVOOR VARKALA, SCR145 ph- 9567224545

24. भाटीसा छोटू की प्रशंसा क्यों करता है ?

छोटू बढिया चाय बनाता है।

25. छोटू की कलाकारी की प्रशंसा भाटी सा क्यों करता है ?

क्योंकि छोटू हर काम अच्छी तरह से करता है। उसके हाथ से बनाई चाय में जादू है। वह जल्दी ही भाषाएँ सीख लेता है।

26. फिल्म का नायक छोटू कैसा लडका है ?

गरीब

27. रणविजय कैसा लडका है ?

अमीर

28. रणविजय को कहाँ जाना पसंद नहीं है ?

स्कूल

29. फिल्म में कलाम किस नाम से जाना जाता है ?

छोटू

30. छोटू का परिवार कहाँ रहता है ?

जैसलमेर के किसी सुदूर देहात में

31. ढाणी में काम करनेवाले सभी बच्चों को क्या पुकारते हैं ?

छोटू

32. कलाम ने किसका दिल जीत लिया ?

लूसी मैडम का

33. कलाम को चाय की दुकान में क्यों काम करना पडा ?

वह गरीब परिवार का था।

34. फिल्म का नायक दिल्ली क्यों जाता है ?

राष्ट्रपति कलाम से मिलने केलिए

35. कलाम और मोरपाल की ज़िंदगी का क्या अंतर क्या है ?

कलाम गरीब लडका था तो रणविजय संपन्न परिवार का। कलाम केलिए स्कूल जाना सबसे बडा सपना था, पर रणविजय स्कूल जाना कतई पसंद नहीं करता था। कलाम चाय की दुकान में काम करता था। रणविजय तो अंग्रेज़ी स्कूल का छात्र था।

36. ‘ बाकी निन्यानवे कहानियों को कभी भूलना नहीं चाहिए जो हमारे बचपनों में है।‘- लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ?

समाज में बहुत कम लोग ही बचपन में देखते अपना सपना पूर्ण कर पाता है । बाकी अपने पारिवारिक परेशानियों के अनुसार जीने को मजबूर होते हैं। फिल्म में कलाम को अपनी मंजिल मिलती है लेकिन लेखक का मित्र मोरपाल अपना लक्ष्य पाने में सफल नहीं बनता । इसलिए लेखक ऐसा कहते हैं।

37. पटकथा (रणविजय के कमरे में मोरपाल आने पर)

स्थान - राणा सा के घर में, रणविजय के कमरे में।

समय - शाम के 6 बजे।

पात्र - 1. रणविजय, 10 साल का लडका, कुर्ता और आधा पतलून पहना है।

2. कलाम, 10 साल का लडका, कुर्ता और आधा पतलून पहना है।

घटना का विवरण - रणविजय के कमरे में आने पर कलाम वहाँ बहुत सारे पुस्तक देखते हैं। वह इसके बारे में उससे पूछता है।

संवाद –

कलाम - इतनी सारी किताबें ! किसकी हैं ?

रणविजय – मेरा ही है।

कलाम - क्या तुम इसे पढते हो ?

रणविजय – थोडा, मुझे हिंदी की कविता याद नहीं आती। मेरी हिंदी थोडी कमज़ोर है।

कलाम - ठीक है। मैं तुम्हें हिंदी सिखाऊँगा, क्या तुम मुझे अंग्रेज़ी सिखाओगे ?

रणविजय – ज़रूर सिखाऊँगा। तुम मुझे पेड पर चढना सिखाओगे ?

कलाम - हाँ, तुम मुझे घुडसवारी सिखाओगे ?

रणविजय – हाँ, ज़रूर।

कलाम - ठीक है। आज से हम अच्छे दोस्त होंगे।

रणविजय – ठीक है यार।

(कलाम वहाँ से अपना घर जाता है। रणविजय खिडकी से उसे देखता है।)

38. छोटू की डायरी (टीवी में राष्ट्रपति कलाम को देखने के बाद)

तारीख : ……………….

आज मेरे मन में एक विचार आया । वह मैं कभी साकार करूँगा । मुझे सब छोटू बुलाते हैं । आज से मेरा नाम कलाम है । टीवी में हमारे राष्ट्रपति डॉ.कलाम का भाषण मैंने देखा । कितना प्रभावकारी शब्द है उनका । भविष्य में मैं भी डॉ.कलाम जैसा बनूँगा । उनके नाम आज ही एक पत्र लिखूँगा । फिर उनसे मिलूँगा । इसकेलिए पढना ज़रूरी है । मैं कठिन परिश्रम करूँगा और सफल हो जाऊँगा ।

39. कलाम और रणविजय की दोस्ती पर टिप्पणी

आई एम कलाम फिल्म का नायक छोटू उर्फ कलाम का दोस्त था ढाणा के राणा के बेटा रणविजय । कलाम गरीब लडका था तो रणविजय संपन्न परिवार का । दोनों के बीच घुडसवारी सीखना और पेड पर चढना सिखाने के लेन -देन को लेकर दोस्ती हो जाती है । रणविजय कलाम को अंग्रेज़ी सिखाने में मदद करता है तो कलाम रणविजय को हिंदी। रणविजय के मन में अमीर होने का कोई भाव नहीं था । दोनों अपने संकट तथा आशाएँ आपस में बाँटते थे । दोनों एक दूसरे से बहुत प्यार भी करते थे । कलाम की किताब और कपडे जला देने पर रणविजय उसको अपनी किताब और कपडे देता है । कलाम की मदद से रणविजय स्कूल के हिंदी भाषण प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार जीतता है । अपने ऊपर चोरी का आरोप लगाए जाने पर दोस्त को बचाने केलिए कलाम उस आरोप को सह लेता है । कलाम अपनी दोस्ती को ऊँचा स्थान देनेवाला था । अंत में रणविजय की मदद से कलाम उसके साथ अपने पसंद के स्कूल जाकर पढने में सफल बनता है । इस तरह हम उनमें दो अच्छे दोस्त को हम देख सकते हैं ।

40. समाचार (रपट) – ' आई एम कलाम ' सिनेमा की प्रदर्शनी के संबंध में समाचार पत्रों में आया

' आई एम कलाम ' सिनेमा की प्रदर्शन- सारे जगहों में हाउस फुल !

स्थान : ……… आज राष्ट्र के अनेक थिएटरों में ' आई एम कलाम ' नामक फिल्म की प्रदर्शनी हुई । सुबह पाँच बजे से लेकर रात तक छह शो हुए हैं। नील माधव पांडे की यह फिल्म सूपर हिट है, यह खबर सारी जगहों से मिलती है । सभी थिएटरों के आगे लोगों की लंबी कतार दिख पडा । अनेक लोग टिकट न मिलने से निराश होकर लौट रहे थे । उन्होंने निश्चय किया है कि कल बडे सबेरे ही आएँगे और ज़रूर सिनेमा देखेंगे । यह फिल्म कम-से-कम दो सौ दिन यहाँ होगा । एक महीने तक की टिकट अभी बुक किया है ।

41. पोस्टर – फिल्म का प्रदर्शन

प्रगति फिल्म क्लब, चेन्नै
वार्षिक समारोह

2020 मार्च 18, बुधवार को
सुबह 10 बजे सिनी हॉल, चेन्नै

उद्घाटन – जिलाधीश
अध्यक्ष – क्लब प्रसिडेंट

* विविध प्रधियोगिताएँ
* सार्वजनिक सम्मेलन
* पुरस्कार वितरण

फिल्म का प्रदर्शन
आई एम कलाम
प्रदर्शन दोपहर साढे 2 बजे से 4 बजे तक

आइए … देखिए … मज़ा लूटिए …

" छोटू और रणविजय की दोस्ती सबके दिल जीत लेंगे "

42. पोस्टर (समारोह) – विश्व छात्र दिवस

सरकारी हायर सेकेंटरी स्कूल, कोल्लम

विश्व छात्र दिवस समारोह
भूतपूर्व राष्ट्रपति ए पी जे अब्दुल कलाम का नवासीवाँ जन्मदिन

आयोजन – हिंदी मंच

2020 अक्तूबर 15, गुरुवार को
सुबह 10 बजे, स्कूल सभा भवन में

उद्घाटन – पी टी ए प्रसिडेंट
अध्यक्ष – प्रधानाध्यापिका
मुख्य भाषण – हिन्दी अध्यापक

* विविध प्रधियोगिताएँ
* प्रश्नोत्तरी
* सार्वजनिक सम्मेलन
* पुरस्कार वितरण

भाग लें … लाभ उठाएँ …
सबका स्वागत

4. आई एम कलाम के बहाने PART - 4

(एक दिन रणविजय को उसके स्कूल में भाषण देने --------------------------- मंज़िल मिलती है ।)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. परेशान होना – दुखी बनना
2. तलाशी लेना – अन्वेषण करना
3. आरोप लगाना – इल्ज़ाम लगाना/ दोष लगाना
4. तय करना – निश्चय करना
5. प्रण तोडना – प्रतिज्ञा का लंघन करना
6. मंज़िल मिलना - लक्ष्य प्राप्त करना

2. हम – से जुडे शब्द और अर्थ

1. हमनाम – समान नामवाला	2. हमउम्र – समान उम्रवाला	3. हमअसर – समान असरवाला
4. हमख्याल – समान मतवाला	5. हमजोली – समान ओहदेवाला	6. हमजिंस – समान जाति का
7. हमपेशा – समान काम करनेवाला	8. हम मज़हब – समान धर्म का	9. हम वतन – समान देश का
10. हम शक्ल – समान आकार का		

3. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. फिल्म के अंत में कलाम क्या तय करता है ?
   वह अपनी चिट्ठी सीधे अपने हमनाम डॉ. कलाम को दिल्ली जाकर खुद देगा ।
2. कलाम दिल्ली में जाना क्यों चाहता है ?
   अपनी चिट्ठी सीधे अपने हमनाम डॉ. कलाम को खुद देने ।
3. राणा सा के कारिंदे कलाम पर चोरी का आरोप क्यों लगाते हैं ?
   वे कलाम के घर की तलाशी लेने आते समय वहाँ कुँवर रणविजय की चीज़ों को पाने से ।
4. भाषण देने केलिए कहने पर रणविजय क्यों परेशान हो जाता है ?
   क्योंकि उसकी हिंदी इतनी अच्छी नहीं थी । हाथ में चोट लगने से वह लिख नहीं सकता । ऐसे हो तो वह ट्रॉफी नहीं जीत पाएगा ।
5. रणविजय हिंदी भाषण में प्रथम पुरस्कार पाता है । कैसे ?
   कलाम द्वारा लिखित भाषण स्कूल में प्रस्तुत करने से
6. कलाम रणविजय को क्या लिखकर देता है ? क्यों ?
   एक दिन रणविजय को उसके स्कूल में भाषण देने केलिए कहा जाता है । उसकी हिंदी अच्छी न होने से कलाम उसे झट से एक अच्छा-सा भाषण लिखकर देता है ।
7. किसने भाषण प्रतियोगिता में रणविजय की सहायता की ?
   कलाम ने
8. छोटू ने रणविजय की दोस्ती के बारे में राणा-सा के कारिंदे से नहीं बताया । क्यों ?
   छोटू और रणविजय की दोस्ती के कारण रणविजय को दंड मिलेगा । इसी डर से छोटू ने उनकी दोस्ती के बारे में राणा के कारिंदे से नहीं बताया । यह भी नहीं कि छोटू, रणविजय की दोस्ती छूटना नहीं चाहता ।
9. राणा के कारिंदे ने छोटू पर चोरी का आरोप का आरोप लगाने पर भी छोटू ने उसका सहन किया । क्यों ?
   दोस्ती का प्रण न तोडने केलिए और रणविजय को राणा से उससे की दोस्ती की सज़ा मिलने से बचाने केलिए वह ऐसा करता है ।
10. भाषण प्रतियोगिता में किसको प्रथम पुरस्कार मिला ?
    रणविजय को
11. रणविजय स्कूल में किस प्रतियोगिता में भाग लेता है ?
    हिंदी भाषण प्रतियोगिता में
12. हिंदी भाषण देने में रणविजय की परेशानी क्या है ?
    उसकी हिंदी इतनी अच्छी नहीं थी ।
13. छोटू दिल्ली में किससे मिलना चाहता है ?
    राष्ट्रपति कलाम से
14. ' लेकिन छोटू सिर्फ छोटू होकर नहीं जीना चाहता ।'- इससे आपने क्या समझा ?
    चाय की दूकान में काम करनेवाला होने पर भी छोटू की आकांक्षाएँ बडी हैं । टीवी में देखे राष्ट्रपति कलाम जी का भाषण सुनकर, उनसे प्रभावित होकर वह अपना नाम कलाम रख देता है । स्कूल की अच्छी शिक्षा पाकर डॉ. कलाम जैसा बडा आदमी बनना उसका सपना है ।
15. ' लेकिन कलाम फिर कलाम है '- लेखक के इस प्रस्ताव पर अपना विचार लिखें ।
    राणा सा के कारिंदे कलाम पर चोरी का आरोप लगाने पर भी मित्र रणविजय से की दोस्ती का प्रण न तोडने केलिए वह उसको सह लेता है । रणविजय को राणा से उससे की दोस्ती की सज़ा मिलने से बचाने केलिए वह ऐसा करता है । अभावों में रहने पर भी कलाम दोस्ती को ऊँचा स्थान देनेवाला होने से लेखक ऐसा कहते हैं ।

16. टिप्पणी - रणविजय की चरित्रगत विशेषताएँ

नील माधव पांडा की आई एम कलाम फिल्म का नायक छोटू उर्फ कलाम का साथी था रणविजय । वह ढाणी के राणा का बेटा था । अमीर होने की कोई भाव उसमें नहीं था । परीक्षा का डर दिखाकर भयभीत करने से उसे स्कूल जाना पसंद नहीं था । पेड पर चढना सीखना और घुडसवारी सिखाने का लेन-देन को लेकर कलाम के साथ उसकी दोस्ती होती है । वह हिंदी में थोडा पीछा है । कलाम की सहायता से वह स्कूल के हिंदी भाषण प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार का ट्रॉफी जीत लेता है । कलाम की किताबों को जला दिया जाने पर वह उसे अपनी किताबें देता है । वह कलाम को अंग्रेज़ी सीखने में मदद भी करता है । इस प्रकार हम उसमें अच्छे मित्र को देख पाते हैं ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRT45 ph- 9567224545

17. टिप्पणी - छोटू उर्फ कलाम की चरित्रगत विशेषताएँ

' नील माधव पांडा ' की ' आई एम कलाम ' फिल्म का नायक है छोटू उर्फ कलाम । चाय की दूकान में काम करनेवाले कलाम का सपना था - स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालोंवाला राष्ट्रपति कलाम सा बनना । एक अलग जीवन, बेहतर जीवन का सपना दिखाने से कलाम को स्कूल जाना बहुत पसंद था । वह सबकुछ जल्दी से सीखनेवाला था तथा जीवन की कठिनाइयों को हराकर बडे आदमी बनने की आशा रखनेवाला एक ईमानदार लडका भी । घुडसवारी सीखने और पेड पर चढना सिखाने के लेन देन को लेकर रणविजय के साथ उसकी दोस्ती हो जाती है । अंग्रेज़ी सीखने में रणविजय उसकी मदद करता है तो कलाम रणविजय को हिंदी । स्कूल के हिंदी भाषण प्रतियोगिता केलिए भाषण तैयार करने में कलाम रणविजय की सहायता भी करता है । दोस्ती को ऊँचा स्थान देने से अपने ऊपर चोरी का आरोप लगाने पर अपने मित्र को बचाने केलिए वह उस आरोप को सह लेता है । राष्ट्रपति कलाम जी से मिलने वह गाँव छोडकर दिल्ली तो पहुँचता है पर उनसे मिल न सकता । अंत में अपने दोस्त के साथ स्कूल जाकर पढने में वह सफल बनता है ।

18. टिप्पणी – कलाम और रणविजय के जीवन के अंतरों पर

कलाम गरीब घर का लडका था । पर उसका मित्र रणविजय तो राज परिवार का यानी ढाणा के राणा का बेटा था । कलाम केलिए स्कूल जाना सबसे बडा सपना था, पर रणविजय स्कूल जाना कतई पसंद नहीं करता था । कलाम चाय की दुकान में काम करता था । रणविजय तो अंग्रेज़ी स्कूल का छात्र था । रणविजय गुड सवारी जानता था तो कलाम पेड पर चढना जानता था । कलाम को अच्छी तरह हिंदी आती थी तो रणविजय को अंग्रेज़ी । कलाम को पहनने केलिए अच्छे कपडे तथा पढने केलिए पुस्तकें नहीं थे तो रणविजय के पास पहनने केलिए महंगे कपडे तथा पढने केलिए अनेक पुस्तकें थे । रणविजय सुख-सुविधाओं पर रहते समय कलाम अभावों में जीवन बिता रहा था । कलाम सीखने में तेज़ हो तो रणविजय कुछ आसली था ।

19. वार्तालाप (स्कूल में भाषण प्रतियोगिता)

कलाम - अरे कुँवर, तुम क्यों उदासीन हो ?
रणविजय - कुछ नहीं छोटू ।
कलाम - क्या बात है ? जो भी हो हल हो जाएगा ।
रणविजय - मुझसे कल स्कूल में हिंदी में भाषण देने केलिए कहा है ।
कलाम - वह अच्छी बात है न ? उसमें परेशानी की बात है ?
रणविजय - बात यह है छोटू ... मुझे हिंदी अच्छी तरह मालूम नहीं है ।
कलाम - यही बात है न ... ? मैं तुम्हारी मदद करूँगा ।
रणविजय - कैसे ?
कलाम - मैं लिख दूँगा, तुम प्रस्तुत करो ।
रणविजय - तो मैं उसे अच्छी तरह प्रस्तुत करूँगा । बहुत बहुत धन्यवाद छोटू ।
कलाम - तुम मेरा मित्र हो न ... । मुझसे धन्यवाद कहने की क्या आवश्यकता है ?
रणविजय - ठीक है छोटू ।

20. रपट तैयार करें (स्कूल के भाषण प्रतियोगिता में रणविजय को प्रथम स्थान मिला)

भाषण प्रतियोगिता : रणविजय को प्रथम स्थान

स्थान : ----------------------- कल जैसलमेर के सरकारी हाईस्कूल में भाषण प्रतियोगिता चलाई गई । इसमें ढाणा के राणा का बेटा कुँवर रणविजय को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ । पुरस्कार प्राप्ति के बाद उसने कहा कि अपने दोस्त कलाम ने यह भाषण तैयार किया था । इसलिए पुरस्कार उसकेलिए है । कुँवर की हिन्दी अच्छी न होने से कलाम उसकी मदद की थी । यह पुरस्कार प्राप्ति रणविजय और कलाम के बीच की दोस्ती की अनूठी निशानी भी है । पुरस्कार वितरण स्कूल के प्रधानाध्यापिका ने किया। ढाणी में कुँवर के विजय पर खुशी मनाई गई ।

21. समाचार (रपट) – ' आई एम कलाम ' नामक फिल्म में छोटू का सपना साकार होने के बारे में

गरीब बालक का सपना पूरा हुआ

स्थान : ....चाय की दुकान में काम करनेवाला एक गरीब बालक का सपना पूरा हुआ । छोटू उर्फ़ कलाम का सपना था - स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालोंवाले राष्ट्रपति कलाम-सा बनना । स्कूल में पढाई करने के लिए उसको बडा शौक था । चाय की दूकान में काम करते समय विदेशी टूरिस्ट लूसी मैडम से परिचय हुआ, उन्होंने छोटू को दिल्ली ले जाने का वादा किया था । लेकिन छोटू अकेला ही दिल्ली गया । रास्ते में बहुत मुश्किलें हुईं। अंत में कलाम जी से मिला। कलाम जी ने छोटू की पढाई के लिए सहायता करने का वादा किया। छोटू कलाम जी से बहुत आभारी है ।

22. कलाम की डायरी (राणा के कारिंदे ने उसपर चोरी के आरोप लगाने से वह दुखी होकर)

तारीख : ....

आज मेरेलिए दुखी दिन था । आज ढाणी के राणा के कारिंदे मेरे घर में आए । यहाँ तलाशी लेने पर उनको कुँवर रणविजय की चीज़ें मिली । ये चीज़ें मेरेलिए रणविजय ने ही दी थी । लेकिन राणा के कारिंदे ने मुझपर चोरी का आरोप लगाया । मुझे उनसे सज़ा मिली । मैंने नहीं बताया कि ये चीज़ें रणविजय ने मुझे दी हैं । यह बताएँ तो रणविजय को मेरी दोस्ती के नाम पर दंड मिलेगा । इसलिए मैं चुपके से दंड स्वीकार किया । मैं कुँवर रणविजय की दोस्ती छूटना नहीं चाहता हूँ । आज का दिन मैं कभी नहीं भूलूँगा ।

23. कलाम की डायरी (फिल्म के अंत में कलाम का सपना साकार हो जाता है ।)

तारीख : ....

आज अपनी पसंद के स्कूल में मेरा पहला दिन। मेरा सपना साकार हो गया। स्कूल बस में मित्र रणविजय के साथ स्कूल गया। स्कूल यूनीफॉर्म पर टाई बाँधकर हम दोनों साथ –साथ चले। क्लास में उसके साथ बैठकर पढा। स्कूल की बात माँ से कहने पर वे भी खुश हुई। याद आया , चाय की दूकान में काम करते समय लफ्टन से रूठता था। लूसी मैडम ने मुझे दिल्ली ले जाकर कलाम जी से मिलवाने का वादा दिया था। चोरी के आरोप पर गाँव छोडकर दिल्ली पहुँचा था। लेकिन कलाम जी से मिल न सका । पर मेरी चिट्ठी कलाम जी तक जरूर पहुँचेगी । सब सपने जैसे लग रहे हैं आज! भाटीसा आजकल बहुत खुश दिखते हैं। अपनी पढाई का खर्चा मैं खुद उठाऊँगा। अच्छी तरह पढ-लिखकर मैं कलाम जी जैसा बडा आदमी बनूँगा।

24. रणविजय की डायरी (भाषण जीतकर आने पर कलाम चोरी के आरोप पर गाँव छोडकर दिल्ली जाता है)

तारीख : ……………….

आज कलाम की मदद से मुझे भाषण में प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला । सभी लोगों ने मेरी तारीफ की । लेकिन मेरे मन में उसका चेहरा था । मुझे मालूम है मेरी हिंदी इतनी अच्छी नहीं थी । इस भाषण के बारे में बताते वक्त उसने झट से एक अच्छा-सा भाषण लिखकर दिया था । वह भाषण कितना आकर्षक था । दूसरों की खुशी चाहनेवाला उसका मन कितना बडा है ! पर क्या करूँ ? ट्रॉफी लेकर उसे दिखाने आया तो पता चला कि वह चोरी के आरोप में गाँव छोडकर दिल्ली गया है । मैं दुख सह न पाया । सच में मुझे बचाने केलिए उसने वह चोरी का आरोप सह लिया था । दोस्ती को इतना ऊँचा स्थान देनेवाले मित्र को मैं कैसे खोऊँ ? मेरे पापा से सच बताने पर उन्होंने कलाम को ढूँढकर लाने की अनुमति दे दी । कल मैं उसकी तलाश में दिल्ली जाऊँगा । वापस आकर उसे भी मेरे स्कूल में भर्ती कराना है । ऐसे हम एक साथ स्कूल बस में स्कूल जाएँगे । वह कितना खुश होगा ! उसकी मंज़िल की पूर्ति करना अब मेरा ही दायित्व है ।

25. कलाम का पत्र (दोस्ती को बनाए रखने में अपनी परेशानी, चोरी का आरोप)

स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए मैं अब यह पत्र भेज रही हूँ ।

यहाँ पर मेरा एक मित्र है जिसका नाम है रणविजय। वह राणा सा का पुत्र है। कुछ दिनों के पहले के राणा सा के कारिंदे मेरे घर की तलाशी लेने आये थे। कुँवर रणविजय की कुछ चीज़े मेरे घर से मिलीं और इससे मेरे ऊपर चोरी का आरोप लगाया गया। पर मैंने इस आरोप के सामने अपनी दोस्ती का प्रण नहीं तोडा। मैं चोरी का आरोप सह लेता था, पर रणविजय से हुई दोस्ती के बारे में नहीं बताया। इस प्रकार बहुत परेशानियाँ का अनुभव महसूस करते हुए पिछले हफ्ता चला गया।

पता नहीं, कब मुझे अपने पसंदीता स्कूल जाकर पढने का अवसर मिलेगा ? मुझे मिलने तुम कब यहाँ आओगे ? जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

26. कलाम के नाम रणविजय का पत्र (भाषण प्रतियोगिता जीतने पर कलाम की मदद के बारे में)

स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए मैं अब यह पत्र भेज रहा हूँ ।

तुम्हारी मदद से आज मुझे भाषण प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला। सभी लोगों ने मेरी तारीफ की। लेकिन मेरे मन में तुम्हारा चेहरा था। मुझे मालूम है मेरी हिंदी इतनी अच्छी नहीं थी। इस भाषण के बारे में बताते वक्त तुमने झट से एक अच्छा-सा भाषण लिखकर दिया था। वह भाषण कितना आकर्षक था। दूसरों की खुशी चाहनेवाला तेरा मन कितना बडा है कलाम। मैं तुम्हारा आभारी हूँ । एक दिन तुमसे मिलने आऊँगा।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे हो रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

27. कलाम का पत्र (अपनी सफलता के बारे में)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ कुशलता से हूँ । परीक्षा की तैयारी में होंगे ? एक खुशी की बात बताने केलिए यह पत्र लिखता हूँ ।

आज मेरेलिए अविस्मरणीय दिन है । वर्षों से होनेवाला मेरा सपना आज सफल हुआ । मेरी इच्छा थी कि दिल्ली जाकर कलाम जी से मिलना । विदेशी टूरिस्ट लूसी मैडम ने मुझसे कहा था कि वे मुझे दिल्ली ले जाएँगी । कलाम जी से मिलने का अवसर भी देगी । उस समय तक इंतज़ार करने की क्षमा मुझे नहीं थी । इसलिए मैं अकेला दिल्ली गया । रास्ते में बहुत मुश्किलें हुईं । कलाम जी के नाम पर लिखी चिट्ठी मेरी जेब में थी । वह कलाम जी के हाथ में दी । कलाम जी के साथ खडे होकर एक फोटो भी लिया । यह अनुभव वर्णनातीत है । अब मैं दिल्ली में हूँ ।

तुम्हारी माताजी और पिताजी को मेरा प्रणाम । छोटे भाई को मेरा प्यार । तुम्हारी जवाब की प्रतीक्षा में,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

28. छोटू उर्फ कलाम ने राष्ट्रपति डॉ.कलाम को देने लिखा पत्र

जैसलमेर
06 जून 2019

आदरणीय राष्ट्रपति साहब,

नमस्कार । आप कैसे हैं ? आशा है आप वहाँ कुशल से हैं । मैं आपसे अपनी मंज़िल बताना चाहता हूँ । मैंने अपनी चिट्ठी में थोडी लिखी है, पर बहुत समझना । चिट्ठी को तार समझकर जल्दी जवाब देना ।

मैं ढाणी के एक थडी में काम करनेवाला एक बच्चा हूँ , जिसकी जिंदगी आपने बदल दी । मेरा नाम छोटू है ,लेकिन मैं अपने को कलाम मानता हूँ । मुझे छोटू अच्छा नहीं लगता । टीवी में आपका भाषण सुना । कितना अच्छा था । मैं समझता हूँ कि हर बच्चा लाल बहादुर शास्त्री बन सकता है और राष्ट्रपति कलाम भी बन सकता है । मैं आप जैसे बनना चाहता हूँ । लेकिन मैं बडा गरीब हूँ । मुझे स्कूल जाने की इच्छा है, मेरे मित्र रणविजय के साथ । लूसी मैडम ने आपसे मिलवाने का वादा किया था ।

मुझे आपसे बहुत -सी बातें करनी हैं । मालूम है आपको बच्चे बहुत पसंद हैं । पढ-लिखकर मुझे आपके जैसा होना है । इसलिए कृपया आप मेरी मदद कीजिए । बस इतना ही कहना है और हाँ ... धन्यवाद भी बोलना है ।

सेवा में
डॉ. अब्दुल कलाम
राष्ट्रपति
दिल्ली

आपका आज्ञाकारी छात्र
कलाम (छोटू)

29. टिप्पणी – गरीबी

गरीबी संसार के सबसे विकट समस्याओं में से एक है । गरीबी किसी भी व्यक्ति या इंसान केलिए अत्यधिक निर्धन होने की स्थिति है । इसके कारण लोग जीवन के आधारभूत ज़रूरतों जैसे रोज़ी रोटी, स्वच्छ जल, साफ कपडे, घर, उचित शिक्षा, दवाइयाँ आदि को भी नहीं प्राप्त कर पाते हैं । देश में ज़्यादातर लोग ठीक ढंग से दो वक्त की रोटी नहीं हासिल कर सकते हैं, वो सडक के किनारे सोते हैं और गंदे कपडे पहनते हैं । गरीबी का मुख्य कारण बढती जनसंख्या, कमज़ोर कृषि, भ्रष्टाचार, पुरानी प्रथाएँ, बेरोज़गारी, अशिक्षा, संक्रामक रोग आदि हैं । गरीबी की वजह से ही कोई छोटा बच्चा अपने परिवार की आर्थिक मदद केलिए स्कूल जाने के बजाय कम मजदूरी पर काम करने केलिए मजबूर हो जाते हैं । गरीबी समाज व देश की विकास केलिए खतरा उत्पन्न करती है । इसलिए गरीबी को जड से उखाडने केलिए हरेक व्यक्ति का एक-जुट होना बहुत आवश्यक है ।

30. पोस्टर (संदेश) – गरीबी विषय पर

देश की उन्नति केलिए
गरीबी
दूर करनी चाहिए ।
राष्ट्र निर्माण केलिए गरीबी हटाएँ ।
गरीबी देश के सर्वनाश का कारणबनता है ।
एक-एक नागरिक का कर्तव्य है गरीबी हटाना ।
गरीबी हटाने केलिए सक्रिय भागीदारी करें ।
गृह संत्रालय, नई दिल्ली

SREEJITH R, KOLOOR VARKALA, SCRIPS Mb-9567224545

5. सबसे बडा शो मैन   PART 1

(गाते-गाते अचानक माँ की आवाज़ फटकर ------------------ गाना सजने लगा ।)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. तब्दील हो जाना– बदल जाना/ परिवर्तित होना   2. मज़बूर करना – विवश करना   3. ज़िद करना – हठ करना   4. डर जाना – भयभीत होना

5. बहस करना – वाद-विवाद करना   6. आवाज़ फट जाना – स्वर खराब होना   7. रोक देना – बंद करना   8. झेल पाना – संभाल पाना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. चार्ली चैप्लिन की जीवनी सबसे बडा शो मैन के लेखक कौन हैं ?
   गीत चतुर्वेदी
2. सबसे बडा शो मैन जीवनी के बडा शो मैन कौन है ?
   चार्ली चैप्लिन
3. चार्ली की माँ थिएटर पर क्या कर रही थी ?
   गा रही थी
4. चार्ली की माँ गाते समय क्या हो गया ?
   उसकी आवाज़ फट गयी
5. चार्ली की माँ की आवाज़ खराब होते समय दर्शक क्या करने लगे ?
   शोर मचाने लगे
6. लोग शोर मचाते देखकर माँ को क्या करना पडा ?
   स्टेज से हटना पडा
7. किसकी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में तब्दील हो गई ?
   माँ की
8. किसको स्टेज से हटने को मजबूर कर दिया ?
   माँ को
9. गाते वक्त किसकी आवाज़ फट गई ?
   माँ की
10. लोग क्यों चिल्लाने लगे ?
    गाते समय चार्ली की माँ की आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल जाने से ।
11. माँ की आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल जाने पर लोगों ने क्या सोचा ?
    माइक में कुछ खराबी आ गई होगी
12. चार्ली की माँ स्टेज से हटने को क्यों मजबूर हो गई ?
    गाते समय उसकी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल जाने से लोग चिल्लाने लगे तो वे स्टेज से हटने को मजबूर हो गई ।
13. चार्ली परदे के पीछे खडा होकर आवाज़ के तमाशे को देख रहा था । यहाँ तमाशा क्या थी ?
    चार्ली की माँ स्टेज पर गाना गाते समय उनकी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल गई । लोग म्याऊँ- म्याऊँ की आवाज़ निकालने लगे । चार्ली को माँ का यह हाल तमाशा जैसे लगा ।
14. कुछ देर तक आर्केस्ट्रा वाले उसकी आवाज़ में उस गाने की धुन तलाशते रहे । क्यों ?
    पाँच साल का चार्ली मशहूर गीत जैक जोन्स गाना अपने तरीके से गाना लगा । इस कारण ऑर्केस्ट्रावाले असमंजस में पडे रहे, बाद में वे चार्ली के गाने की धुन के अनुसार गाना सजने लगे ।
15. मैनेजर ने चार्ली को किसके सामने अभिनय करते हुए देखा ?
    माँ के कुछ दोस्तों के सामने
16. किन- किन के बीच बहस होती है ?
    चार्ली की माँ और मैनेजर के बीच
17. माँ और मैनेजर के बीच बहस क्यों हुआ ?
    मैनेजर चार्ली को स्टेज पर ले जाने की ज़िद को लेकर
18. चार्ली की माँ और मैनेजर के बीच किन-किन बातों पर बहस हुआ ?
    चार्ली को स्टेज पर भेजना
19. मैनेजर ने किसको स्टेज पर भेजने की ज़िद की ?
    चार्ली को
20. मैनेजर चार्ली को स्टेज पर भेजने की ज़िद क्यों करने लगा ?
    मैनेजर ने चार्ली को पहले कभी माँ के कुछ दोस्तों के सामने अभिनय करते हुए देखा था । इसलिए मैनेजर लोगों को शांत कराने केलिए चार्ली को स्टेज पर भेजने की ज़िद करने लगा ।
21. मैनेजर किसकी ज़िद करने लगा ?
    चार्ली को स्टेज पर भेजने की
22. लोगों का कोलाहल देखकर मैनेजर ने क्या किया ?
    चार्ली को कुछ करने केलिए स्टेज पर ले जाया गया

SREEJITH R. KOVOOR VARKALA, SCR145 ph- 9567224545

23. बहुत मुबाहिसा के बाद वह अंतत : चार्ली को स्टेज पर क्यों ले गया ?

शोर मचाती भीड को शांत कराने

24. लोगों को शांत करने केलिए मैनेजर ने क्या किया ?

चार्ली को स्टेज पर ले गाया

25. किसने चार्ली को स्टेज पर लाया ?

मैनेजर ने

26. चार्ली को स्टेज पर भेजने से माँ क्यों डर गई ?

पाँच साल का उसका बेटा शोर मचाती इस उग्र भीड को कैसे झेल पाएगा ।

27. चार्ली को स्टेज पर क्यों जाना पडा ?

गाते समय उसकी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल जाने से लोग चिल्लाने लगे तो वे स्टेज से हटने को मजबूर हो गई । तब मैनेजर लोगों को शांत कराने केलिए चार्ली को स्टेज पर भेजने की ज़िद करने लगा तो उसको स्टेज पर जाना पडा ।

28. स्टेज पर पहली बार चार्ली ने कौन-सा गीत गाया ?

जैक जोन्स

29. चैप्लिन ने लोगों को कैसे शांत किया ?

गाना गाकर

30. चार्ली चैप्लिन स्टेज पर पहली बार कब आया था ?

पाँच साल की उम्र में

31. इस अभद्र शोर ने माँ को स्टेज से हटने को मजबूर कर दिया । उस समय माँ की हालत कैसी होगी ?

जब तारीफ करनेवाले माँ की हालत समझे बिना शोर मचा रहे थे तब माँ ने बहुत तनाव का अनुभव किया होगा । किसी भी कलाकार यह सह पाना मुश्किल की बात है । उसे यह भय भी हुआ होगा कि अब किस प्रकार अपने बच्चे का पालन –पोषण करेगी ।

32. ' पाँच साल का चार्ली स्टेज पर अकेला था '– उस समय चार्ली ने क्या सोचा होगा ?

चार्ली ने सोचा होगा कि अपनी माँ की जगह लेते हुए मुझे हिम्मत से काम लेना होगा, माँ की तरह अच्छी तरह गाना होगा । यदि ऐसा नहीं हुआ तो लोग और शोर मचाएँगे, लेकिन माँ केलिए मुझे गाना होगा ।

33. वार्तालाप को आगे बढाएँ

मैनेजर – हेन्ना जी ... आपको क्या हो गया ... ?
माँ – जी ... नहीं मालूम ... मेरी आवाज़ फट जाती है ।
मैनेजर – आपने गाना क्यों छोड दिया ... ?
माँ – माफ कीजिए ... मैं गा नहीं सकती ।
मैनेजर – अब क्या करें ? लोग बहुत शोर मचा रहे हैं ।
माँ – आप ही बताइए , मुझे क्या करना है ?
मैनेजर – चार्ली को स्टेज पर भेज दूँ ?
माँ – चार्ली को ? नहीं ... वह तो छोटा बच्चा है न ?
मैनेजर – तो क्या ? मैंने उसे आपके कुछ दोस्तों के सामने अभिनय करते हुए देखा है ।
माँ – लेकिन वह तो कमरे के अंदर था । इस उग्र भीड को वह कैसे संभालेगा ?
मैनेजर – आप चिंता न कीजिए , चार्ली एक होनहार बच्चा है न ? वह ज़रूर इस भीड को शांत करेगा ।
माँ – तो ठीक है, आपकी मर्ज़ी ।

34. पटकथा (माँ और मैनेजर के बीच का बहस)

स्थान - एक ओडिटोरियम में, मंच के पीछे ।
समय - रात के 7 बजे ।
पात्र - मैनेजर, करीब 50 साल का, पतलून और कमीज़ पहना है ।
चार्ली की माँ, करीब 45 साल की, चुडीदार पहनी है ।
घटना का विवरण - गाते समय गले की खराबी से मंच के पीछे आई माँ से मैनेजर बातें करने लगता है । दर्शक शोर मचा रहे हैं ।

संवाद –

मैनेजर - हेन्नाजी, देखिए न, दर्शक शोर मचा रहे हैं । उनको किसी न किसी तरह शामत कराना होगा ।
माँ - मैं क्या करूँ, गा नहीं पा रही हूँ । मेरी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल गयी है ।
मैनेजर - लेकिन इसी तरह छोड दें तो वे सब कुछ तोड देंगे । आपका बेटा है न चार्ली, वह छोटा है लेकिन किसी तरह इन दर्शकों को शांत करए तो ...
माँ - नहीं जी । पाँच साल का छोटा बच्चा इस उग्र भीड को कैसे झेल पाएगा । मैं नहीं मानूँगी ।
मैनेजर - हमारे सामने और कोई चारा नहीं न । इसलिए बता रहा था । क्योंकि मैंने आपके बेटे को आपके मित्रों के सामने अभिनय करते हुए और गीत गाते हुए देखा था । मुझे लगता है कि इस हालत में उसकी सहायता लेना ठीक होगा ।
माँ - लेकिन मैं कैसे बताऊँ, इस छोटे बच्चे को स्टेज पर भेजने के लिए । मुझे डर लगता है ।
मैनेजर - हम सब तो हैं न । उसे अकेले छोडकर हम नहीं जा रहे हैं । हम उसको स्टेज पर छोडेंगे ।
माँ - मैं क्या बताऊँ सर । और कोई उपाय नहीं तो आपकी मर्ज़ी ।

(मैनेजर चार्ली को साथ लेकर मंच पर जाता है । माँ परदे के पीछे से यह देखती है ।)

SREEJITH P, KOVOOR VARKALA, SCRIPS M- 9567224545

35. पटकथा (माँ चार्ली से स्टेज पर जाने का अनुरोध करती है ।)

स्थान – एक ओडिटोरियम में, मंच के पीछे ।
समय – रात के 7 बजे ।
पात्र – चार्ली, पाँच साल का बच्चा, पतलून और कमीज़ पहना है ।
माँ, करीब 45 साल की औरत, चुडीदार पहनी है ।
घटना का विवरण – मैनेजर की ज़िद के कारण माँ चार्ली से स्टेज पर जाने का अनुरोध करती है ।

संवाद –

माँ – चार्ली बेटा ... ।
चार्ली – क्या है माँ ?
माँ – बेटा ... यह देखो ... लोग चिल्ला रहे हैं ।
चार्ली – इसलिए क्या ?
माँ – तुम स्टेज पर आकर कुछ करों ... ।
चार्ली – मैं क्या करूँ ?
माँ – तुमने पिछले दिन मेरी सहेलियों के सामने गाना गाया है न ? वही यहाँ करों ... ।
चार्ली – वह आपकी सहेलियों के सामने है न ... ? वे मेरे परिचित हैं । लेकिन अपरिचित लोगों के सामने मैं कैसे गाऊँ ... ?
माँ – कुछ नहीं होगा बेटा ... जल्दी मेरे साथ आओ और मैं कहने के जैसे करो ।
चार्ली – ठीक है माँ ।
(माँ उसे मैनेजर के पास पास ले जाता है ।)

36. पोस्टर – म्यूज़िक प्रोग्राम

मशहूर गायिका हेन्ना जी की
म्यूज़िक प्रोग्राम
आयोजन – एल. एम.ए क्लब, लंदन

तारीख - 14 फरवरी को
समय - शाम को 7 बजे से
स्थान - लंदन के ओल्डरशॉट थिएडर में

प्रवेश टिकट से :
सादा सीट – 50 रॉयल सीट – 100
गायिका के साथ एक रात बिताने अवसर न खोने दें
आइए ... मज़ा लूटिए ...
सबका स्वागत

SREEJITH . KOVOOR VARKALA, SCR145 ph- 9567224545

5. सबसे बडा शो मैन   PART 2

(गाना अभी आधा ही हुआ था .... उसने जन्म ले लिया था।)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. पैसों की बौछार शुरू हो गई – पैसों की वर्षा होने लगी
2. गुदगुदी फैलाना – उल्लासित करना/ पुलकित करना
3. नकल उतारना – अनुकरण करना
4. तारीफ करना – प्रशंसा करना/ अभिनंदन करना
5. जन्म लेना – पैदा होना/ मशहूर हो जाना
6. हवाला करना – हाथ में सौंप देना
7. ठहाका मारना – ज़ोर से हँसना
8. लग जाना – साथ जाना
9. हाथ मिलाना – हस्तधारण करना
10. बटोरना – इकट्ठा करना / एकत्रित करना
11. गाना सजने लगा – गाना अच्छा होने लगा
12. शुरू होना – आरंभ होना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. पाँच साल की उम्र में चार्ली ने स्टेज पर क्या-क्या किए ?
   गीत गायन, नाच और माँ सहित कुछ गायकों की नकल
2. ‘ इस बात ने हॉल को हँसीघर में तब्दील कर दिया ।‘- यह बात क्या था ?
   पैसे बटोरने के बाद गाने की उसकी घोषणा
3. चार्ली के कमाल का प्रदर्शन देखकर लोगों की प्रतिक्रिया क्या थी ?
   स्टेज पर पैसों की बौछार शुरू कर दी
4. स्टेज पर पैसों की बौछार शुरू होते देख चार्ली ने क्या किया ?
   पैसे बटोरने के बाद आगे गाने की घोषणा की
5. गाते समय स्टेज पर पैसों की बौछार शुरू होते देखकर चार्ली ने दर्शकों से क्या बताया ?
   पैसे बटोरने के बाद ही आगे गाऊँगा
6. चार्ली ने बीच में गाना क्यों रोक दिया ?
   चार्ली का गाना आधा ही हुआ तो स्टेज पर पैसों की बौछार शुरू हो गई । उन पैसों को बटोरने केलिए उसने बीच में गाना रोक दिया ।
7. बीच में गाना बंद करके चार्ली ने क्या घोषणा की थी ?
   पहले मैं ये पैसे बटोरूँगा और उसके बाद ही गाऊँगा
8. मैनेजर रूमाल लेकर स्टेज पर क्यों आया ?
   पैसे बटोटने केलिए
9. मैनेजर स्टेज पर आकर क्या करने लगे ?
   पैसे बटोटने लगे
10. चार्ली गाते समय कौन पैसे बटोरने लगा ?
    मैनेजर
11. चार्ली क्यों मैनेजर के पीछे व्याकुलता से लग गया ?
    क्योंकि उसे लगा कि मैनेजर सारे पैसे खुद लेना चाहता है ।
12. चार्ली कब स्टेज पर लौट आया ?
    मैनेजर पैसे माँ के हवाले करने के बाद
13. चार्ली ने जनता में क्या फैला दी ?
    गुदगुदी
14. लोगों ने छोटे बच्चे की तारीफ क्यों की ?
    उसने अपनी मासूसियत से जनता में गुदगुदी फैला दी थी ।
15. लोगों ने किसकी तारीफ की ?
    चार्ली की
16. दर्शकों की हँसी क्यों बढ गई ?
    क्योंकि चार्ली रूमाल की पोटली में पैसे बाँध बैकस्टेज की ओर जाते मैनेजर के पीछे व्याकुलता से लग गया ।
17. ‘ छोटे बच्चे की तारीफ की ’– छोटा बच्चा कौन था ?
    चार्ली
18. चार्ली का गाना आधा हुआ तो क्या हुआ ?
    लोगों ने खुश होकर स्टेज पर पैसे फेंकने लगे ।
19. चार्ली ने किसकी नकल उतार ली थी ?
    अपनी माँ सहित कई गायकों की
20. चार्ली को क्यों लगा कि मैनेजर खुद पैसे रख लेना चाहता है ?
    मैनेजर एक रूमाल लेकर आया और पैसे बटोरने लगा, इसलिए
21. चार्ली ने लोगों में गुदगुदी फैला दी । कैसे ?
    चार्ली का गाना सुनकर लोग पैसे फेंकने लगे तो वह गाना रोककर पैसा बटोरने लगा । मैनेजर पैसे बटोरकर बैकस्टेज जाने लगे तो शिकायत करते हुए उनके पीछे चला । वे पैसे की पोटली माँ को देने तक चार्ली वापस नहीं आया । उसके इन व्यवहारों ने जनता में गुदगुदी फैला दी । वे उसकी मासूमियत, प्रस्तुती और प्रवृत्तियों को स्वीकार कर रहे थे ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCR145 ph- 9567224545

22. लोगों ने माँ से क्यों हाथ मिलाया ?

चार्ली की मासूमियत से प्रभावित होकर

23. दर्शकों ने चार्ली का अभिनंदन कैसे किया ?

दर्शकों ने देर तक खडे होकर तालियाँ बजाईं । कई लोगों ने माँ से हाथ मिलाकर चार्ली की तारीफ की ।

24. दर्शकों ने देर तक खडे होकर तालियाँ क्यों बजाईं ?

चार्ली ने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश किया । उसकी प्रस्तुति और मासूमियत से प्रभावित होकर दर्शकों ने देर तक खडे होकर तालियाँ बजाईं ।

25. अंत में दर्शकों ने तालियाँ बजाकर माँ का स्वागत क्यों किया ?

पाँच वर्षीय बालक चार्ली ने अपनी मासूमियत से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर चिल्लाते दर्शकों को अपने वश में लाया । उसने जनता में गुदगुदी फैला दी । इसलिए दर्शकों ने तालियाँ बजाकर माँ का स्वागत किया ।

26. ‘ चार्ली स्टेज पर पहली बार आया और माँ आखिरी बार ... ।‘ माँ का शो आखिरी हो जाने का कारण क्या था ?

चार्ली की माँ अपनी आवाज़ फटने के कारण स्टेज पर गा नहीं सकती थी । विवशता से उसे स्टेज छोडना पडा । गले का दर्द बढ़ रही थी । उनके बदले स्टेज पर उतरे चार्ली को लोगों ने एक अच्छे कलाकार के रूप में मान लिया था । इसलिए उन्होंने ऐसा निर्णय लिया होगा ।

27. ‘ इस बात ने हॉल को हँसीघर में तब्दील कर दिया ।‘– क्यों ?

चार्ली गीत गाते समय स्टेज पर पैसों की बौछार शुरू हो गई । गाना रोककर उसने अपने बाल सहज भोलापन से घोषणा की कि अब पैसे बटोरकर ही मैं आगे गाऊँगा । इस बात ने हॉल को हँसीघर में तब्दील कर दिया ।

28. ‘ उसने जन्म ले लिया था ।‘– इससे क्या मतलब है ?

स्टेज में पहली बार उतरे पाँच साल के चार्ली ने अपने भोलापन से दर्शकों के मन को आनंदित कर दिया । इस उम्र में उसने ऐसा कर दिया तो बाद में बडे होकर वह क्या–क्या नहीं कर सकता । इसलिए ऐसा कहा गया है ।

29. समाचार (चार्ली का पहला शो)

माँ की आवाज़ फटी ; बेटा बना शो मैन

स्थान : .... लंदन के प्रसिद्ध थिएटर में पहली बार कदम रखा पाँच साल का बच्चा चार्ली ने स्टेज पर चमत्कार कर दिया । गाते वक्त अपनी माँ की आवाज़ को फटते देखकर मैनेजर के साथ वह स्टेज पर लाया गया । चार्ली निष्कलंकता से गा रहा था कि लोग प्रसन्न होकर स्टेज पर पैसा फेंकने लगे । बच्चा गाना बंद करके पैसे बटोरने लगा । इस व्यवहार ने हॉल को हँसीघर में बदल दिया । इसके बाद उसने दर्शकों से बातचीत की, नृत्य किया और अपनी माँ सहित कई गायकों की नकल उतारी । दर्शकों ने खुशी से तालियाँ बजाकर चार्ली का अभिनंदन किया । लोगों ने उसमें एक महान कलाकार को देख लिया था ।

30. वार्तालाप - चार्ली और माँ (चार्ली के पहली शो के बाद)

माँ – आज तूने कमाल कर दिया बेटे !
चार्ली – लेकिन मैं खुश नहीं हूँ अम्मा ।
माँ – क्या हुआ बेटा ?
चार्ली – आप पर लोगों ने ...
माँ – छोड दो बेटा, गाना बीच में रुक गया न ?
चार्ली – आपकी आवाज़ को क्या हुआ माँ ?
माँ – पता नहीं। लगता है अब गा नहीं सकती ...
चार्ली – ऐसा न कहो माँ ।
माँ – दर्शकों ने तुझे मान लिया है, इस पर मैं खुश हूँ ।
चार्ली – भूल जाओ माँ, सब ठीक हो जाएँगे ।

31. वार्तालाप – माँ और दर्शक

दर्शक - क्या, यह आपका बेटा है ?
माँ - हाँ, क्या आपको उसको शो पसंद आए ?
दर्शक - ज़रूर मैडम । उसने सबको मंत्रमुग्ध कर दिया ।
माँ - भगवान की जय हो । अब बेटे के बारे में सोचकर मुझे बहुत गर्व हो रहा है ।
दर्शक - क्या नाम है उसका ?
माँ - चार्ली ।
दर्शक - कितने साल का है ?
माँ - पाँच ।
दर्शक - हे भगवान, इतने छोटे उम्र में ? वह तो ज़रूर होनहार बच्चा है । आगे भी उसे शो केलिए भेजना ।
माँ - मैं ज़रूर कोशिश करूँगी ।
दर्शक - आपके शब्द को क्या हुआ था ?
माँ - पता नहीं क्या हुआ ? गले में दर्द हो रहा है । अस्पताल जाकर देखना है । अब मुझे जाना है ।
दर्शक - ठीक है, आप जाइए ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, GOHSS Ph: 9567226545

32. वार्तालाप – मैनेजर और पत्नी

पत्नी - क्या हुआ ? आज बहुत खुश दिखते हैं।

मैनेजर - हाँ, बहुत खुश हूँ।

पत्नी - बताइए बात क्या है ?

मैनेजर - आज गायिका हेन्ना की आवाज़ खराब हो गई थी। उसकी जगह बेटे को मैं स्टेज पर ले गया।

पत्नी - बेटे को ? वह तो पाँच साल का है न ? उसने क्या किया ?

मैनेजर - पहले मुझे भी डर तो था। पर उसने तो कमाल ही कर दिया। कुछ समय से वह अपनी मासूमियत से शोर मचाती भीड को अपने वश में लाया।

पत्नी - आप क्या क्या कर रहे हो ... उसने ?

मैनेजर - मैं ठीक कहता हूँ। चार्ली की शो के बारे में जानकर बहुत लोग उसके शो केलिए अब फोन कर रहे हैं।

पत्नी - यह तो अच्छी बात हुई। माँ नहीं तो बेटा आपकी मदद की।

मैनेजर – तुमने सही कहा। खाना लो, बहुत भूख लगती है।

पत्नी - मैं खाना लाती हूँ। आप नहाकर आइए।

33. टिप्पणी - चार्ली की माँ की चरित्रगत विशेषताएँ

हेन्ना लंदन की प्रसिद्ध गायिका है। वह अपना बेटा चार्ली को बहुत प्यार करती है। स्टेज शो केलिए जाते समय बेटे को अपने साथ ले जाती है। एक दिन गाना गाते समय उसकी आवाज़ फुसफुसाहट में तब्दील हो जाती है। उसको स्टेज से हटना पडता है। मैनेजर उससे अपने बेटे चार्ली को स्टेज पर ले जाने को कहता है। चार्ली स्टेज पर जाकर क्या करेगा, यह सोचकर वह अपनी आशंका प्रकट करती है। अंत में चार्ली को स्टेज पर भेजने को मज़बूर होती है। बेटे का करतब देखकर वह खुश होती है। अंत में चार्ली के लिए स्टेज छोडती है। वह चार्ली की भावी पर खुश है।

34. टिप्पणी - चार्ली की चरित्रगत विशेषताएँ

चार्ली मशहूर गायिका हेन्ना का बेटा है। वह पाँच वर्ष का है। सारे दिन माँ स्टेज शो केलिए जाते समय वह भी अपनी माँ के साथ जाता है। स्टेज के पीछे खडा होकर वह माँ का गाना सुनता है। एक दिन लंदन के प्रसिडेंसी हॉल में गाना गाते समय माँ की आवाज़ फुसफुसाहट में तब्दील हो जाती है। यह देखकर वह स्टेज के पीछे खडा होकर हँसता है। मैनेजर के आदेशानुसार माँ उसको स्टेज पर ले जाती है। दर्शकों के सामने खडा होकर मशहूर गायक जैक जोन्स का गाना गाता है, नृत्य करता है और अपनी माँ सहित अनेक गायकों की नकल उतारता है। वह दर्शकों की प्रशंसा का पात्र बनता है। दर्शकों से विख्यात होने की भविष्यवाणी भी मिलती है।

35. माँ की डायरी (अपनी हालत और बेटे का पहला शो)

तारीख : ....

आज का दिन मैं कैसे भूलूँ ? ... दुख और खुशी भरा दिन। मेरा लाडला चार्ली आज शो मैन बन गया। उसका पहला शो हमेशा यादों में रहेगा। लगता है मैं आगे गा नहीं पाऊँगी। गले में खराबी है। गाते वक्त मेरी आवाज़ को फटते देखकर मैनेजर के साथ वह स्टेज पर लाया गया। मैं बहुत डर गयी थी। लेकिन बेटा चार्ली ने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश कराने लगा। खूब पैसा भी मिला। शैतान, मेरी फटी आवाज़ का भी नकल उतार दी। हे भगवान ! आगे भी मेरा लाडला शो में कमाल करे।

36. चार्ली की डायरी (पहला शो)

तारीख : ……………….

आज मेरेलिए कैसा दिन था,बता नहीं सकता। माँ के आवाज़ खराब होने से मुझे पहली बार स्टेज पर जाना पडा। लोग बहुत शोर मचा रहे थे। पहले मैं बहुत डर गया था। फिर भी मैं अपनी मासूमियत से मशहूर गीत जैक जोन्स गाना शुरू किया। गाना आधा ही हुआ तो स्टेज पैसों की बौछार हो लगी। फिर मैंने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर,बातचीत करके,नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश कराने लगा। खूब पैसा भी मिला। लोगों ने मुझे एक शो मैन की तरह मान लिया था। मेरा यह पहला शो हमेशा यादों में रहेगा।

37. मैनेजर की डायरी

तारीख : ……………….

आज मेरेलिए कैसा दिन था,बता नहीं सकता। गायिका हेन्ना को गाते वक्त गले की खराबी के कारण स्टेज छोडना पडा उसकी जगह उसके पाँच साल के बच्चा चार्ली को स्टेज पर लाया गया। उसने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर,बातचीत करके,नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश कराया। माँ के हटने से मैं डर गया था कि लोगों को कैसे शांत करेगा। पर चार्ली ने मेरी रक्षा की। आज चार्ली एक शो मैन बन गया है। आगे भी वह शो में कमाल करेगा।

SREEJITH R. KOVOOR VARKALA, 9037245450 / 9567224545

38. चार्ली की माँ का पत्र

स्थान : ....

प्रिय सहेली,

तारीख : ....

तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ ।

कल मेरा एक म्यूज़िक प्रोग्राम था । क्या कहूँ ? प्रोग्राम शुरू ही हुआ था । मेरी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल गई । लोग चिल्लाने लगे । मैं स्टेज से हट गई । मैं इस विचार में था कि क्या करूँ ? तभी मैनेजर ने चार्ली को स्टेज पर ले गया । उसने कमाल कर दिया । लोग खुश हुए । उसे बहुत पैसे भी दिए । इस प्रकार मेरे मान की भी रक्षा हुई । मेरे लाडले को लोग एक शो मैन मान लिया है । लगता है आगे उसका समय रहेगा ।

वहाँ तुम्हारी नौकरी कैसे हो रही है ? तुम कब यहाँ आओगी ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

39. चार्ली का पत्र (अपनी पहली शो)

स्थान : ....
तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो? कुशल हो न? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ ।

माँ के आवाज़ खराब होने से मुझे पहली बार स्टेज पर जाना पडा । लोग बहुत शोर मचा रहे थे । पहले मैं बहुत डर गया था । फिर भी मैं अपनी मासूमियत से मशहूर गीत जैक जोन्स गाना शुरू किया । गाना आधा ही हुआ तो स्टेज पैसों की बौछार हो लगी । फिर मैंने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश कराने लगा । खूब पैसा भी मिला । लोगों ने मुझे एक शो मैन की तरह मान लिया था । मेरा यह पहला शो हमेशा यादों में रहेगा ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे हो रही है? तुम कब यहाँ आओगे? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

40. पोस्टर (संगोष्ठी) – चार्ली चैप्लिन, कालजयी कलाकार

सरकारी जी.एच.एस.एस, कोल्लम
संगोष्ठी
विषय – **चार्ली चैप्लिन, कालजयी कलाकार**
आयोजन – हिंदी मंच

2018 अप्रैल 16, गुरुवार को
सुबह 10 बजे, स्कूल सभा भवन में

उद्घाटन – शिक्षा मंत्री, केरल
प्रस्तुति - हिंदी अध्यापक
भाग लें... लाभ उठाएँ...
सबका स्वागत

संयोजक प्रधानाध्यापिका

41. पोस्टर - चार्ली चैप्लिन के फिल्मों का प्रदर्शन

सरकारी हाईस्कूल,कोल्लम
फिल्मोत्सव 2020
हिंदी समिति के नेतृत्व में
चार्ली चैप्लिन के फिल्मों का प्रदर्शन

2020 जनवरी 26 रविवार को
सुबह 10 बजे से स्कूल सभाभवन में

उद्घाटन – एम.एल.ए
प्रदर्शन के फिल्में : 1. दि सरकस (सुबह 11 बजे)
2. मॉडेन टाईमस (दोपहर 2 बजे)
3. सिटि लाईटस (शाम 5 बजे)

आइए ... देखिए ... मज़ा लूटिए ...
सबका स्वागत
विश्व कलाकार चैप्लिन के फिल्मों को
देखने का अवसर त्याग न दें ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRHSS,W- 9567224545

लग (आरंभ बोधक) – का प्रयोग

- कर्ता के साथ कोई विभक्ति प्रत्यय नहीं जोडना है ।
- क्रियाधातु के साथ **ने** जोडकर लग का प्रयोग करना है ।
- कर्ता के लिंग-वचन के अनुसार **लग** सहायक क्रिया का प्रयोग होता है ।

जैसे – वह काम करता है ।   वह काम करने लगता है ।

कर्ता	वर्तमान काल ആൺ	पेൺ	भूतकाल ആൺ	पेൺ	भाविकाल ആൺ	पेൺ
मैं വ്യഞ്ജനാന്ത്യക്രിയാധാതു (पढ) സ്വരാന്ത്യക്രിയാധാതു (आ)	पढने लगता हूँ आने लगता हूँ	पढने लगती हूँ आने लगती हूँ	पढने लगा आने लगा	पढने लगी आने लगी	पढने लगूँगा आने लगूँगा	पढने लगूँगी आने लगूँगी
तुम വ്യഞ്ജനാന്ത്യക്രിയാധാതു (पढ) സ്വരാന്ത്യക്രിയാധാതു (आ)	पढने लगते हो आने लगते हो	पढने लगती हो आने लगती हो	पढने लगे आने लगे	पढने लगी आने लगी	पढने लगोगे आने लगोगे	पढने लगोगी आने लगोगी
एक वचन (वह, यह, तू) വ്യഞ്ജനാന്ത്യക്രിയാധാതു (पढ) സ്വരാന്ത്യക്രിയാധാതു (आ)	पढने लगता है आने लगता है	पढने लगती है आने लगती है	पढने लगा आने लगा	पढने लगी आने लगी	पढने लगेगा आने लगेगा	पढने लगेगी आने लगेगी
बहुवचन (वे, ये, हम, आप) വ്യഞ്ജനാന്ത്യക്രിയാധാതു (पढ) സ്വരാന്ത്യക്രിയാധാതു (आ)	पढने लगते हैं आने लगते हैं	पढने लगती हैं आने लगती हैं	पढने लगे आने लगे	पढने लगीं आने लगीं	पढने लगेंगे आने लगेंगे	पढने लगेंगी आने लगेंगी

काल चार्ड (वर्तमान काल)

कर्ता	सामान्य वर्तमानकाल ക്രിയാധാതു +		तात्कालिक वर्तमानकाल ക്രിയാധാതു +		संभाव्य वर्तमान काल ക്രിയാധാതു +	
	ആൺ	പെൺ	ആൺ	പെൺ	ആൺ	പെൺ
मैं	ता हूँ	ती हूँ	रहा हूँ	रही हूँ	ता हूँगा	ती हूँगी
(पढ) (आ)	पढता हूँ आता हूँ	पढती हूँ आती हूँ	पढ रहा हूँ आ रहा हूँ	पढ रही हूँ आ रही हूँ	पढता हूँगा आता हूँगा	पढती हूँगी आती हूँगी
तुम	ते हो	ती हो	रहे हो	रही हो	ते होगे	ती होगी
(पढ) (आ)	पढते हो आते हो	पढती हो आती हो	पढ रहे हो आ रहे हो	पढ रही हो आ रही हो	पढते होगे आते होगे	पढती होगी आती होगी
एक वचन	ता है	ती है	रहा है	रही है	ता होगा	ती होगी
(पढ) (आ)	पढता है आता है	पढती है आती है	पढ रहा है आ रहा है	पढ रही है आ रही है	पढता होगा आता होगा	पढती होगी आती होगी
बहुवचन	ते हैं	ती हैं	रहे हैं	रही हैं	ते होंगे	ती होंगी
(पढ) (आ)	पढते हैं आते हैं	पढती हैं आती हैं	पढ रहे हैं आ रहे हैं	पढ रही हैं आ रही हैं	पढते होंगे आते होंगे	पढती होंगी आती होंगी

काल चार्ड (भाविकाल / भविष्यत् काल)

कर्ता	सामान्य भाविकाल ക്രിയാധാതു +		संभाव्य भाविकाल ക്രിയാധാതു +
	ആൺ	പെൺ	ആൺ / പെൺ
मैं	ऊँगा	ऊँगी	ऊँ
(पढ) (आ)	पढूँगा आऊँगा	पढूँगी आऊँगी	पढूँ आऊँ
तुम	ओगे	ओगी	ओ
(पढ) (आ)	पढोगे आओगे	पढोगी आओगी	पढो आओ
एक वचन	एगा	एगी	ए
(पढ) (आ)	पढेगा आएगा	पढेगी आएगी	पढे आए
बहुवचन	एँगे	एँगी	एँ
(पढ) (आ)	पढेंगे आएँगे	पढेंगी आएँगी	पढें आएँ